माघ शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा
विक्रम संवत 2080

लखनऊ, बरेली, मुरादाबाद, हल्द्वानी, अयोध्या व कानपुर से प्रकाशित

शनिवार, 10 फरवरी 2024
वर्ष 5, अंक 84, पृष्ठ 14
2 राज्य, 6 संस्करण
मूल्य 6 रुपये

अमृत विचार

बरेली

एक सम्पूर्ण अखबार

www.amritvichar.com

गामा किरण की गुत्थी सुलझाएगा आदित्य एल-1 14

मां ने मुझे थिएटर जाने को किया प्रोत्साहित 13

चौ. चरण सिंह, नरसिम्हा राव और एमएस स्वामीनाथन को भारत रत्न

नई दिल्ली, एजेंसी

पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह, पीवी नरसिम्हा राव और देश में हरित क्रांति के जनक डॉ. एमएस स्वामीनाथन को देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' (मरणोपरांत) से सम्मानित किया जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को खुद 'एक्स' पर पोस्ट के जरिए यह ऐलान करते हुए तीनों के योगदान की सराहना की। इस साल अब तक पांच लोगों को भारत रत्न देने की घोषणा हुई है, जो अब तक की सर्वाधिक संख्या है।

इससे पहले वर्ष 1999 में एक बार में चार लोगों को भारत रत्न दिया गया था। कुछ दिनों पहले ही सरकार ने बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर और पूर्व उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी के लिए भारत रत्न की घोषणा की गई थी। पश्चिमी यूपी के जाट नेता और 1979-80 में प्रधानमंत्री रहे चौ. चरण सिंह ऐसे समय में कांग्रेस विरोधी राजनीति के धुरी के रूप में उभरे थे, जब देशभर में उसका वर्चस्व था। वहीं कांग्रेस नेता राव 1991-96 तक देश के प्रधानमंत्री रहे और उन्हें आर्थिक सुधारों के लिए जाना जाता है, जबकि डॉ. स्वामीनाथन दुनिया के ख्याति लब्ध कृषि वैज्ञानिक थे।

मोदी ने एक पोस्ट में कहा, 'हमारी सरकार का यह सौभाग्य है कि देश के पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह जी को भारत रत्न से सम्मानित किया जा रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि चौधरी चरण सिंह ने किसानों के अधिकार और उनके कल्याण के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया था। एक अन्य पोस्ट में प्रधानमंत्री ने कहा कि यह बताते हुए खुशी हो रही है कि पूर्व प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव को भारत रत्न से सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने कहा, 'एक प्रतिष्ठित विद्वान और राजनेता के रूप में नरसिम्हा राव ने विभिन्न पदों पर रहते हुए व्यापक सेवा की।' उनके दूरदर्शी नेतृत्व ने भारत को आर्थिक रूप से उन्नत बनाने, समृद्धि और विकास के लिए एक ठोस नींव रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रधानमंत्री ने एक अन्य पोस्ट में एमएस स्वामीनाथन को भारत रत्न से नवाजे जाने की घोषणा की। सरकार कृषि और किसान कल्याण में उनके योगदान के लिए भारत रत्न दे रही है।

प्रधानमंत्री मोदी ने किया ऐलान

2024
में अब तक पांच नामों की हुई घोषणा

अब तक 53 लोगों को सम्मान

करीब 68 साल पहले शुरू हुए इस सर्वोच्च सम्मान से अब तक 53 हस्तियों को सम्मानित किया जा चुका है। पहली बार साल 1954 में आजाद भारत के पहले गवर्नर जनरल चक्रवर्ती राज गोपालाचारी, वैज्ञानिक चंद्रशेखर वेंकटरमन और सर्वपल्ली राधाकृष्णन को दिया गया था।

कांशीराम को भी भारत रत्न मिले

बसपा प्रमुख मायावती ने एक बार फिर पार्टी संस्थापक कांशीराम को भी भारत रत्न से सम्मानित करने की मांग उठाई है। उन्होंने एक्स पर लिखा कि भाजपा सरकार द्वारा जिन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया है, उसका स्वागत है। बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर को लंबे इंतजार के बाद भारतरत्न से सम्मानित किया। दलित और उपेक्षितों के मसीहा कांशीराम का इनके हितों में किया संघर्ष कम नहीं।

कांग्रेस ने केंद्र सरकार के फैसले का किया स्वागत

कांग्रेस ने पूर्व प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव और प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह तथा कृषि वैज्ञानिक एमएस स्वामीनाथन को 'भारत रत्न' दिए जाने की घोषणा का स्वागत करते हुए शुक्रवार को कहा कि ये तीनों 'भारत के रत्न' थे, हैं और सदैव रहेंगे। कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी ने नरसिम्हा राव को 'भारत रत्न' देने की घोषणा के बारे में पूछे जाने पर संसद परिसर में संवाददाताओं से कहा, 'मैं इसका स्वागत करती हूं। क्यों नहीं?'' कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा, 'कांग्रेस की ओर से हम पीवी नरसिम्हा राव, चौधरी चरण सिंह और एम एस स्वामीनाथन को भारत रत्न दिए जाने का स्वागत करते हैं।

मौलाना तौकीर ने दिए भड़काऊ बयान, समर्थकों ने की तोड़फोड़

सैकड़ों समर्थकों के साथ गिरफ्तारी देने निकले मौलाना को पुलिस ने रास्ते से लौटाया

कार्यालय संवाददाता, बरेली

अमृत विचारः आईएमसी प्रमुख मौलाना तौकीर रजा की जेल भरो अपील पर शुक्रवार को भारी तनाव के माहौल में हजारों की भीड़ इकट्ठी हुई। पुलिस-प्रशासन ने मौलाना और उनके समर्थकों को सामूहिक गिरफ्तारी देने के लिए इस्लामिया ग्राउंड तो नहीं पहुंचने दिया, लेकिन उनके भड़काऊ बयानों के कारण प्रदर्शन के बाद लौटती भीड़ ने शहामतगंज में जमकर तोड़फोड़-पथराव किया और दो लोगों को पीट दिया। पुलिस ने डंडे चलाकर भीड़ को खदेड़ा। इस बीच मौलाना के आह्वान पर मुस्लिम बहुल इलाकों में बाजार बंद रहा। बवाल की आशंका देखते हुए दोपहर 12 बजे शहर के सभी स्कूलों की भी छुट्टी करा दी गई।

ज्ञानवापी में पूजा की अनुमति दिए जाने और मस्जिद-मदरसों को तोड़ने का आरोप लगाते हुए मौलाना तौकीर ने जुमे की नमाज के बाद इस्लामिया ग्राउंड से कलेक्ट्रेट तक मार्च कर सामूहिक गिरफ्तारी देने का ऐलान किया था। घोषित कार्यक्रम के तहत दोपहर सवा बजे मौलाना तौकीर ने आला हजरत दरगाह की करोलान मस्जिद में जुमे की नमाज अदा की। फिर समर्थकों के साथ रास्ते में लगा बैरियर तोड़ते हुए इस्लामिया ग्राउंड की ओर बढ़े, लेकिन पुलिस ने उन्हें रोक लिया। इस दौरान पुलिस के साथ उनकी धक्कामुक्की हुई, लेकिन उन्हें आगे नहीं बढ़ने दिया गया। करीब 15 मिनट बाद मौलाना तौकीर समर्थकों के साथ यहीं से लौट गए।

आईएमसी का सांकेतिक गिरफ्तारी का दावा: प्रदर्शन के बाद आईएमसी के मीडिया प्रभारी मुनीर इदरीसी ने दावा किया कि मौलाना तौकीर और सैकड़ों समर्थकों की ओर से सांकेतिक गिरफ्तारी दी गई है, लेकिन प्रशासन ने इससे साफ इनकार किया। डीएम रविंद्र कुमार ने बताया कि मौलाना और उनके समर्थकों को समझाकर रास्ते से ही लौटा दिया गया।

गिरफ्तारी देने जा रहे मौलाना रजा को पुलिस ने रास्ते में ही रोक दिया। ● अमृत विचार

▸▸ बवाल की आशंका में स्कूलों की छुट्टी, बाजार भी बंद हो गए

आपत्तिजनक नारे लगाए शहामतगंज में पथराव

आईएमसी के प्रदर्शन के बाद शहामतगंज में बवाल होने से बच गया। इस्लामिया ग्राउंड की ओर से लौट रहे सैकड़ों लोगों ने शहामतगंज में मौलाना आजाद इंटर कॉलेज के पास जमकर नारेबाजी की। 'मोदी-योगी होश में आओ' जैसे नारे लगाते हुए तोड़फोड़ के साथ दो लोगों के साथ जमकर मारपीट की। इसके बाद पथराव भी किया। इससे यहां भगदड़ मच गई। कुछ देर बाद पहुंची पुलिस ने डंडे फटकारकर भीड़ को खदेड़ा।

मुख्यमंत्री धामी बोले- देवभूमि को बदनाम करने वालों को बख्शेंगे नहीं

कार्यालय संवाददाता, हल्द्वानी

▸▸ बलवे में 6 लोगों की गई जान 6000 अज्ञात लोगों पर केस

▸▸ दंगा भड़काने के आरोप में 19 नामजद, चार गिरफ्तार

अमृत विचार : बनभूलपुरा स्थित मलिक के बगीचे में नजूल भूमि पर किए गए अवैध निर्माण के ध्वस्तीकरण पर हुए बवाल के बाद भारी पुलिस बल की तैनाती के बीच शुक्रवार को हालात काबू में रहे। शुक्रवार को मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी हल्द्वानी पहुंचे और घटना का जायजा लिया। उन्होंने पुलिस-प्रशासन को उपद्रवियों के खिलाफ सख्ती से कार्रवाई करने के निर्देश दिए हैं। प्रशासन ने आधिकारिक रूप से बलवे में अब तक पांच लोगों की मौत की पुष्टि की है। शहर में कर्फ्यू जारी है। दंगा भड़काने के आरोप में 19 लोगों को नामजद करते हुए 4 लोगों को गिरफ्तार किया है। इसके अलावा कुल 6000 अज्ञात लोगों पर एफआईआर दर्ज की है।

बीते गुरुवार की सायं नगर निगम, प्रशासन की संयुक्त टीम मलिक के बगीचे में नजूल भूमि पर बने अवैध तरीके से बने धार्मिक स्थलों को ध्वस्त करने पहुंची थी। इस दौरान उपद्रवियों की भीड़ ने पुलिस, प्रशासन, नगर निगम की संयुक्त टीम पर पथराव शुरू कर दिया। उपद्रवियों ने आगजनी की और बनभूलपुरा थाना फूंक दिया था। बनभूलपुरा में हालात काबू में रहे और पुलिस बल तैनात रहा। देर शाम हल्द्वानी पहुंचे मुख्यमंत्री धामी ने कहा कि देवभूमि का नाम बदनाम करने वाले उपद्रवियों को बख्शा नहीं जाएगा। वीडियो, फोटो से उपद्रवियों को चिह्नित किया जाएगा और उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई होगी।

हल्द्वानी पहुंचे मुख्यमंत्री धामी घायल पुलिसकर्मियों का हाल जानते हुए।

मीडियाकर्मी से मिलकर मुख्यमंत्री ने जाना हाल

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी नैनीताल रोड स्थित एक निजी अस्पताल में भर्ती अमृत विचार के छायाकार संजय कनेरा से भी मिलने पहुंचे। उन्होंने कनेरा का हालचाल जाना और कहा कि उनका उच्चस्तरीय इलाज करवाया जाएगा। बता दें कि संजय कनेरा पर भी कवरेज के दौरान उपद्रवियों ने हमला कर दिया था। उनका कैमरा, मोबाइल, पर्स, अंगूठी लूट ली और धारदार हथियार से घायल कर दिया था। वह पहले बेस अस्पताल में भर्ती थे, जहां उनकी हालत को देखते हुए निजी अस्पताल ले जाया गया है।

एक नजर

नौकरी के बदले जमीन मामले में राबड़ी, हेमा और मीसा को जमानत

नई दिल्ली। दिल्ली की एक अदालत ने रेलवे में नौकरी के बदले जमीन मामले में शुक्रवार को बिहार की पूर्व मुख्यमंत्री राबड़ी देवी और उनकी बेटी मीसा भारती तथा हेमा यादव को 28 फरवरी तक अंतरिम जमानत दी। विशेष जज विशाल गोगने ने ईडी के उस दावे के बाद तीनों आरोपियों को जमानत दी कि उसे उनकी नियमित जमानत याचिका पर दलीलें दाखिल करने के लिए समय चाहिए। ईडी द्वारा दाखिल चार्जशीट पर संज्ञान लेने के बाद मामले में अदालत द्वारा जारी समन के अनुपालन में आरोपी अदालत में पेश हुए।

बाबा सिद्दीकी एनसीपी में आज होंगे शामिल: अजित

मुंबई। महाराष्ट्र में एक दिन पहले बाबा सिद्दीकी ने कांग्रेस पार्टी छोड़ने का ऐलान किया था। अब महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री अजित पवार ने शुक्रवार को कहा कि बाबा सिद्दीकी 10 फरवरी को एनसीपी में शामिल होंगे। अजित पवार ने बताया कि 11 फरवरी को कुछ और लोग पार्टी में शामिल होंगे। हाल ही में चुनाव आयोग ने अजित पवार गुट की एनसीपी को असली एनसीपी बताया था।

भाजपा के साथ जाएंगे जयंत बोले- किस मुंह से इनकार करूं

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

▸▸ रालोद प्रमुख ने चौ. चरण सिंह को भारत रत्न दिए जाने पर कहा- 'दिल जीत लिया'

अमृत विचारः पूर्व प्रधानमंत्री चौ. चरण सिंह को भारत रत्न मिलने के साथ ही भाजपा और रालोद के बीच लोकसभा चुनाव में गठबंधन पर भी मुहर लग गई है। रालोद अध्यक्ष जयंत चौधरी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति आभार प्रकट करते हुए भाजपा के साथ समझौता करने की भी पुष्टि की है। जयंत ने गठबंधन को लेकर शुक्रवार को मीडिया के सवालों पर कहा, 'क्या अब भी कोई कसर रहती है। आज मैं किस मुंह से इनकार करूं।' जयंत ने प्रधानमंत्री के संदेश पर लिखा भी, 'दिल जीत लिया।'

जयंत ने साफ तौर पर कहा कि पिता चौ. अजित सिंह का भी सपना आज पूरा हुआ।

यह भावुक और यादगार पल है, पीढ़ियों तक याद रहेगा। ऐसे में संकेत यह मिले हैं कि चौ. अजित सिंह के जन्मदिवस 12 फरवरी को रालोद के राजग में शामिल होने की घोषणा हो जाए। इस बीच लोकसभा चुनाव में यूपी की सीटों पर भी समझौता फाइनल माना जा रहा है। भाजपा नेतृत्व ने जयंत चौधरी के सामने बागपत और बिजनौर लोकसभा सीट का प्रस्ताव रखा है। वहीं केंद्र में सरकार बनने पर मंत्री पद का भी प्रस्ताव रखा गया है। रालोद कोटे से योगी सरकार में दो मंत्री और एक राज्यसभा की भी सीट भी मिल सकती है।

पांच हजार रुपये स्टांप शुल्क देने पर हो सकेगा रक्त संबंधियों में संपत्ति हस्तांतरण

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचारः विधानसभा में शुक्रवार को भारतीय स्टांप (उत्तर प्रदेश संशोधन) विधेयक 2024 बहुमत से पारित हो गया, जिसके तहत यह व्यवस्था दी गई है कि रक्त संबंधों में संपत्ति हस्तांतरण पांच हजार रुपये स्टांप शुल्क देने के बाद किया जा सकेगा।

सदन में संसदीय कार्य मंत्री सुरेश खन्ना ने भारतीय स्टांप (उत्तर प्रदेश संशोधन) विधेयक 2024 को पारित करने के लिए सदन में अनुरोध किया। पक्ष में बहुमत होने से विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने इसे पारित करने की घोषणा की।

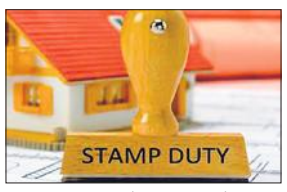

▸▸ विधानसभा में ध्वनिमत से पारित हुआ भारतीय स्टांप (उत्तर प्रदेश संशोधन) विधेयक

दरअसल, जमीनों की खरीद फरोख्त 'पॉवर ऑफ अटॉर्नी' बनाकर की ज रही थी, जिससे राजस्व का नुकसान हो रहा था। अब यह व्यवस्था दी गई है कि रक्त संबंधों से बाहर के लोगों को 'पॉवर ऑफ अटॉर्नी' पर सर्किल रेट का सात प्रतिशत स्टांप शुल्क देना होगा। इसमें यह भी व्यवस्था दी गई है कि रक्त संबंधों में मात्र पांच हजार रुपये के स्टांप पर ही संपत्ति हस्तांतरण करने की सुविधा रहेगी।

इसके अलावा विधानसभा में 'उत्तर प्रदेश लिफ्ट और एस्केलेटर' विधेयक-2024 पेश किया गया, जिसके कानून बनने के बाद राज्य में अब बहुमंजिला इमारतों में नई लिफ्ट व एस्केलेटर लगाने के लिए पंजीकरण कराना अनिवार्य होगा। राज्य सरकार के नगर विकास एवं ऊर्जा मंत्री अरविंद कुमार शर्मा ने शुक्रवार को विधानसभा में 'उत्तर प्रदेश लिफ्ट और एस्केलेटर' विधेयक, 2024 पेश किया। इन दोनों विधेयकों को शनिवार को पारित किए जाने का प्रस्ताव आ सकता है।

मुरादाबाद : खेल-खेल में फूस के पूलों में जलकर बच्ची की मौत

हसनपुर/सैदनगली। खेल-खेल में फूस के पूलों में आग लगने से पांच वर्षीय बच्ची की जलकर मौत हो गई। परिजनों ने बिना किसी कानूनी कार्रवाई शव का अंतिम संस्कार कर दिया। मोमराज सिंह मेहनत मजदूरी करके परिवार का पालन पोषण करते हैं। बताते हैं कि गुरुवार की शाम मोमराज सिंह की पांच वर्षीय बेटी करिश्मा मोहल्ले के बच्चों के साथ खेल रही थी। बच्चों के साथ खेलने के लिए वह पन्नी का लट्टू बना रही थी। घर के पास ही फूस के पूले रखे हुए थे। पन्नी को चिपकाने के लिए बच्चों ने घर के पास रखे फूस के पूलों में आग लगा ली। देखते ही देखते आग भड़क उठी। तभी इस दौरान करिश्मा आग की चपेट में आ गई। बच्ची की चीख-पुकार सुनकर परिजन मौके पर पहुंचे। उन्होंने किसी तरह बच्ची को आग से निकाला और उपचार के लिए निजी चिकित्सक के पास ले गए। चिकित्सक का कहना था कि बच्ची आग से 90 प्रतिशत से ज्यादा झुलस चुकी थी। उपचार के दौरान गुरुवार देर रात उसकी मौत हो गई। मृतका बच्ची तीन भाई बहनों में सबसे छोटी थी।

▸▸ परिजनों ने बिना किसी कानूनी कार्रवाई किया अंतिम संस्कार

आरोपी ने पुलिस हिरासत में की आत्महत्या की कोशिश, भीड़ ने थाना घेरा, लाठीचार्ज

कार्यालय संवाददाता, कासगंज

अमृत विचारः किशोरी को भगा ले जाने के आरोप में पकड़े गए युवक ने शुक्रवार की सुबह पुलिस हिरासत में अमांपुर थाना परिसर के शौचालय में मफलर से फंदा लगाकर आत्महत्या की कोशिश की। पुलिस कर्मियों ने उसे बचा तो लिया, लेकिन उसकी हालत गंभीर बनी है।

इसकी भनक लगते ही युवक के परिजनों ने बड़ी संख्या में लोगों के साथ थाने का घेराव कर दिया। पुलिस और किशोरी पक्ष पर प्रताड़ित करने का आरोप लगाकर थाने में हंगामा काटा। स्थिति बेकाबू होते देख पुलिस कर्मियों ने लाठीचार्ज कर दिया। भीड़ ने थाने के बाहर जमकर पथराव किया। बवाल बढ़ने की आशंका पर बाजार बंद हो गए। सूचना पर पुलिस अफसर मौके पर पहुंचे और स्थिति पर काबू पाया। एसपी ने अमांपुर थाने के इंस्पेक्टर यतेंद्र कुमार व दरोगा दया प्रसाद को निलंबित कर दिया है।

थाना अमांपुर में एकत्रित भीड़ को खदेड़ते पुलिसकर्मी।

▸▸ इंस्पेक्टर समेत दो निलंबित

▸▸ अमांपुर थाना पुलिस पर एक युवक को 3 फरवरी से अवैध रूप से हिरासत में रखने के आरोप में कार्रवाई

"अमांपुर थाने में पुलिस अभिरक्षा में युवक को रखा था। शुक्रवार सुबह शौचालय में उसने फांसी लगाकर आत्महत्या की कोशिश की। घटना में लापरवाही पर इंस्पेक्टर और दरोगा को निलंबित कर दिया है। – **अपर्णा रजत कौशिक**, एसपी

खेती-किसानी गन्ना शोध परिषद ने विकसित कीं 1000 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज देने वाली किस्में

गन्ने की चार नई प्रजातियों से सुधरेगी किसानों की आर्थिक स्थिति

श्याम मिश्र, शाहजहांपुर

अमृत विचारः गन्ने की चार नई प्रजातियां किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारने में कारगर साबित होंगी। गन्ना शोध परिषद ने चार नई प्रजातियां कोशा-16233, 15233, 17231 और 13235 तैयार की हैं। औसत उपज की बात करें तो करीब एक हजार क्विंटल प्रति हेक्टेयर है। इनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता भी अब तक प्रचलित प्रजातियों से कहीं ज्यादा है। प्रदेश भर में इन प्रजातियों के गन्ने की खूब मांग है। किसान ऑनलाइन बुक कर बीज खरीद रहे हैं।

गन्ना शोध परिषद शाहजहांपुर की ओर से गन्ने की ये प्रजातियां विकसित की गई हैं। प्रचलित गन्ना साढ़े आठ सौ से साढ़े नौ सौ क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज देता है। पुरानी प्रजातियों में लाल सड़न सहित तमाम बीमारियां भी लगती थीं, लेकिन इनमें लाल सड़न रोग लगने की आशंका बहुत कम है। गन्ना शोध परिषद के प्रसार अधिकारी एसके पाठक ने बताया कि कोशा 17231 की पैदावार प्रति हेक्टेयर 90 से 100 टन है और यह लगभग 10 महीने में तैयार हो जाती है। इसे अगेती प्रजाति कहते हैं। इसी तरह वैज्ञानिकों ने कोशा 15233 और 16233 की खोज की है। यह प्रजातियां भी लाल सड़न रोग कैंसर रोधी है।

▸▸ कोशा -16233, 15233, 17231, 13235 की बेहतर उपज ले सकेंगे किसान

"वैज्ञानिकों ने कोशा 17231, 15233, 16233 और 13235 प्रजाति के गन्ने का विकास किया है। यह प्रजातियां किसानों के लिए बहुत उपयोगी हैं। कैंसर (लाल सड़न) बीमारी का भी इन पर असर नहीं होता। – **एसके पाठक**, प्रसार अधिकारी, गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर

नई प्रजाति को विकसित करने में लगते हैं दस साल: गन्ने की एक नई प्रजाति के तैयार होने में करीब 10 साल का समय लगता है। अगर अब प्रजाति खेतों तक पहुंची है तो उसको तैयार करने की प्रक्रिया 10 साल पहले शुरू हुई थी। गन्ना शोध परिषद के कृषि वैज्ञानिकों ने बताया कि एक नई वैरायटी तैयार करने के लिए लंबी प्रक्रिया से गुजरना होता है। पहले शोध परिषद के वैज्ञानिक कोयंबटूर जाकर मेल और फीमेल गन्ने की प्रजातियां को आपस में क्रॉस कराते हैं। कोयंबटूर जाने की मजबूरी इसलिए है, क्योंकि वहां की जलवायु इसके लिए सबसे सही है। पहली बार पौध तैयार करने पर उसकी रोग प्रतिरोधक क्षमता के साथ पेड़ी आदि की जांच भी की जाती है। इन सब प्रक्रिया में 10 साल का समय लगता है। तब एक प्रजाति बाहर आती है।

साढ़े छह हजार बड ऑनलाइन बुक

प्रदेश में 17231 प्रजाति के गन्ने की ऑनलाइन बुकिंग चल रही है। साढ़े छह हजार बड बीज बुक हो चुका है। पश्चिमी यूपी के किसानों को मुजफ्फरनगर, पूर्वी यूपी के किसानों को सेबरहि और मध्य यूपी के किसानों को शाहजहांपुर से बीज दिया जा रहा है। बीज देने का आरंभ शुक्रवार से शाहजहांपुर गन्ना शोध परिषद में हुआ। किसानों को मिनी बीज किट का वितरण किया जा रहा है। 15233 प्रजाति को छोड़ अन्य तीनों किस्मों के बीज का विकास शाहजहांपुर शोध परिषद के वैज्ञानिकों ने ही किया है।

दिल्ली से आई युवती नहीं दे पाई संतोषजनक जवाब

पीलीभीत, अमृत विचार: गुरुवार रात करीब 10.30 बजे एक युवती रोडवेज से पीलीभीत पहुंची। उसका कहना था कि उसका मोबाइल चोरी हो गया है। अपना आधार कार्ड आदि भी नहीं दिखा सकी। पूछने पर लोगों को बताया कि वह पूर्व में राजस्थान में काम करती थी। वहां उसकी मुलाकात सुनगढ़ी क्षेत्र के भिकारीपुर की कुछ लड़कियों से हुई थी। फिर वह काम करने दिल्ली आ गई। माता-पिता की मौत हो चुकी और अन्य रिश्तेदार अपने पास रखते नहीं है। वह सहेलियों से मिलने आई है। कुछ दुकानदारों से मदद मांगी।

मगर वह कोई सवारी न होने की बात कहते रहे। फिर युवती अगले जाने लगी तो पुलिस को लोगों ने सूचना कर दी। पुलिस कर्मी आए और युवती को ले गए। वह पुलिस को भी जब संतोषजनक जबाव न दे सकी तो उसे वन स्टॉप सेंटर भेज दिया गया। खुद को बालिग बताने पर आयु निर्धारण के लिए मेडिकल कराने के लिए लिखा गया। मगर इस पर भी वह राजी नहीं हो रही थी। फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुटी है। मामला चर्चा का विषय बना रहा।

हल्द्वानी कांड और बरेली में प्रदर्शन को लेकर प्रशासन अलर्ट...अधिकारी भांपते रहे हालात

पीलीभीत में बरती गई चौकसी, धार्मिक स्थल के आसपास तैनात रहा फोर्स

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

अमृत विचार: उत्तराखंड के हल्द्वानी में हुई हिंसा और बरेली में मौलाना तौकीर रजा के गिरफ्तारी देने के ऐलान के बाद शुक्रवार को पीलीभीत में भी पुलिस-प्रशासन अलर्ट रहा। सुबह से ही मिश्रित आबादी और मुस्लिम बाहुल्य इलाकों पर पुलिस ने गश्त कर निगरानी बढ़ा दी। जुमे की नमाज को लेकर मस्जिदों के बाहर पुलिस बल रहा। अधिकारियों ने भ्रमण कर हालात पर निगाह बनाए रखी। दिन भर अलर्ट चला और शाम को समस्त मस्जिदों में सकुशल नमाज अदा किए जाने पर राहत की सांस ली। हालांकि इसके बाद भी खुराफात को लेकर चौकसी बरतने के निर्देश दिए गए हैं।

बता दें कि गुरुवार को उत्तराखंड के हल्द्वानी में हिंसा हो गई थी। इधर, बरेली में इत्तेहादे मिल्लत कौसिंल के नेता मौलाना तौकीर रजा खां ने गिरफ्तारी देने का ऐलान कर दिया था। इधर, जुमे की नमाज से एक दिन पूर्व शहर से सटे मुस्लिम बाहुल्य गांव चिड़ियादाह में ज्ञानवापी से जड़े पोस्टर भी चस्पा करा दिए गए थे। लाल रोड, देशनगर, जाटो चौराहा समेत अन्य मिश्रित आबादी वाले इलाकों में पुलिस बल की तैनाती कर दी गई। मुस्लिम बाहुल्य इलाकों में निगरानी बढ़ा दी गई। शहर से लेकर ग्रामीण इलाकों तक जुमे की नमाज को लेकर सुरक्षा बंदोबस्त किए। महिला पुरुष पुलिसकर्मियों के अलावा प्रशासनिक टीम की भी तैनाती कर दी गई। पुलिस अधिकारियों संग मजिस्ट्रेट मोर्चा संभालने के लिए सड़कों पर निकल पड़े। शहर की शाही जामा मस्जिद में जुमे की नमाज को सकुशल संपन्न् कराने के लिए सुबह से ही बाहर पुलिस बल मुस्तैद रहा। नमाज के वक्त सीओ सिटी दीपक चतुर्वेदी, कोतवाल नरेश त्यागी, तहसीलदार राजेश मिश्रा भी पहुंच गए। एक-एक कर समस्त मस्जिदों में अलग-अलग समय पर शाम तक नमाज अदा हो गई। जिसके बाद अधिकारियों ने राहत महसूस की गई। पुलिस को विशेष सतर्कता बरतने के निर्देश दिए हैं।

शाही जामा मस्जिद के बाहर नमाज के वक्त मौजूद सीओ सिटी दीपक चतुर्वेदी व अन्य।

शहर से देहात तक दिखा असर जुटाई जाती रही पल-पल की अपडेट

इंडो-नेपाल बॉर्डर पर भी रहा अलर्ट

पूरनपुर, अमृत विचार : मौलाना तौकीर रजा के बरेली में गिरफ्तारी देने के ऐलान पर गुरुवार को रातभर पुलिस मुस्लिम बाहुल्य इलाकों में गश्त करती रही। इंडो-नेपाल बॉर्डर तक अलर्ट रहा। शुक्रवार को जुमे की नमाज के दरम्यान क्षेत्र की कई मस्जिदों के बाहर व्यवस्था को लेकर पुलिस बल मौजूद रहा। सीओ आलोक सिंह ने बताया कि शांति व्यवस्था को लेकर सतर्कता बरती गई।

सड़कों पर कम दिखी चहलकदमी

वैसे तो माहौल पूरी तरह से शांत रहा। अब इसे इत्तेफाक कहें या कुछ और। शुक्रवार को अन्य दिनों की अपेक्षा मुख्य बाजार, लाल रोड, गांधी स्टेडियम रोड, रेलवे स्टेडियम, जेपी रोड समेत अन्य मुख्य मार्गों पर कम ही चहलकदमी दिखाई दी। शाम को कुछ रौनक बढ़ी।

अलर्ट के चलते बैठकें कर दीं रद

शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस के साथ ही प्रशासनिक अमला भी जुटा हुआ था। सभी को जिम्मेदारियां दी गई थीं। बताते हैं कि इसे लेकर अफसर कर्मचारियों को ड्यूटी पर लगा दिया गया था। इसी वजह से शुक्रवार को किसी तरह की विभागीय बैठकें नहीं बुलाई गई थीं। मामले को लेकर सरकारी दफ्तरों में भी चर्चाएं होती रही।

48 घंटे बाद भी नहीं ढूंढ़ सके खुराफाती लोगों को, खंगाल रहे सोशल साइट्स

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

अमृत विचार: ज्ञानवापी से जुड़े विवादित पोस्टर लगाने का मामला सामने आने पर पुलिस ने अज्ञात पर एफआईआर तो दर्ज की लेकिन इस मामले को अभी भी जिम्मेदार गंभीरता से लेते नहीं दिखाई दे रहे हैं। नतीजतन 48 घंटे बीतने के बाद भी पुलिस कोई सुराग नहीं जुटा सकी है। खुराफात करने वाले तक पहुंचने के लिए सोशल साइट्स खंगालने जा रहे हैं। उसमें भी कोई प्रगति नहीं हो सकी है। फिलहाल ग्रामीणों ने सूझबूझ का परिचय दिया और दूसरे दिन चहलकदमी रोजमर्रा की तरह आम रही।

सुनगढ़ी थाना क्षेत्र में शहर से सटा मुस्लिम बाहुल्य गांव चिड़ियादाह में गुरुवार सुबह जब लोग घरों से बाहर निकले तो मकान की दीवारों, बिजली के खंभों पर ज्ञानवापी से जुड़े विवादित और भड़काऊ पोस्टर चस्पा मिले थे। जिसके बाद हड़कंप मच गया था। इसकी सूचना मिलने पर अपर पुलिस अधीक्षक विक्रम दहिया, सीओ सिटी दीपक चतुर्वेदी, इंस्पेक्टर सुनगढ़ी संजीव शुक्ला पुलिस बल के साथ पहुंचे और जानकारी की। खुफिया विभाग की टीमें भी पहुंची थी। माना जा रहा था कि बुधवार रात को किसी वक्त फिजा खराब करने के लिए पोस्टर लगवाए गए हैं। अज्ञात पर मामले की रिपोर्ट दर्ज की गई थी। इस घटना की तह तक पहुंचने के दावे तो किए गए, लेकिन पुलिस खुराफात करने वालों का पता नहीं लगा सकी है। आशंका जताई गई कि पोस्टर पहले सोशल मीडिया पर अपलोड किया गया था। जिसके बाद उसके प्रिंट कराए गए। ऐसे में पुलिस ट्विटर एकाउंट खंगाल रही है। दूसरे दिन शुक्रवार को वैसे भी अलर्ट कर दिया गया था। एक दिन पहले पोस्टर लगाए जाने के कारण पुलिस बल तैनात रहा।

चिड़ियादाह गांव में चहलकदमी करते ग्रामीण। ● अमृत विचार

ग्रामीणों ने दिखाई सूझबूझ रोजमर्रा की तरह रही चहलकदमी

साइबर सेल करती रही विवादित मैसेज की निगरानी

गांव में चस्पा किए गए विवादित पोस्टर में ट्विटर का जिक्र करते हुए नौ फरवरी की रात नौ बजे का लिखा हुआ था। ऐसे कोई खुराफात विवादित मैसेज वायरल कर न की जा सके। इसके लिए साइबर सेल टीम को भी अलर्ट किया गया। सोशल मीडिया पर निगरानी कराई गई। खासकर ट्विटर एकाउंट से की जा रही पोस्टों पर साइबर सेल के कर्मचारी निगाह बनाए रहे।

> इस मामले में एक दिन पूर्व ही रिपोर्ट दर्ज कर ली गई थी। गांव में माहौल पूरी तरह से शांत है। खुराफात किसने की, इसका पता लगाने के लिए जांच चल रही है। जल्द ही उसका पता लगाकर सख्त कार्रवाई की जाएगी।
> **-संजीव शुक्ला**, इंस्पेक्टर सुनगढ़ी

भाजपा सरकार किसान और नौजवान विरोधी

जन पंचायत में मौजूद सपा जिलाध्यक्ष जगदेव सिंह जग्गा व अन्य। ● अमृत विचार

संवाददाता, बीसलपुर

अमृत विचार: समाजवादी पार्टी की ओर से शुक्रवार को पीडीए जन पंचायत कार्यक्रम के तहत अभयपुर, भगवंतपुर, रिछोला सबल गांव में जन पंचायत की गई, जिसमें भाजपा सरकार पर सियासी निशाना साधा और सपा शासनकाल में हुए काम गिनाए।

सपा जिलाध्यक्ष जगदेव सिंह जग्गा ने कहा कि वर्तमान भाजपा सरकार किसान और नौजवान विरोधी है। आगामी लोकसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी के पक्ष में मतदान करने के लिए जनता मन बना चुकी है।

महिला सभा की प्रदेश सचिव गायत्री गंगवार ने कहा कि समाजवादी पार्टी हमेशा महिलाओं की हितैषी रही है। विधानसभा अध्यक्ष शैलेश शर्मा एडवोकेट ने कहा कि वर्तमान में कानून व्यवस्था ध्वस्त है। इस मौके पर हरपाल सिंह लोधी, आफताब आलम अंसारी, रामप्रताप गंगवार, यासीन अंसारी, बीडी प्रजापति, केदारनाथ गौतम, डॉ. इरशाद, मीनाक्षी गंगवार, अभिषेक गंगवार, दिनेश वर्मा, अकरम अंसारी, अमित गौतम, रूम सिंह, एजाजुल हसन, रमेश सिंह, राजकुमार, लाजपत गंगवार आदि मौजूद रहे।

अन्नपूर्णा राशन की दुकान बनवाने की मांग उठाई

पीलीभीत, अमृत विचार : भारतीय किसान यूनियन लोक शक्ति की बैठक शुक्रवार को जिलाध्यक्ष पातीराम कश्यप की अध्यक्षता में हुई। मंडलीय सचिव मुरलीधर कश्यप ने कहा कि ग्राम पंचायत बरहा में ग्राम समाज की जमीन पर ग्राम प्रधानपति और तहसील प्रशासन ने शुलभ शौचालय बनवाया गया है।

उसी तर्ज पर अन्नपूर्णा राशन की दुकान का भी निर्माण कराया जाए। गांवों में घूम रहे छुट्टा पशुओं को पकड़वाकर उन्हें गोशाला भिजवाया जाए। किसानों की समस्याओं का निस्तारण जल्द हो। इस मौके पर वीरेंद्र पाल, कृष्ण शर्मा, राम स्वरूप, धर्मपाल गंगवार, रुप किशोर, मनोज कुमार, विजय बहादुर आदि मौजूद रहे।

सीएमएस ने भी इमरजेंसी स्टाफ को बचाया

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

सीएमओ ने मेडिकल कॉलेज प्राचार्य और शासन को भेजा पत्र

अमृत विचार : मेडिकल कॉलेज की इमरजेंसी के सामने सड़क पर प्रसव में नवजात की मौत के मामले में एसीएमओ के बाद सीएमएस पुरुष अस्पताल ने भी इमरजेंसी स्टाफ को बचाते हुए गोलमोल आख्या दे दी। पूरी आख्या में इमरजेंसी स्टाफ की लापरवाही का जिक्र ही नहीं किया। सीएमओ ने इस आख्या से असंतुष्ट होकर अपने स्तर से कार्रवाई की संस्तुति करते हुए मेडिकल कॉलेज प्राचार्य डॉ.संगीता अनेजा और शासन को पत्र भेजा है।

बता दें कि रिश्तेदारी में आई नौ माह की गर्भवती बरेली जिले के थाना हाफिजगंज क्षेत्र के गांव पृथ्वीपुर निवासी सुमन को बुधवार को ससुर कृष्णपाल, सास मुन्नी देवी गांव देवीपुरा से ई-रिक्शा से मेडिकल कॉलेज लेकर पहुंचे थे। आरोप है कि 45 मिनट तक परिवार भटकता रहा और महिला प्रसव पीड़ा से तड़पती रही लेकिन इमरजेंसी स्टाफ ने सुधि नहीं ली।

इमरजेंसी के सामने सड़क पर प्रसव कराना पड़ा और नवजात की जान चली गई। डिप्टी सीएम बृजेश पाठक ने भी एक दिन पूर्व रिपोर्ट तलब की थी। मामले में पहले एसीएमओ डॉ.छत्रपाल की रिपोर्ट को सीएमओ ने संतोषजनक नहीं बताया था। मेडिकल कॉलेज की पुरुष इकाई के सीएमएस डॉ. संजीव सक्सेना से मिली आख्या से भी सीएमओ संतुष्ट नहीं हुए और इसे कैंसिल कर दिया। इमरजेंसी ड्यूटी पर कार्यरत डॉक्टर और स्टाफ के खिलाफ कार्रवाई की संस्तुति करते हुए मेडिकल कॉलेज की प्राचार्य को पत्र लिखा है। शुक्रवार को लखनऊ डीजी हेल्थ ने भी दोबारा से पूरी रिपोर्ट मांगी है। जिसको लेकर पूरे दिन महिला ईकाई में बने सीएमएस रूम में मंथन चलता रहा। फिलहाल शुक्रवार दोपहर बाद महिला को डिस्चार्ज कर दिया गया। परिजन उसे अपने साथ ले गए हैं।

> सीएमएस की ओर से दी गई आख्या में इमरजेंसी ड्यूटी पर उस वक्त मौजूद स्टाफ के न तो नाम दिए गए न ही मुख्य बिंदु पर जांच की गई। मेडिकल कॉलेज प्राचार्य को संबंधित स्टाफ के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए पत्र लिखा है। इसकी सूचना शासन को भी भेजी है।
> **-डॉ. आलोक कुमार**, सीएमओ

7 दिन में शुल्क जमा करने की चेतावनी

पीलीभीत, अमृत विचार: जिले में 198 ईंट भट्टों का संचालन किया जा रहा है। जिला पंचायत द्वारा प्रत्येक वर्ष ईंट भट्टों का नवीनीकरण किया जाता है। इसके लिए भट्ठा संचालकों को नवीनीकरण शुल्क जमा करना होता है। बताते हैं कि आठ ईंट भट्ठा संचालकों द्वारा अभी तक नवीनीकरण नहीं कराया है। जबकि नवीनीकरण गत वर्ष अक्टूबर में होना था। इसको लेकर जिला पंचायत द्वारा पूर्व में इन ईंट भट्ठा संचालकों को नोटिस जारी किया गया था। इधर, अधिकारियों के निर्देश पर टीम ईंट भट्टों पर पहुंची। टीम ने सभी भट्ठा संचालकों को सात दिनों के भीतर नवीनीकरण शुल्क जमा करने के निर्देश दिए हैं। शुल्क जमा न करने पर कोर्ट से शमन जारी करने की चेतावनी दी है। इधर, अपर मुख्य अधिकारी हरमीक सिंह ने बताया कि आठ ईंट भट्ठा संचालकों ने नवीनीकरण नहीं कराया है।

बोर्ड परीक्षा: पांच जोन और 16 सेक्टर बनाकर बांटी जिम्मेदारी

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

परीक्षा में 44,780 परीक्षार्थी होंगे शामिल, 22 से परीक्षा शुरू

अमृत विचार : माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की ओर से हाईस्कूल और इंटरमीडिएट की परीक्षा को लेकर तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। केंद्र का निर्धारण करने के बाद परीक्षा को नकल विहीन शांतिपूर्ण ढंग से कराने के लिए पुख्ता इंतजाम किए गए हैं। परीक्षा केंद्रों को पांच जोन और 16 सेक्टर में बांटा गया है। जोनल में एसडीएम और सेक्टर में 16 जिला स्तरीय अफसरों को सेक्टर मजिस्ट्रेट नामित किया गया है। जोकि परीक्षा केंद्रों का भ्रमण कर निगरानी करेंगे। अगर, किसी तरह की लापरवाही या गड़बड़ी बाद में सामने आई तो संबंधित सेक्टर और जोनल की जिम्मेदारी होगी।

बोर्ड परीक्षा की शुरुआत 22 फरवरी से हो रही है। इस बार परीक्षा में कुल 44780 परीक्षार्थी पंजीकृत हैं। इनमें हाईस्कूल में 24970 और इंटरमीडिएट 19810 परीक्षार्थी शामिल हैं। परीक्षा संपन्न कराने के लिए 76 परीक्षा केंद्र बनाए हैं। इस बार नकल विहीन परीक्षा कराने को लेकर विभाग पुख्ता तैयारी कर रहा है, ताकि परीक्षा केंद्रों पर नकल की कोई गुंजाइश न रहे। अफसरों ने निरीक्षण करने के बाद सभी केंद्र पर वॉइस रिकॉर्ड वाले सीसीटीवी कैमरे आदि की व्यवस्था को पूरा कर लिया है। स्ट्रांग रूम भी स्थापित कर दिए गए हैं। इतना ही नहीं नकल रोकने के लिए कई नए नियम भी लागू किए गए हैं। अब शिक्षा विभाग की ओर से परीक्षा की निगरानी करने के लिए केंद्रों पर जोनल और सेक्टर नियुक्त करने की सूची बनाकर डीएम संजय कुमार सिंह को भेजी थी। इस पर डीएम ने मुहर लगाते हुए परीक्षा के लिए जिले को पांच जोन और 16 सेक्टर में विभाजित किया है।

जोनल में सदर तहसील क्षेत्र में एसडीएम देवेंद्र सिंह को जोनल मजिस्ट्रेट बनाया गया है। जिनके अंडर में 22 परीक्षा केंद्र शामिल हैं। इसी तरह अमरिया में एसडीएम अजीत प्रताप सिंह के 12 परीक्षा केंद्र की निगरानी करेंगे। बीसलपुर में एसडीएम महिपाल सिंह 23 परीक्षा केंद्रों की व्यवस्थाओं को परखेंगे। पूरनपुर में एसडीएम राजेश कुमार शुक्ला 10 परीक्षा और कलीनगर में एसडीएम आशुतोष गुप्ता आठ परीक्षा केंद्रों की व्यवस्था को संभालेंगे। इसके अलावा सेक्टर मजिस्ट्रेट के लिए जिला स्तरीय 16 अफसरों का चयन कर उन्हें सेक्टर मजिस्ट्रेट नियुक्त किया है। जोनल और सेक्टर मजिस्ट्रेट के अलावा सभी परीक्षा केंद्रों में एक-एक स्टेटिक मजिस्ट्रेट भी रहेगा। सभी परीक्षा केंद्रों में प्रधानाचार्यों को केंद्र व्यवस्थापक पहले ही बनाया गया था। जबकि वाह्य केंद्र व्यवस्थापकों के रूप में राजकीय व सहायता प्राप्त स्कूलों के वरिष्ठ शिक्षकों को जिम्मेदारी दी है। जोनल और सेक्टर मजिस्ट्रेट बनाने के साथ ही नकल पकड़ने के लिए छह सचल दल टीम बनेंगी। जिसमें महिला पुरुष शिक्षकों के अलावा अफसर शामिल किए जाएंगे।

प्रवेश पत्र का वितरण शुरू, जल्द आएंगी कॉपियां

बोर्ड परीक्षा को अब कॉपियां जिले में भेजने की तैयारियां चल रही हैं। हालांकि प्रवेश पत्र भेज दिए गए हैं। जिनका वितरण स्कूल में शुरू करा दिया गया है। परीक्षार्थियों को प्रवेश प्रत्र बांटे जा रहे हैं। दो चार दिन में कॉपियां भी जिले में पहुंचने की उम्मीद है। जैसे ही कॉपियों की और आपूर्ति होगी, उन्हें भी बांट दिया जाएगा।

> बोर्ड परीक्षा के निर्देशों से सभी केंद्र व्यवस्थापकों, वाह्य केंद्र व्यवस्थापकों को अवगत करा दिया गया है। साथ ही परीक्षा के लिए पांच जोन और 16 सेक्टर बनाए गए हैं। जिनमें जोनल, सेक्टर व स्टेटिक मजिस्ट्रेट नियुक्ति किए गए हैं। परीक्षा की तैयारियां तेजी से पूरी कराई जा रही हैं।
> **-गिरजेश कुमार**, जिला विद्यालय निरीक्षक।

जलकल विभाग की टीम नहीं कर पाई समाधान, रिटायर्ड कर्मियों को जोड़ा

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

नगर पालिका अध्यक्ष के आदेश पर आउटसोर्स कर्मी के तौर पर किया शामिल

अमृत विचार : शहर की बिगड़ी पेयजल व्यवस्था को सुधारने के लिए नगर पालिका की जलकल विभाग की टीम ने तमाम जतन किए, लेकिन कहीं न कहीं अनुभव की कमी आड़े आ गई। ऐसे में अब जलकल के रिटायर्ड कर्मचारी की मदद ली जाएगी। जिम्मेदारों का मानना है कि रिटायर्ड कर्मियों को शहर में पुराने स्थान पर डाली गई पाइप लाइन की अधिक जानकारी है। ऐसे में जल कल प्रभारी पद से रिटायर्ड एक कर्मचारी को जलकल विभाग में आउटसोर्सिंग कर्मचारी के रूप में नियुक्त किया है जो वर्तमान जलकल प्रभारी के सहयोगी के तौर पर काम कर लीकेज समेत अन्य समस्या का सुधार कराने में मदद करेगा।

अमृत योजना की पाइप लाइन बिछाने के बाद से शहर में पेयजल की व्यवस्था बेपटरी हो गई है। शहर में जगह-जगह लीकेज हो रहे हैं। जो शहरवासियों के मुसीबत बने थे। कुछ दिन पूर्व में अशोक कॉलोनी, एकता नगर, बल्लभनगर कॉलोनी समेत विभिन्न स्थानों में लीकेज की समस्या बनी हुई थी। नगर पालिका के जिम्मेदारों का कहना था कि गैस लाइन डालने वाले ठेकेदारों ने कई जगह गड्ढे किए थे। इसी दौरान कई जगह पानी की लाइन लीकेज हो गई, जिससे सुधारने में नगरपालिका की टीम जुटी रही। मगर लाइन पुरानी होने के कारण कर्मचारियों को स्थान तलाशने में दिक्कत आ रही थी। ऐसे कर्मचारी की तलाश की जा रही थी, जिसे पूर्व में डाली गई पाइप लाइन के बारे में अधिक जानकारी हो और वह जलकल टीम की मदद कर सके। नगरपालिका चेयरमैन डॉ. आस्था अग्रवाल के समक्ष पूर्व जलकल प्रभारी राकेश कुमार को आउटसोर्सिंग पर रखने का प्रस्ताव रखा गया। चेयरमैन ने स्वीकृति दी और तत्काल लीकेज की समस्या से शहरवासियों को मुक्ति दिलाने के निर्देश दिए। ताकि पेयजल व्यवस्था पटरी पर आ सके।

गन्ना खरीद में फर्जीवाड़े पर केंद्र प्रभारी पर एफआईआर

संवाददाता, पूरनपुर

अमृत विचार: किसान सहकारी चीनी मिल की गन्ना खरीद प्रक्रिया में फर्जीवाड़ा सामने आने पर मिल प्रबंधन ने गन्ना क्रय केंद्र प्रभारी गुरदास सिंह के खिलाफ धोखाधड़ी की रिपोर्ट दर्ज कराई है। इतना ही नहीं गुरदास सिंह को नौकरी से भी निकाल दिया।

घटनाक्रम पूरनपुर गन्ना समिति के टांडा छत्रपति कुंवरपुर तालुके गजरौला क्रय केंद्र का है। क्रय केंद्र प्रभारी गुरदास सिंह की निगरानी में गन्ने की तौल की जा रही थी। आरोप है कि शाबी नाम का कोई व्यक्ति फर्जी टोकन से गन्ने से भरा ट्राला चीनी मिल पहुंचा गया। गन्ना पर्यवेक्षक की जांच में मामला पकड़ में आया, तो खलबली मच गई। मिल प्रबंधन ने फौरन ही मामले की जांच की। इसके साथ ही क्रय केंद्र प्रभारी गुरदास सिंह के विरुद्ध पूरनपुर कोतवाली में तहरीर दी। पुलिस ने इस पर धोखाधड़ी की रिपोर्ट दर्ज की है। कोतवाल प्रवीण कुमार ने बताया कि गन्ना प्रवेक्षक जगदीश प्रताप सिंह की ओर से केंद्र प्रभारी पर रिपोर्ट दर्ज की गई है। सीसीओ अजय यादव ने बताया कि रिपोर्ट दर्ज कराने के साथ ही आरोपी केंद्र प्रभारी को हटा दिया गया है।

केंद्र प्रभारी ने दी सफाई

उधर, क्रय केंद्र प्रभारी ने मामले में मिल अधिकारियों के सामने सफाई पेश करते हुए कहा कि जिस वक्त गन्ना तौला जा रहा था। उस दौरान नेटवर्किंग की दिक्कत आने पर मशीन बंद हो गई थी। उन्होंने बताया कि मशीन ऑफ करके दोबारा खोल लें। समाधान न होने ट्राला भेजना पड़ा।

फसल बीमा कराने में किसानों का घट रहा रुझान

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

जनपद के 12,231 किसानों ने कराया फसलों का बीमा

पिछले रवी सीजन के मुकाबले घट गए 467 किसान

अमृत विचार : प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना को लेकर किसानों का रुझान कम होता नजर आ रहा है। रवी सीजन को लेकर इस बार जिले के 12,231 किसानों ने फसलों का बीमा कराया है, जबकि पिछले रवी सीजन के मुकाबले इस बार 467 किसान घटे हैं।

केंद्र सरकार द्वारा फसलों को आपदा से होने वाले नुकसान की भरपाई के लिए प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना संचालित की जा रही है। किसानों को फसलों की बीमित राशि का रिस्क कवर प्राप्त करने के लिए बीमा कंपनी को डेढ़ प्रतिशत प्रीमियम का भुगतान करना होता है। इसमें फसलों की क्षति होने पर बीमित किसान को 72 घंटे के अंदर व्यक्तिगत दावा बीमा कंपनी को प्रस्तुत करना होता है। सूचना प्राप्त होने पर कंपनी 48 घंटे में क्षति के आकलन के लिए सर्वेयर को भेजती है। नुकसान के आधार पर क्लेम का भुगतान किया जाता है। इधर, बीमा योजना के स्वैच्छिक होने के कारण अब किसानों का रुझान कम होता नजर आ रहा है। इस बार रवी फसलों का बीमा कराने के लिए अंतिम तिथि 31 दिसंबर निर्धारित की गई थी। इधर, फसल बीमा योजना में रुचि लेते हुए इस बार रवी सीजन 2023-24 के लिए जिले के 12231 किसानों ने फसलों का बीमा कराया है। इसमें 12314 लोनिंग किसान एवं 83 नॉनलोनिंग किसान शामिल है, जबकि वर्ष 2022-23 के रवी सीजन में 12698 किसानों ने फसलों का बीमा कराया था। जिसमें 654 किसानों को फसलों के हुए नुकसान की भरपाई करते हुए बीमा कंपनी ने 66,11,615 रुपये भुगतान किया था। पिछले रवी सीजन के मुकाबले इस बार 467 किसान घटे हैं। हालांकि किसानों की संख्या घटने के पीछे अफसर योजना के स्वैच्छिक होने व हर साल किसानों की संख्या मामूली रूप से बढ़ने-घटने का तर्क दे रहे हैं।

एक खेत में खड़ी गेहूं की फसल। ● अमृत विचार

> प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना का लाभ लेकर फसलों का नुकसान होने पर क्लेम प्राप्त करके क्षति को कम किया जा सकता है। इस बार रवी सीजन के लिए जनपद के 12231 किसानों ने फसल बीमा करवाया है। किसानों की संख्या हर साल बढ़ती घटती रहती है। हालांकि योजना को लेकर जिले भर में प्रचार प्रसार कराया गया था, ताकि अधिक से अधिक किसान योजना का लाभ लें सकें।
> **-संतोष कुमार सविता**, उप कृषि निदेशक

तालाब नीलामी की 75 फीसदी धनराशि ग्राम पंचायतों को मिलेगी

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

डीपीआरओ ने सभी एसडीएम को पत्र भेजकर किया आग्रह

अमृत विचार: ग्रामीण अंचलों के तालाबों की नीलामी से अर्जित 75 प्रतिशत धनराशि अब ग्राम पंचायतों को दी जाएगी। अब तक नीलामी की यह धनराशि तहसीलों में जमा होती थी। इसको लेकर डीपीआरओ ने सभी एसडीएम को पत्र भेजकर नीलामी की धनराशि ग्राम पंचायतों के खातों में भेजने का आग्रह किया है।

जनपद में 720 ग्राम पंचायतें हैं। ग्राम पंचायतों के तालाबों में मछली पालन, सिंघाड़ा उत्पादन आदि को लेकर नीलामी की जाती है। अब तक तालाबों की नीलामी की पूरी धनराशि तहसील में जमा होती आ रही है। इसका कोई भी हिस्सा ग्राम पंचायतों को नहीं मिलता है। जबकि शासनादेश के मुताबिक तालाबों से होने वाली आय का 25 प्रतिशत राजस्व विभाग एवं 75 प्रतिशत संबंधित ग्राम पंचायत के खाते में भेजा जाना चाहिए। इधर, मामला जिला पंचायत राज अधिकारी सतीश कुमार के संज्ञान में आया। जिसके बाद जिला पंचायत राज अधिकारी ने जनपद के सभी उपजिलाधिकारियों को पत्र भेजा है। भेजे गए पत्र में तालाबों की नीलामी की 75 फीसदी धनराशि संबंधित ग्राम पंचायतों के खातों में हस्तांतरित करने का आग्रह किया है।

> संज्ञान में आया है कि ग्राम पंचायतों के तालाबों की नीलामी की धनराशि तहसीलों में जमा की जा रही है, जबकि 75 फीसदी धनराशि ग्राम पंचायतों के खातों में भेजी चाहिए। इसको लेकर सभी उप जिलाधिकारियों को पत्र भेजा गया है।
> **-सतीश कुमार**, जिला पंचायत राज अधिकारी

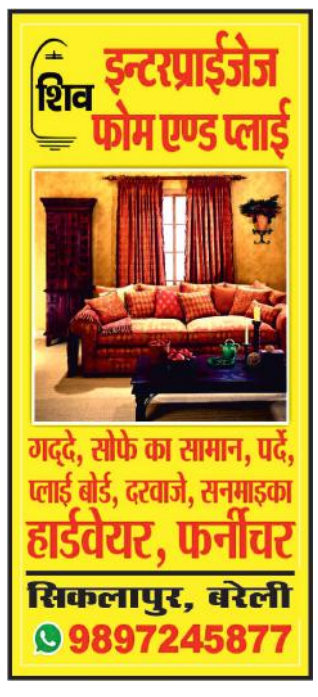

गेहूं खरीद को लेकर 124 क्रय केंद्रों का हुआ निर्धारण, चार क्रय एजेंसियों के माध्यम से खरीद की तैयारी

पिछले वर्ष हुई फजीहत, इस बार भी गेहूं खरीद चुनौती

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

अमृत विचार: जिले में गेहूं खरीद को लेकर तैयारियां जोरों से चल रही है। इसके लिए चार क्रय एजेंसियों के 124 क्रय केंद्रों का निर्धारण किया गया है। यह दीगर बात है कि पिछले सीजन में लक्ष्य के सापेक्ष एक फीसदी भी गेहूं खरीद नहीं हो सकी थी। जिसको लेकर जमकर फजीहत हुई थी।

बीते वर्ष रवी सीजन में जनपद में 141 क्रय केंद्रों के माध्यम से खरीद की गई थी। उस दौरान लक्ष्य के सापेक्ष मात्र

0.91 फीसदी ही गेहूं खरीद हो सकी थी। जिसको लेकर जमकर फजीहत हुई थी। पिछली खरीद को देखते हुए प्रशासन को इस बार गेहूं खरीद का लक्ष्य हासिल करने के लिए कड़ी चुनौती का सामना करना पड़ेगा। इधर शासन ने इस बार किसानों

▸▸ इस बार एक अप्रैल से नहीं, 15 मार्च से ही शुरू होगी खरीद

शासन के निर्देशानुसार इस बार 15 मार्च से गेहूं खरीद की जाएगी। पूर्व में चार क्रय एजेंसियों के 81 क्रय केंद्रों का निर्धारण किया जा चुका है। इसके बाद जिलाधिकारी द्वारा 43 अन्य केंद्रों को मंजूरी दी गई है। -वीके शुक्ल, डिप्टीआरएमओ

को राहत देने के लिए गेहूं का समर्थन मूल्य 150 रुपये से बढ़ाकर 2275 रुपये निर्धारित किया है। आमतौर पर हर साल एक अप्रैल से गेहूं की खरीद शुरू होती है, लेकिन इस बार 15 मार्च से खरीद कराने का निर्णय लिया गया है। इधर धान खरीद के दौरान ही शासन ने गेहूं खरीद को लेकर दिशा निर्देश जारी कर दिए थे। गेहूं खरीद को लेकर अपर जिलाधिकारी का जिला खरीद अधिकारी नामित किया गया है।

गेहूं खरीद को लेकर जनप्रतिनिधियों से प्रस्ताव मांगे गए थे। प्रस्तावों की जांच के बाद पत्रावली अनुमोदन के लिए डीएम को भेजी गई थी। डीएम द्वारा पूर्व में 81 क्रय केंद्रों को मंजूरी दी गई थी। इसके बाद 43 अन्य क्रय केंद्रों के अनुमोदन को लेकर पत्रावली डीएम संजय कुमार सिंह को भेजी गई। डीएम द्वारा सभी 43 क्रय केंद्रों को मंजूरी दे दी गई। कुल मिलाकर अभी तक 124 क्रय केंद्र स्वीकृत किए गए हैं। खाद्य विभाग के मुताबिक पीसीएफ के 25, पीसीयू के 31, यूपीएसएस के 28 एवं भारतीय खाद्य निगम के 40 क्रय केंद्र स्वीकृत किए गए हैं। विभाग के मुताबिक अभी और क्रय केंद्रों का निर्धारण किया जाना है। वहीं जनपद के 600 किसानों द्वारा पोर्टल पर ऑनलाइन पंजीकरण भी कराया जा चुका है।

खाद की दुकानों पर की गई छापेमारी, तीन नमूने भरे

संवाददाता, पूरनपुर

▸▸ कई दुकानदार शटर बंद कर चले गए

अमृत विचार: खाद की दुकानों पर नकली दवाएं और उर्वरक की बिक्री शिकायतों पर कृषि विभाग ताबड़तोड़ छापेमारी कर रहा है। शुक्रवार को जिला कृषि अधिकारी विनोद कुमार यादव ने क्षेत्र में खाद की दुकानों पर जांच की।

इस दौरान तीन दुकानों से फर्टिलाइजर और पेस्टिसाइड के नमूने भरे हैं, जिन्हें जांच के लिए लैब भेजा जाएगा। वहीं, बीते शनिवार को अपर जिला कृषि अधिकारी पंकज कुमार ने मजिस्ट्रेट के साथ कस्बे में खाद की कई दुकानों पर छापेमारी की थी। जिला कृषि अधिकारी विनोद कुमार यादव ने पूरनपुर में तीन दुकानों पर छापेमारी की। माधोटांडा रोड पर साईं राम कृपा और पीलीभीत रोड पर सतनाम खाद भंडार के यहां से पेस्टिसाइड का नमूना जांच के लिए लिया गया। विपिन खाद भंडार से संदिग्ध फर्टिलाइजर का नमूना भरा। कई दुकानों के शटर बंद कर चले गए। जिला कृषि अधिकारी ने बताया कि तीन दुकानों की जांच कर नमूने लिए गए हैं।

डकैतों का नहीं सुराग...45 घंटे में दूसरी मुठभेड़, हिस्ट्रीशीटर को लगी गोली

पुलिस ने मुठभेड़ में घायल हिस्ट्रीशीटर और उसके तीन अन्य साथी दबोचे, अमरिया पुलिस ने की धरपकड़, चोरी के चार इंजन पंपसेट बरामद किया

संवाददाता, पीलीभीत/अमरिया

अमृत विचार: पूरनपुर क्षेत्र में थोक किराना व्यापारी के घर 40 लाख की डकैती डालने वाले डकैतों का कोई सुराग नहीं लग रहा है। पुलिस पिकेट प्वाइंट के नजदीक तीन दुकानों में नकब लगाकर चोरियां हो चुकी हैं। इन वारदातों का खुलासा करने में पुलिस भले ही असफल है लेकिन पुलिस की 45 घंटे में दूसरी बार बदमाशों से सड़क पर मुठभेड़ हो गई। मुठभेड़ में दोनों तरफ से गोलियां चलीं। अमरिया पुलिस टीम ने दियूनी डैम रोड से हिस्ट्रीशीटर को उसके साथियों को दबोचा है। हिस्ट्रीशीटर के पैर में गोली लगी है। चार इंजन बरामद करने का दावा कर अमरिया पुलिस ने गुडवर्क गिनाया है। पुलिस ने चारों आरोपियों को कोर्ट में पेश किया जहां से उसे जेल भेज दिया।

अमरिया पुलिस की गुरुवार देर

व्हीलचेयर पर घायल हिस्ट्रीशीटर को लेकर अस्पताल से निकलती अमरिया पुलिस।

अमरिया पुलिस की गिरफ्त में पकड़े गए अन्य तीन आरोपी व बरामद किए गए इंजन पंपसेट।

रात करीब सवा 11 बजे गश्त के दौरान बदमाशों से मुठभेड़ हो गई। पुलिस के अनुसार एसओ अमरिया ब्रजवीर सिंह पुलिस बल के साथ चेकिंग कर रहे थे। दियूनी डैम मार्ग पर नसीम नगर गांव के पास पहुंचते ही पुलिस को दो बाइकों पर सवार चार लोग आते दिखाई दिए। दोनों बाइकों के बीच रस्सी से पंपिंग सेट इंजन बांध रखा था। पुलिस ने शक होने पर रुकने का इशारा किया लेकिन आरोप है कि बाइक सवार भागने लगे। पुलिस पर तमंचे से फायर कर दिया। पुलिसकर्मी बाल-बाल बचे। जवाबी कार्रवाई में पुलिस ने भी गोली चलाई, जो एक बदमाश के लगी। इसके बाद घेराबंदी कर अमरिया के मोहल्ला हाजीपुरा निवासी हिस्ट्रीशीटर शेरा पुत्र शहजादे, ग्राम अंटा गौटिया निवासी हरीश उर्फ भूरा पुत्र नंदराम, संतोष पुत्र राधेश्याम और सिरसा गांव निवासी मोहम्मद रफीक पुत्र मोहम्मद उमर को पकड़ लिया। उनके पास से दो तमंचे, तीन कारतूस, एक खोखा, बाइक और एक इंजन पंपसेट बरामद हुआ। उन्हें हिरासत में लेकर पुलिस थाने आ गई। घायल हिस्ट्रीशीटर शेरा का रात में ही जिला अस्पताल में इलाज कराया। चोरी किए तीन अन्य इंजन पंपसेट भी बरामद किए हैं। शुक्रवार दोपहर को अमरिया थाना में प्रेसवार्ता कर पुलिस ने पकड़े आरोपियों के संबंध में खुलासा किया।

अल्टीमेटम समाप्त होने को आया पर नहीं हुआ डकैती का खुलासा

30 जनवरी की रात पूरनपुर के किराना व्यापारी के सुनील गुप्ता के परिवार को बंधक बनाकर 40 लाख की डकैती डाली गई। इस वारदात ने पुलिस अधिकारियों के सामने चुनौती खड़ी कर दी है। पहले शहर की गल्ला मंडी में एक ही रात में दो दुकानों में नकब लगाकर चोरी हुई। फिर 5 फरवरी की रात मुख्य बाजार में बल्लभनगर कॉलोनी निवासी कपिल वर्मा की मोबाइल शॉप में छत के रास्ते नकब लगाकर 15 लाख कीमत के मोबाइल चोरी कर लिए। घटना के बाद व्यापारी लामबंद हो गये हैं। जल्द खुलासा न होने पर आंदोलन की चेतावनी दी है। अल्टीमेटम में दिया समय पूरा होने को हैं, लेकिन इन वारदातों के खुलासे के आसपास तक पुलिस नहीं पहुंच पाई।

हिस्ट्रीशीटर शेरा पर लूट, चोरी, गैंगस्टर एक्ट समेत 11 मुकदमे

मुठभेड़ में गोली से घायल हुआ हिस्ट्रीशीटर शेरा शातिर अपराधी है। वह गिरोह बनाकर लूट, चोरी की घटनाओं को अंजाम देता है। पुलिस की मानें तो उस पर अमरिया व जहानाबाद थाने में लूट, चोरी, जानलेवा हमला, एनडीपीएस एक्ट, आर्म्स एक्ट, गैंगस्टर एक्ट आदि के करीब 11 मुकदमे हैं।

अमरिया पुलिस ने मुठभेड़ के बाद हिस्ट्रीशीटर समेत चार अपराधियों की गिरफ्तारी की है। हिस्ट्रीशीटर ने पहले पुलिस टीम पर गोली चलाई। जवाबी कार्रवाई में एक गोली हिस्ट्रीशीटर के पैर में लगी। उसका जिला अस्पताल में इलाज कराया गया। आरोपियों के पास से चोरी किए गए चार इंजन पंपसेट भी बरामद हुए हैं। एफआईआर दर्ज कर कार्रवाई कराई गई है। -**प्रतीक दहिया**, सीओ सदर

एसपी से आज मिलेंगे व्यापारी नेता

पीलीभीत, अमृत विचार: पूरनपुर में हुई चालीस लाख की डकैती और शहर में हुई चोरी की घटनाओं का पुलिस खुलासा नहीं कर सकी है। व्यापारियों की ओर से दिए गए समय के पूरा होने के बाद भी कोई खास प्रगति नहीं हो सका है। डकैती की घटना के 11 दिन बाद भी पुलिस खाली हाथ है। वहीं, शहर में हुई चोरी की घटनाओं में भी कोई खास क्लू नहीं जुटाया जा सका है, जबकि पुलिस को मोबाइल शॉप संचालक की ओर से 32 मोबाइलों से जुड़ी डिटेल भी दी जा चुकी है। सिर्फ जल्द खुलासे के आश्वासन दिए जा रहे हैं। इसे लेकर आज शनिवार को उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधि मंडल से जुड़े व्यापारी एसपी से मुलाकात करेंगे। प्रदेश उपाध्यक्ष हंसराज गुलाटी, जिलाध्यक्ष अनूप अग्रवाल, जिला महामंत्री शैली अग्रवाल का कहना है कि अभी तक घटनाएं नहीं खुल सकी हैं। अल्टीमेटम का समय पूरा हो चुका है। पुलिस निष्क्रिय साबित हुई है। आज दोपहर 12 बजे व्यापार मंडल कार्यालय व्यापार भवन में बड़ी संख्या में व्यापारी शामिल होंगे।

डीएफओ सामाजिक वानिकी लखनऊ मुख्यालय से संबद्ध

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

▸▸ विवादित कार्यशैली के चलते बढ़ी शिकायतें, पूर्व डीएम भी लगा चुके थे फटकार

अमृत विचार: सिटी मजिस्ट्रेट के बाद अब सामाजिक वानिकी प्रभाग के डीएफओ भी राज्यमंत्री संजय सिंह गंगवार की नाराजगी का शिकार हो गए। शासन ने वन राज्यमंत्री के निर्देश पर डीएफओ आरके सिंह को प्रधान मुख्य वन संरक्षक कार्यालय लखनऊ से संबद्ध किया है। उनके स्थान पर बरेली वन प्रभाग के डीएफओ समीर कुमार को अतिरिक्त कार्यभार दिया गया है।

सामाजिक वानिकी प्रभाग में डीएफओ संजीव कुमार के तबादले के बाद डीएफओ आरके सिंह ने कार्यभार ग्रहण किया था। जनपद में मात्र दो माह के कार्यकाल के दौरान डीएफओ आरके सिंह अपनी कार्यशैली को लेकर खासे विवादित रहे। ज्वाइनिंग के कुछ दिन बाद ही कलीनगर क्षेत्र के गांव सपहा में ग्रामीणों से हुई तनातनी के बाद उन्हें भागना पड़ा था। गत वर्ष दिसंबर में शहर के बीचोंबीच हुए बाग कटान मामले में उन्होंने मामले को दबाने का प्रयास किया। जिस पर उन्हें तत्कालीन डीएम प्रवीण कुमार लक्षकार के गुस्से का सामना करना पड़ा था। बाघों एवं उनकी सुरक्षा को लेकर लापरवाही भरे बयानों के चलते वह खासे विवादों से घिरे रहे। बताते हैं कि डीएफओ की विवादित कार्यशैली को लेकर राज्यमंत्री संजय सिंह गंगवार से भी शिकायत की गई। राज्यमंत्री ने मामले को गंभीरता से लेते से वन राज्यमंत्री को पत्र लिखकर पूरे मामले से अवगत कराया। वन राज्यमंत्री के निर्देश पर प्रधान मुख्य वन संरक्षक सुधीर कुमार ने डीएफओ आरके सिंह को प्रधान मुख्य वन संरक्षक कार्यालय लखनऊ से संबद्ध कर दिया है। वैकल्पिक व्यवस्था के तौर पर बरेली वन प्रभाग के डीएफओ समीर कुमार को चार्ज दिया है। डीएफओ का तबादला पूरे दिन खासी चर्चा का विषय बना रहा।

बीआरसी में कार्यकत्रियों को किया जा रहा प्रशिक्षित

पूरनपुर, अमृत विचार: परिषदीय स्कूलों में पहली कक्षा में प्रवेश लेने वाले बच्चे स्कूली माहौल में ढलने में काफी समय लेते हैं। आंगनबाड़ी केंद्रों पर तीन साल से ऊपर के बच्चों को पंजीकृत कर पढ़ाया जाता है। पोषण आहार भी दिया जाता। आंगनबाड़ी केंद्रों से निकलने के बाद बच्चे 5- 6 साल की उम्र में पढ़ने के लिए स्कूलों में प्रवेश लेते हैं। स्कूलों में पढ़ने से पहले अब उन्हें आंगनबाड़ी केंद्रों पर ट्रेंड किया जाएगा। बीआरसी से प्रशिक्षण लेने के बाद आंगनबाड़ी कार्यकत्री बच्चों को स्कूल पहुंचने से पहले प्रारंभिक जानकारी देंगी। इसमें बच्चों की ड्रेस और उसे पहनने का सही तरीका, वस्तुओं की जानकारी दी जाएगी, जिससे उनकी प्राथमिक शिक्षा की नींव मजबूत हो सके। बुधवार से शुरू हुआ ये प्रशिक्षण तीन चरणों में चलेगा। इसमें 50-50 आंगनबाड़ी प्रशिक्षण लेंगी। खंड शिक्षा अधिकारी विजय वीरेंद्र सिंह ने बताया कि आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

पीलीभीत टाइगर रिजर्व के दो वन दरोगा बर्खास्त

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

▸▸ दो साल से बिना सूचना के चले आ रहे थे गैरहाजिर

▸▸ आठ माह पूर्व वन दरोगा को निलंबित कर दिया गया था

अमृत विचार: पीलीभीत- पीलीभीत टाइगर रिजर्व के दो वन दरोगाओं को बर्खास्त कर दिया गया। दोनों वन दरोगा बिना सूचना पिछले दो साल से गैरहाजिर चले आ रहे थे।

पीलीभीत टाइगर रिजर्व के महोफ रेंज के वन दरोगा अखिलेश कुमार सिंह सितंबर 2021 से बिना किसी सूचना के नदारद चल रहे हैं। जब अधिकारियों को इस बात की जानकारी हुई तो आठ माह पूर्व वन दरोगा को निलंबित कर दिया गया था। निलंबन के बाद वन दरोगा को वन एवं वन्यजीव प्रभाग से अटैच कर दिया था। इसके बाद भी वन दरोगा की कोई जानकारी नहीं लग सकी। इसके बाद गैरहाजिर चल रहे वन दरोगा को अंतिम नोटिस भेजा गया।

इसी तरह वन दरोगा विनय प्रकाश भी दो साल से अधिक समय से गैरहाजिर चल रहे थे। विनय प्रकाश को भी नोटिस भेजे गए, लेकिन कोई जवाब नहीं दिया गया। बाद में विनय प्रकाश को भी अंतिम नोटिस भेजा गया। अंतिम नोटिस का भी जवाब न मिलने पर डिप्टी डायरेक्टर नवीन खंडेलवाल द्वारा दोनों वन दरोगाओं को बर्खास्त करने की संस्तुति की गई थी। इधर, शुक्रवार को वन दरोगा अखिलेश कुमार सिंह एवं विनय प्रकाश को बर्खास्त कर दिया गया। पीटीआर के डिप्टी डायरेक्टर नवीन खंडेलवाल ने बताया कि गैरहाजिर चल रहे वन दरोगाओं को बर्खास्त करने की संस्तुति की गई थी। जिसके बाद वन दरोगा अखिलेश कुमार सिंह एवं विनय प्रकाश को बर्खास्त कर दिया गया है।

अवैध अस्पताल-क्लीनिक चलाने की जांच के बीच शिकायतकर्ता की सुलह

संवाददाता, पूरनपुर

▸▸ स्वास्थ्य विभाग ने की छापेमारी, शिकायतकर्ता ने दिया सुलहनामा

▸▸ डॉक्टरों ने शिकायतकर्ता पर लगाया था वसूली का आरोप

अमृत विचार: बगैर डिग्री के अवैध रूप से अस्पताल और क्लीनिक संचालित होने के आरोप लगाकर कार्रवाई की मांग करने वाला शिकायतकर्ता जांच शुरू होते ही पलट गया। जांच के दौरान आरोप-प्रत्यारोप का दौर चला। डॉक्टरों ने शिकायतकर्ता पर उगाही का आरोप लगाया। उधर फर्जीवाड़े की शिकायत पर स्वास्थ्य विभाग ने नायब तहसीलदार के साथ मिलकर कई अस्पताल और क्लीनिकों पर छापेमारी की। संचालकों से शैक्षिक दस्तावेज, पंजीकरण तलब किए। इस बीच शिकायतकर्ता ने अब स्वास्थ्य विभाग को शपथ पत्र देकर अपनी शिकायत वापस लेने की अपील की है।

बता दें कि तीन जनवरी को कोतवाली क्षेत्र के एक व्यक्ति ने मुख्यमंत्री को संबोधित शिकायती पत्र भेजा था। आरोप था कि क्षेत्र में कई अस्पताल और क्लीनिक फर्जी तरीके से चलाए जा रहे हैं। जहां न तो प्रशिक्षित डॉक्टर हैं और उन ही प्रैक्टिस की उनकी योग्यता है। इसमें माधोटांडा क्षेत्र के नौ अस्पताल क्लीनिक शामिल थे। शिकायत गंभीर थी इसलिए स्वास्थ्य विभाग ने जांच के निर्देश दिए। बुधवार को प्रभारी चिकित्साधिकारी डॉ. अनिकेत गंगवार, नायब तहसीलदार ऋषिकांत दीक्षित ने टीम के साथ कई क्लीनिक और अस्पतालों का निरीक्षण किया और दस्तावेज मांगें। इससे पहले डॉक्टरों का एक वर्ग सीओ के पास पहुंचा और शिकायतकर्ता पर वसूली का आरोप लगाते हुए शिकायती पत्र दिया। जिसमें कार्रवाई की मांग की गई। बताते हैं कि मामला तूल पकड़ने और डॉक्टर और शिकायतकर्ता ने बीच का रास्ता निकाल सुलह कर ली गई। अब शिकायतकर्ता ने स्वास्थ्य विभाग को दिए हलफनामें में कहा कि सम्मानित व्यक्तियों की मध्यस्थता से उनका समझौता हो गया। लेकिन सवाल बरकरार है। क्या शिकायत वापस लेने फर्जीवाड़े का संशय खत्म हो गया? क्या वाकई में डॉक्टरों से वसूली के लिए ही ये शिकायत की गई थी?

नगर के एक अस्पताल में भी यही खेल

नगर के शाजिया अस्पताल को लेकर भी इसी तरह की चर्चाएं आम हुई थीं। एक मरीज की शिकायत पर स्वास्थ्य विभाग ने अस्पताल सील कर दिया। बाद में चर्चा ये भी रही कि एक कथित नेता ने समझौते के नाम पर मोटी डिमांड कर दी। ये मामला भी कई दिनों तक चर्चा में रहा था।

> शिकायत पर अस्पताल और क्लीनिकों पर छापेमारी की गई थी। डॉक्टरों से दस्तावेज मांगे गए थे। अब शिकायतकर्ता ने शिकायत वापस ले ली है।
> - **डा. अनिकेत गंगवार**, एमओआईसी

पहले पेड़ों की कटिंग और अब फाल्ट ने गुल कर दी बिजली

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

▸▸ नई तहसील के पास आई दिक्कत तो टीम ने किया सुधार

अमृत विचार: इन दिनों सुधार कार्य के नाम पर शहर वासियों को बिजली किल्लत से जूझना पड़ रहा है। पेड़ों की छंटाई का काम कराए जाने के चलते दिन में बिजली सप्लाई बंद रखी जा रही है। इसके बाद फाल्ट होने पर दोबारा समस्या गहराई हुई है। अघोषित कटौती का स्थायी समाधान पॉवर कॉरपोरेशन के जिम्मेदार नहीं कर पा रहे हैं। इसका खामियाजा उपभोक्ताओं को भुगतना पड़ रहा है।

शहर से लेकर ग्रामीण अंचलों तक बिजली सप्लाई का हाल किसी से छिपा नहीं है। हल्की सी हवा चले या फिर बूंदाबादी... ऊपर से लोड की दिक्कत। बिजली कब चली जाए कुछ पता नहीं। आलम ये है कि गर्मी, सर्दी और बरसात तीनों मौसम में ही अघोषित कटौती की मार तो झेलनी ही है। पिछले चार पांच दिन से पावर कारपोरेशन की ओर से बेहतर सप्लाई देने और फाल्ट की दिक्कत दूर कराने के लिए पेड़ों की छंटाई कराई जा रही है। शुक्रवार को भी सुबह से काम शुरू हुआ और बिजली सप्लाई बंद कर दी गई। ताकि पेड़ों की छंटाई करते वक्त श्रमिकों के साथ कोई हादसा न हो। दोपहर तीन बजे के बाद इसे चालू करा दिया गया।

मगर कुछ ही देर में नई तहसील के पास तार में फाल्ट हो गया। इससे आयुर्वेदिक कॉलेज मार्ग, मोहल्ला खकरा, मलिक अहमद, चौक बाजार समेत आसपास के इलाके में बिजली सप्लाई बाधित हो गई। इसकी सूचना मिलने पर टीम पहुंची और फिर शाम करीब छह बजे के बाद तार जोड़कर सप्लाई चालू कराई गई। जेई जहांगीर आलम ने बताया कि पेड़ों की छंटाई के चलते दिन में कुछ इलाको की सप्लाई बंद रखी गई थी। शाम को फाल्ट हो गया था। उसका भी टीम भेजकर कुछ देर में सुधार करा दिया गया।

नई तहसील के पास तार जोड़ते बिजलीकर्मी।

पुलिस ने अवैध खनन में चार ट्रैक्टर ट्रालियां पकड़ीं

बीसलपुर, अमृत विचार: अवैध खनन की सूचना मिलने पर उप जिलाधिकारी महिपाल सिंह ने छापेमारी की। इस दौरान खनन में लिप्त चार ट्रैक्टर-ट्रालियों को पकड़ा, जबकि उनके चालक मौके से भाग गए। खनन करने वालों के खिलाफ रिपोर्ट जिलाधिकारी को भेजी गई है।

ग्राम पकड़िया मंगली के ग्रामीणों ने एसडीएम महिपाल सिंह से बीते दिनों शिकायत की थी। शिकायत में ग्रामीणों ने बताया था कि उनके क्षेत्र में अवैध खनन चल रहा है। दिन -रात बेखौफ होकर खनन किया जा रहा है। शिकायत को गंभीरता से लेते हुए एसडीएम ने शुक्रवार को टीम के साथ मौके पर जाकर छापा मारा। टीम के पहुंचते ही खनन करने वालों में खलबली मच गई और इधर-उधर भाग गए जबकि टीम ने चार ट्रैक्टर-ट्रॉली अवैध खनन में पकड़ी। एसडीएम ने बताया कि ट्रैक्टर ट्रॉली कब्जे में ली गई है। मामले की रिपोर्ट बनाकर जिलाधिकारी को भेज दी गई है।

दर पर जब आए तुम्हारे हजरते दादा मियां...

मुशायरे में कलाम पेश करते शायर। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, पीलीभीत

▸▸ हजरत दादा मियां के सालाना उर्स के मौके पर हुआ मुशायरा

अमृत विचार: हजरत दादा मियां के सालाना उर्स-ए-पाक में गुरुवार रात मुशायरे का आयोजन किया गया, जिसमें शायरों ने दादा मियां के शान में अपने बेहतरीन कलाम पेश किए। देर रात तक चले मुशायरे में बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

मोहल्ला मदीना शाह में गुरुवार रात नातो मनकबत के मुशायरे का आयोजन किया गया। मुशायरे की सदारत हजरत मुफ्ती हसन मियां कदीरी ने एवं निजामत मस्जिद मदीना शाह के इमाम हफीज मोहम्मद इकराम कदीरी ने की। इस दौरान हजरत मौलाना मुफ्ती हसन मियां कदीरी ने कलाम पेश करते हुए कहा कि आप ही के नूर से तखलीक फरमाकर हसन, आप ही की मिलकियत में दी खुदा ने कायनात। शराफत हुसैन शाद ने अपना कलाम कुछ यूं पेश किया कि उसको बुझा ना पाएगी बातिल की आंधियां, हाफिज चरागेदीन का परवरदिगार है। मोहम्मद हाशिम नाज ने कहा कि यूं हुए गम दूर सारे हजरते दादा मियां,दर पर जब आए तुम्हारे हजरते दादा मियां। शायर शकील अंजुम ने कलाम पढ़ा कि गदाई मिल गई आका के दर की, बड़ी इससे अता कोई नहीं है। शायर उस्मान रजी ने कहा कि ना जिसका सानी कोई है ना जिसका साया है, खुदा का नूर लिबासे बशर में है। शायर अशरफ जाम कविश ने कहा कि जिसे हूरों ने भी पैहम निहारा या रसूलुल्लाह, तुम्हारे दर का है ऐसा नजारा या रसूलुल्लाह। मझोला के मोहम्मद हसन कादरी ने कहा कि दूर है जो आपकी ताजिम से तौकीर से, बस वही महरूम है ईमान की तनवीर से। इसके अलावा शायर अजीम फैजी, अब्दुल सईद खां, मोहम्मद जहीर, बब्बू अंसारी, मोहम्मद असद आदि ने कलाम पेश किए।

भाजपा दलित और मुस्लिम विरोधी, कांग्रेस को बनाएं मजबूत

पीलीभीत, अमृत विचार: अल्पसंख्यक कांग्रेस के चेयरमैन शाहनवाज आलम के निर्देशानुसार चलाए जा रहे टारगेट-41 अभियान के सातवें दिन शनिवार को मोहल्ला देशनगर, शेर मोहम्मद मे दलित मुस्लिम बस्ती में संवाद किया गया। जिसमे लोगों से आगामी लोकसभा चुनाव में भाजपा को वोट न करने की अपील की गई। प्रदेश उपाध्यक्ष अनवर अनीस ने बताया कि जब मुस्लिम और दलित कांग्रेस को वोट करते थे तो भाजपा के दो ही सांसद होते थे, आज संविधान और लोकतंत्र पर खतरा है। अगर संविधान खत्म हुआ सबसे ज्यादा नुकसान अल्पसंख्यक और दलित समुदाय का होगा। भाजपा को दलित मुस्लिम विरोधी बताया। कांग्रेस को मजबूत बनाने की अपील की। इस मौके पर इश्तियाक अहमद अंसारी, सादिक अल्वी, मोहम्मद यूसुफ खान, मोहम्मद फहीम, चमन शाह, मोहम्मद रिजवान उस्मानी, मोहम्मद साबिर लाला, निजाम खान, सैयद तनवीर अली, प्रेम गौतम आदि मौजूद रहे।

दाँतों में तकलीफ
अब कोई चिन्ता नहीं!

ग्लोबल डेन्टल हॉस्पिटल एण्ड इम्पलान्ट सेन्टर

डॉ० एम.बी. गौतम
(डायरेक्टर)
बी.डी.एस., डी.डी.टी., एस.एम.एफ. (LKO)
Consultant & Cosmetic Dental Surgeon
PGD in Laser Surgery, Implantologist, (Korea)
(वरिष्ठ मुख एवं दन्त रोग विशेषज्ञ) डायरेक्टर

डॉ० अतुल कुमार
बी.डी.एस., एम.डी.एस. आर्थोडोन्टिक्स
Specialist : INVISIBLE & ALIGNERS LINGUAL BRACES

डॉ० संजय मजूमदार
बी.डी.एस., एफ.आई.सी.ओ.आई.
(इम्पलान्टोलॉजिस्ट यू.एस.ए.)
एम.डी.एस. (औरल एण्ड मैक्सिलोफेशियल सर्जरी)
पी.जी.डी. लेजर सर्जरी (यूनिवर्सिटी कौलीफोर्निया)
मेक्सिलोफेशियल सर्जन एण्ड इम्पलान्टोलॉजिस्ट
मुख एवं टूटे हुए जबड़े
(फ्रैक्चर) दांत व चेहरे व अक्कल दाढ़ की
सर्जरी के विशेषज्ञ

उपलब्ध सुविधायें

1. शादी से पहले स्माईल डिजाइन अवश्य करायें। 2. दांतों की सफाई विदेशी तकनीक द्वारा (Ultrasonic scaler) 3. हिलते हुए दांतों को जाम करना। 4. दांतों की नसों का इलाज Root Canal Treatment, (Single Siting RCT) 5. मसूड़ों से खून आना/बदबू आना व पायरिया का इलाज। 6. दांतों में ठण्डा व गर्म पानी लगने का इलाज। 7. सड़े गले दांतों को बना तकलीफ के निकालना (Laser Filling) 8. टेड़े-मेढ़े, ऊँचे-नीचे दांतों का इलाज। (Fix Braces) 9. डेन्टल इम्प्लांट द्वारा दांत लगाना। (Zirconia Crown/Bridges) 10. मुलायम जबड़े की बत्तीसी (Flexible/RPD) 11. गुटखे की वजह से मुंह कम खुलने का इलाज। 12. एक्सीडेन्टल टूटे जबडे व अक्कल दाढ़ की सर्जरी की सुविधा 13. एडवान्स एक्स-रे यूनिट Oral Camera, IOPAR, RVG, CBCT, OPG.

Morning Time:- 10:00 AM to 4:00 PM
Evening Time:- 5:00 PM to 8:00 PM
Emergency 24 Hour

एशिया की नं. 1 लैब द्वारा
दांतों एवं मुख का सम्पूर्ण इलाज।

5 साल से 11 साल के बच्चों की दांतों की विशेष देखभाल एवं 60 वर्ष के वरिष्ठ नागरिक शिक्षक/शस्त्र सेना /पुलिस/ ग्राम प्रधान/ स्वास्थ्य विभाग/प्रेस रिपोर्टर/ स्वतंत्रता सेनान

सम्पर्क करें:- 9997317000, 9411632121, 9412738720

निकट प्रभा टाकीज, के ठीक सामने, 151 रामपुर गार्डन, पुरानी एम.आर.आई. बिल्डिंग फर्स्ट फ्लोर, बरेली

मौनी अमावस्या पर शारदा में लगाई श्रद्धालुओं ने डुबकी

सूर्य को अर्घ्य देकर व पूजन कर मांगी मनौतियां, देर शाम तक जगह-जगह चले खिचड़ी के भंडारे

संवाददाता, पूरनपुर

- जाम के चलते श्रद्धालुओं को दो किलोमीटर का सफर पैदल तय करना पड़ा

अमृत विचार: मौनी अमावस्या पर शारदा नदी के तट पर उमड़े श्रद्धालुओं ने आस्था की डुबकी लगाई। नदी के तट पर श्रद्धालुओं के भारी तादाद में उमड़ने से सुरक्षा-व्यवस्था को लेकर पुलिस फोर्स को खासी मशक्कत करनी पड़ी। ट्रैक्टर-ट्रॉली, कार और बसों समेत कई वाहन पहुंचने से जगह-जगह जाम की स्थिति बनी रही। इस दौरान रोकटोक करने पर पुलिसकर्मियों से हल्की बहस भी होती रही।

शुक्रवार को शारदा नदी के धनारा घाट पर हर साल की तरह विशाल मेला लगा। एक दिन पहले ही घाट पर श्रद्धालुओं की भीड़ पहुंच गई थी। सुरक्षा की दृष्टि से दोनों पैंटून पुलों पर आवागमन बंद कर दिया गया था। शुक्रवार की भोर से ही शारदा की तरफ श्रद्धालुओं का हुजूम पहुंचने का सिलसिला शुरू हुआ। जाम के हालात से निपटने के लिए वाहनों को घाट से पहले ही रोक लिया गया। श्रद्धालुओं को दो किलोमीटर का सफर पैदल तय करना पड़ा।

शारदा पर भक्तिमय माहौल के बीच श्रद्धालुओं ने नदी में स्नान कर सूर्य को अर्घ्य दिया और प्रसाद चढ़ाकर मनौती मांगी। भंडारे चले, जहां प्रसाद गृहण किया। इस दौरान सर्वाधिक भंडारे खिचड़ी के हुए।

घाट पर लगे मेले में लोगों ने जमकर खरीदारी की। इस बार मौनी अमावस्या पर लगे मेले में लगभग दो लाख श्रद्धालुओं के पहुंचने का अनुमान लगाया जा रहा है। भीड़ उमड़ने से घाट से पहले ही जाम की स्थिति बनी रही। सुरक्षा व्यवस्था के लिए पूरनपुर कोतवाली और थाना हजार की पुलिस मौजूद रही। पुलिसकर्मियों ने वाहनों को पीछे रोक कर जाम की समस्या दूर की। हालांकि वाहनों को घाट तक ले जाने को लेकर श्रद्धालुओं की पुलिस से बहसबाजी भी हुई।

मौनी अमावस्या पर शारदा नदी में स्नान करते श्रद्धालु। ● अमृत विचार

मेले में नहीं की गई प्रकाश व्यवस्था

मौनी अमावस्या से एक दिन पहले बाबा राघवदास ने एसडीएम से मेले में प्रकाश व्यवस्था करने की मांग की थी। इसके बावजूद मेले में लाइट की कोई व्यवस्था नहीं की गई। देर शाम लौटने वाले श्रद्धालुओं को मुश्किलों का सामना करना पड़ा। इसके अलावा घाट पर देर तक चले आयोजनों में लोगों ने वाहनों की लाइट जलाकर रोशनी की। माघ माह के शुरू होने के साथ ही संत महात्माओं की रामनगरिया बस गई थी। रामनगरिया से पहले भी साधु संतों ने धनाराघाट पर प्रकाश व्यवस्था करने की मांग की थी, लेकिन प्रशासन की ओर से श्रद्धालुओं के लिए प्रकाश की कोई व्यवस्था नहीं की गई।

मोटर बोट के साथ मुस्तैद रहे एसएसबी जवान

मौनी अमावस्या पर हर साल की तरह शारदा नदी के घाट पर लाखों लोग पहुंचे। इस दौरान नदी में श्रद्धालुओं ने स्नान किया। बच्चे, पुरुष, महिला और बुजुर्ग भी पुण्य कमाने के लिए नदी में नहाए। नदी किनारे मेले में किसी अनहोनी की आशंका को लेकर एसएसबी जवान अलर्ट रहे। मोटर बोट के साथ वह शारदा नदी में लगातार गश्त करते रहे। गहरे पानी में स्नान करने वाले श्रद्धालुओं को उन्होंने किनारे पर नहाने की सलाह दी।

धनाराघाट मेले में भंडारे में प्रसाद ग्रहण करते श्रद्धालु। ● अमृत विचार

महिला ने लगाया दहेज उत्पीड़न करने का आरोप

संवाददाता, अमरिया

- महिला को इलाज के बहाने लाए और मायके छोड़ गए ससुराली

अमृत विचार: एक महिला ने पति समेत अन्य ससुरालियों पर दहेज की मांग पूरी न होने पर उत्पीड़न करने का आरोप लगाया है। पुलिस ने पति समेत छह के खिलाफ नामजद रिपोर्ट दर्ज की है।

अमरिया थाने में दी गई तहरीर में ग्राम पंडरा किशनदास निवासी नूतनप्रीत कौर ने बताया कि उसकी शादी 14 मार्च 2020 को नैनीताल के थाना कालाढूंगी क्षेत्र के ग्राम हरीपुर चकलुवा निवासी गुरप्रीत सिंह से हुई थी। विदा के बाद से ही ससुराल वाले कम दहेज का ताना मारने लगे। दहेज में दो लाख रुपये की मांग शुरू कर दी गई। पिता जब विदा कराने आए तो उनसे भी रकम मांगी। पिता ने पति के नाम एक लाख रुपये का चेक दिया। खाना नहीं देते और कमरे में बंद रखने लगे। इसके बाद 10 लाख रुपये मांगने लगे। इससे वह बीमार रहने लगी। मायके से कोई आता तो मिलने नहीं देते। जनवरी 2021 में पिता ने एलईडी दी। फिर भी पिता से मिलने नहीं दिया। 18 जनवरी 2021 को इलाज के बहाने लेकर आए और मायके में छोड़ दिया। 10 लाख कीमत का जेवर हड़प लिया। कई बार मायके वालों ने प्रयास किए लेकिन नहीं माने। हल्द्वानी में विवाह शून्य घोषित करने का मुकदमा कर दिया। अमरिया पुलिस ने पति गुरप्रीत सिंह, ससुर जसविंदर सिंह, सास बलजीत कौर, बलजिंदर सिंह, तेजेंद्र सिंह, प्रताप सिंह के खिलाफ दहेज उत्पीड़न, मारपीट, धमकाने की रिपोर्ट दर्ज की है। एसओ बृजवीर सिंह ने बताया कि विवेचना में साक्ष्य के आधार पर कार्रवाई की जाएगी।

हमला कर मां-बेटे और पुत्रवधू को पीटा, रिपोर्ट दर्ज

पीलीभीत, अमृत विचार: पुराने विवाद में मां-बेटे और पुत्रवधू की पिटाई कर दी गई। गांव के ही चार लोगों के खिलाफ पुलिस ने नामजद रिपोर्ट दर्ज की है। ग्राम विधिपुर निवासी मीरा देवी ने गजरौला थाने में दी गई तहरीर में बताया कि उसके पति रामकुमार का निधन हो चुका है। उसे मुख्यमंत्री आवास योजना के तहत मकान मिला है। जिसका गांव का ही चेतराम विरोध करता है। सात फरवरी की सुबह सात बजे चेतराम, बनवारी, सुरेश कुमार, रामकृष्ण उसके मकान के बाहर आकर गाली गलौज करने लगे। विरोध करने पर हमला कर पिटाई की। शोर सुनकर पुत्रवधू सीमा, बेटा कृष्ण कुमार बचाने आए तो उन्हें भी पीा। आसपास के लोगों के जमा होने पर आरोपी धमकी देकर भाग गए। एसओ रूपा बिष्ट ने बताया कि मामले में रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है। जांच करा रहे हैं।

महाविद्यालय के वार्षिक उत्सव में पुरस्कृत किए गए मेधावी विद्यार्थी

संवाददाता, बीसलपुर

- कैटवॉक में छात्रा रिया चुनी गईं मिस बाला देवी

अमृत विचारः बाला देवी रोशन लाल पीजी कॉलेज ऑफ हायर एजुकेशन महाविद्यालय का वार्षिक उत्सव शुक्रवार को धूमधाम से मनाया गया। मेधावी छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। मिस बाला देवी छात्रा रिया चुनी गईं।

वार्षिक उत्सव समारोह की शुरुआत महाविद्यालय के संरक्षक पूर्व जिला पंचायत सदस्य डॉ. तौलेराम गंगवार, पूर्व ब्लॉक प्रमुख तारावती गंगवार ने संयुक्त रूप से की। सर्वप्रथम छात्राओं ने सरस्वती वंदना व स्वागत गीत प्रस्तुत किया। लोक नृत्य, पंजाबी नृत्य समेत कई सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए। कैटवॉक प्रतियोगिता में बीएससी तृतीय वर्ष की छात्रा रिया प्रथम स्थान पर रही, जबकि बीएससी तृतीय वर्ष की अल्कीसा द्वितीय और इसी कक्षा की सलोनी सिंह ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। विजेता छात्राओं को मुख्य अतिथि जिला पंचायत अध्यक्ष डॉ. दलजीत कौर, महाविद्यालय के प्रबंधक डॉ. रत्नेश गंगवार, जिला पंचायत सदस्य प्रियंका गंगवार, नवाबगंज की पूर्व ब्लाक प्रमुख बीनू गंगवार, नगर पालिका अध्यक्ष प्रतिनिधि अमन जयसवाल उर्फ निक्की, लालौरीखेड़ा ब्लाक प्रमुख अजय सिंह गंगवार, भाजपा जिला अध्यक्ष संजीव प्रताप सिंह ने पुरस्कृत किया। बीए, बीएससी, एमए, एससी प्रथम वर्ष की छात्र-छात्राओं को निःशुल्क बैग व ड्रेस वितरित किए गए। बीएससी गृह विज्ञान तृतीय वर्ष की गोल्ड मेडलिस्ट छात्रा स्वाति गंगवार को भी पुरस्कृत किया गया। प्राचार्य डॉ. ममता अग्रवाल ने प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की। संचालन पवन कुमार व अनुमेल ने किया। इस मौके पर डॉ. पतंजलि, मनोज कुमार, राकेश कुमार, सीताराम, आलोक शुक्ला आदि मौजूद रहे।

विजेताओं को पुरस्कृत करतीं जिला पंचायत अध्यक्ष डॉ. दलजीत कौर। ● अमृत विचार

Lifelines OF BAREILLY MEDICAL
अमृत विचार
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें :- 7464943582

डा. सतेन्द्र शर्मा
M.D. (Ayu.)
बवासीर, भगन्दर रोग विशेषज्ञ
क्या आपकी हर सुबह परेशानी लेकर आती है
जैसे : शौच के समय जलन, दर्द एवं खून, मल द्वार के पास से मवाद व कपड़े खराब होते रहना।
क्षार सूत्र विधि द्वारा इन सभी बीमारियों से सम्पूर्ण निदान पायें।
श्रद्धा केयर अस्पताल
मिनी बाईपास, प्रेम नर्सरी के सामने, कर्मचारी नगर, नैनीताल रोड
बरेली सम्पर्क सूत्र : 9758284825, 8077550393

डॉ. रजनीकांत साहू
MBBS, MS, MCh. (SGPGI, Lucknow)
Ex-Consultant-MAX Hospital, Delhi
वरिष्ठ न्यूरो सर्जन
मो. 7417389433
बरेली न्यूरो एण्ड स्पाईन सेन्टर
पता:- सी 427 डिवाइन हॉस्पिटल के सामने, के.के. हॉस्पिटल रोड, राजेन्द्रनगर, बरेली
मिलने का समय
प्रातः 10 से 12, सायं 6 से 8
7017678157
सुविधायें:- सिर की चोट का इलाज व ऑपरेशन, ब्रेन ट्यूमर, दिमागी गांठ तथा ब्रेन हैमरेज का ऑपरेशन, गर्दन व पीठ का दर्द, सियाटिका, स्लिप डिस्क, स्पाइनल ट्यूमर का इलाज व ऑपरेशन, सिर दर्द व मिर्गी के दौरे का इलाज।

डॉ. दर्शन मेहरा
एम.बी.बी.एस., एम.डी. (मेडिसिन)
Cardiopulmonologist, Diabetologist & Intensivist
आयुष्मान एवं TPA कैशलेस सुविधा उपलब्ध
डायबिटीज, थायराइड, डेंगू, मलेरिया, टी.बी., पेट रोग, गठिया, फेफड़ों के रोग, तेज बुखार, एलर्जी, जटिल रोगों का उचित इलाज
दर्पिन हॉस्पिटल
संजय नगर रोड, पीलीभीत बाईपास, बरेली
हैल्प लाइन – 8979252222, 9457663289

हार्ट केयर एण्ड मेडिकल सेन्टर
66-MES कॉलोनी, वैशमार्बल व गुप्ता ट्रेडर्स के सामने, 100 फुटा रोड, बरेली
रेनबो हॉस्पिटल
प्रेम नर्सरी के सामने, मिनी बाईपास रोड, कर्मचारी नगर, बरेली
हृदय रोगियों के लिये खुशखबरी
बिना ऑपरेशन बिना भर्ती के हृदय के नेचुरल बायपास EECP Treatment के द्वारा सम्भव

डॉ. राकेश मिश्रा
MD, Physician, Dip. Card.
वरिष्ठ फिजिशियन व हृदय रोग विशेषज्ञ
पूर्व चिकित्सक -मेदांता एवं फोर्टिस, गुडगांव
ECG, Echo, TMT, Holter की सुविधा
व्यक्तिगत परामर्श के लिए सम्पर्क करें
7249939977
7088003322

पति समेत तीन पर दहेज उत्पीड़न की रिपोर्ट

पीलीभीत, अमृत विचार: दहेज की मांग पूरी न होने पर विवाहिता की पिटाई की गई। आरोप है कि ससुराल वालों ने शादी के वक्त दिया जेवर भी छीन लिया। गजरौला थाने में दी गई तहरीर में बिठौराकलां गांव निवासी रूबी ने बताया कि उसकी शादी के बाद से ही ससुराल वाले उसे लगातार प्रताड़ित कर रहे हैं। दहेज में अलमारी, वाशिंग मशीन, टीवी, बाइक की मांग पूरी न होने पर मारपीट की जाती है, जबकि मायके वालों ने हैसियत के अनुसार दहेज किया था।

शादी में दिए गए जेवरात छीनकर पीड़िता को घर से निकाल दिया। गजरौला पुलिस ने मामले में पति अश्विनी कुमार, ससुर अशोक और सास संध्या देवी के खिलाफ दहेज उत्पीड़न आदि धाराओं में रिपोर्ट दर्ज की है।

भारत रत्न की घोषणा पर जताई खुशी

पीलीभीत। पूर्व प्रधानमंत्री स्व. चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न मिलने की घोषणा के बाद तराई के जाट समुदाय ने खुशी जताई। तराई जाट मंच के जिलाध्यक्ष चौधरी अतुल मान की ओर से शुक्रवार को एक बैठक बुलाई गई। जिसमें पदाधिकारियों के अलावा जाट समुदाय के लोगों ने हिस्सा लिया। सरकार की इस घोषणा पर हर्ष व्यक्त किया। इस मौके पर हरिओम चौधरी,विनोद मलिक, पुष्पजीत सिंह आशीष सिंह मलिक, सुधीर चौधरी,अरविंद सिंह, भूपेंद्र सिंह, गोपेंद्र सिंह, हैपी सिंह,संदीप सिंह, सत्यवीर सिंह,पुष्पेंद्र चौधरी,पुष्पेंद्र गिल, गौरव चौधरी, पुष्पेंद्र राठी आदि मौजूद रहे।

महारुद्रयज्ञ में डाली गई 2.59 लाख आहुतियां

पीलीभीत। कांवरथी सेवा दल की ओर से आयोजित महारुद्र यज्ञ एवं श्रीमद्भागवत महोत्सव को लेकर शुक्रवार को भी गौरीशंकर मंदिर में भक्त पहुंचे। यज्ञशाला में आचार्य गुरुप्रसाद सीमल, दिनेश प्रसाद बहुगुणा ने पूजन अर्चन कराया। फिर पूर्णाहुति के साथ महारुद्रयज्ञ का समापन हुआ। तीन फरवरी से चल रहे इस धार्मिक आयोजन में कुल 2 .59 लाख आहुतियां डाली गईं। गौरीशंकर बाबा का विशेष शृंगार पूर्व नगर पालिकाध्यक्ष राजीव अग्रवाल की ओर से कराया गया। आज भंडारा आयोजित किया जाएगा। इस मौके पर राकेश नीरू अग्रवाल, मोनू, पारुल अग्रवाल, निधि अग्रवाल, शुचि, राजेश अग्रवाल, विदित, डॉ. वरुण कपूर, गुड्डू गोयल, श्याम गोयल, पदम् गर्ग आदि मौजूद रहे। प्रसाद का भी वितरण किया गया।

सार-संक्षेप

अविरल मिस्टर फेयरवेल और निलोफर चुनीं गई मिस फेयरवेल

पीलीभीत। स्प्रिंगडेल कॉलेज में कक्षा 12वीं के छात्र-छात्राओं का विदाई समारोह शुक्रवार को आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत निदेशिका सरोज जगोता, कार्यकारी निदेशक डॉ. हेमंत जगोता, प्रधानाचार्या प्रिया आनंद ने कराई। 12वीं के छात्र-छात्राओं ने अपने शिक्षकों को कार्ड देकर उनका स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन कक्षा 11 की छात्रा आन्या सक्सेना और अशिका मिश्रा ने किया। कक्षा 11 की छात्रा विशाखा राजपूत ने विदाई के अवसर पर भाषण दिया। छात्रा सुरभि और राशि ने डांस प्रस्तुत किया। इसके बाद गेम्स कराए गए। फ्लैप द बलून एंड फॉम द पिरामिड गेम्स अविरल कुमार और निलोफर प्रथम स्थान पर रहे। म्यूजिकल चेयर गेम में निलोफर और लक्ष्य वर्मा प्रथम चुने गए। मिस्टर एंड मिस फेयरवल प्रथम इन्ट्रोडक्शन राउंड में हुआ। जिसमें छात्रा दिशा गंगवार, निलोफर, शिवांगी दुबे, कशिश वाला, गुरप्रीत कौर, अंशिका मिश्रा, वंशिका मिश्रा, यशी आदि ने प्रतिभाग किया। दूसरे राउंड में टैलेंट शो और तीसरे राउंड में सवाल पूछे गए। जिसके आधार पर मिस्टर फेयरवेल अविरल कुमार और मिस फेयरवेल निलोफर को चुना गया।

छात्राओं ने सीता वाटिका में किया पौधरोपण

पीलीभीत, अमृत विचार : डिवाइन कॉलेज में शुक्रवार को श्रीराम अंतरिक्ष वेधशाला उत्सव को लेकर वेशभूषा कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें छात्र-छात्राओं ने श्रीराम भक्त के रूप में श्रीराम प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम का पूजन किया। छात्राओं ने मां सीता की भूमिका में वाटिका में पौधारोपण किया। हनुमान के किरदार ने संजीवनी पर्वत लाते हुए प्रदर्शन किया। इसी क्रम ने श्रीराम, लक्ष्मण, हनुमान के द्वारा अपने शत्रु के श्रेष्ठ गुणों का सम्मान करते हुए प्रदर्शित किया। जिससे देखकर सभी प्रसन्न हुए। प्रभु श्रीराम के उदघोष लगाए गए। इस मौके पर निदेशिका चारु धवन ने विचार व्यक्त कर पौधरोपण का महत्व भी बताया।

दो अधिवक्ताओं के बीच मारपीट

पूरनपुर। नगर के लाइनपार क्षेत्र में एक अधिवक्ता के साथ दूसरे अधिवक्ता ने मारपीट कर दी। विवाद की सूचना पर अतिरिक्त पुलिस बल पहुंचा। पुलिस एक वकील को थाने ले आई। देर शाम तक मामले में सुलह की कोशिशें चलती रहीं। बताते हैं कि दोनों के बीच किसी बात को लेकर विवाद चल रहा है। कुछ दिन पहले भी एक पक्ष ने दूसरे के घर पहुंचकर हंगामा किया था। इसकी शिकायत भी की गई थी। अब इसी को लेकर दोबारा झगड़े की बात कही जा रही है।

चोरों ने तीन घरों को बनाया निशाना

भानपुर, अमृत विचारः भीरा थाना क्षेत्र के मलूकापुर गांव में चोरों ने तीन घरों को निशाना बनाकर नगदी समेत हजारों की चोरी कर ली है।

भीरा थाना क्षेत्र के मलूकापुर निवासी जाबिर अली का भीरा पलिया हाइवे किनारे मकान है। बताते हैं कि जाबिर पूरे परिवार के साथ मजदूरी करने दिल्ली गए हैं। चोर उनके घर के अंदर रखा बक्सा, कपड़े आदि उठा ले गए। चूंकि मकान मालिक के न होने से चोरी सामान का सही अंदाजा नहीं लग पाया है। उसके बाद जाबिर के पड़ोस में निसार अली के मकान के दरवाजे के कुंडे को तोड़कर अंदर घुसे चोरों ने बर्तनों पर हाथ साफ कर दिया। जिसके बाद चोरों ने नन्हे राज के मकान में भी चोरी की वारदात को अंजाम दिया। सुबह घर का दरवाजा खुला देख वारदात की जानकारी हुई। दोनों पीड़ितों ने पुलिस को तहरीर दी है।

स्टेडियम, प्रेक्षागृह और बरातघरों की है दरकार, विधायक निधि खर्च करने में निघासन विधायक शशांक वर्मा और श्रीनगर विधायक मंजू त्यागी अभी पीछे

बड़े कार्यों की अनदेखी: सोलर और हाईमास्ट लाइट में निधि खपा रहे माननीय

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

▸▸ एमएलसी द्वारा जीआईसी ग्राउंड में सवा दो करोड़ की लागत से बनेगा स्पोर्ट्स कांप्लेक्स

विधायकों व एमएलसी से प्राप्त होने वाले प्रस्तावों के अनुसार कार्य कराए जा रहे हैं। ज्यादातर विधायकों ने अपनी संपूर्ण निधि का उपयोग करते हुए प्रस्ताव उपलब्ध करा दिए हैं, जिनमें से कुछ प्रस्तावों पर कार्य चल रहा है। **-अनिल कुमार सिंह,** सीडीओ

अमृत विचारः जिले में खेल प्रतिभाओं के लिए स्टेडियम, सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए नगरों में प्रेक्षागृह और शादी-विवाह के लिए मैरिज लॉन की दरकार है, लेकिन पांच करोड़ की विधायक निधि में से अधिकांश धनराशि माननीय इंटरलॉकिंग, सोलर लाइट, सेमी हाईमस्ट लाइट, स्कूल फर्नीचर आदि पर खर्च कर रहे हैं। इससे जरूरत के बाद भी बड़े जनुपयोगी विकास कार्यों को अमली जामा नहीं पहनाया जा पा रहा है।

विधानसभा क्षेत्र में विकास कार्य कराने के लिए विधायकों को सांसद के बराबर पांच-पांच करोड़ की विधायक निधि दी जा रही है। निघासन के विधायक शशांक वर्मा व श्रीनगर की विधायक मंजू त्यागी अपनी निधि खर्च करने के मामले में अन्य छह विधायकों से पीछे चल रहे हैं। वहीं एमएलसी अपनी निधि को पूरा खर्च करने के प्रस्ताव दे चुके हैं, जिसमें उनके द्वारा जरूर बड़े प्रोजेक्ट के तहत सवा दो करोड़ की लागत से जीआईसी ग्राउंड में स्पोर्ट्स कांप्लेक्स का निर्माण कराया जा रहा है, जिसके लिए भूमि पूजन कराया जा चुका है।

जिले में आठ विधायक और एक एमएलसी हैं, जो सभी सत्तारूढ़ दल भाजपा के हैं। वर्ष 2022-23 में विधायकों को तीन-तीन करोड़ विधायक निधि मिली थी, जिसे सभी के द्वारा खर्च किया जा चुका है। वर्ष 2023-24 में सरकार ने विधायक निधि को बढ़ाकर पांच करोड़ कर दिया था, जिससे सभी आठों विधायकों रोमी साहनी (पलिया), अमन गिरि (गोला), लोकेंद्र प्रताप सिंह (मोहम्मदी), सौरभ सिंह सोनू (कस्ता), विनोद शंकर अवस्थी (धौरहरा), शशांक वर्मा (निघासन), मंजू त्यागी (श्रीनगर) और योगेश वर्मा (लखीमपुर) को पांच-पांच करोड़ निधि मिली है। वहीं एमएलसी अनूप गुप्ता को भी पांच करोड़ निधि मिली है।

इनमें से निघासन विधायक शशांक वर्मा और श्रीनगर विधायक मंजू त्यागी अपनी निधि खर्च करने सबसे पीछे हैं। निघासन विधायक की निधि में तीन करोड़ और श्रीनगर विधायक की निधि में करीब एक करोड़ रुपये व्यय होना शेष हैं। वहीं अन्य छह विधायकों ने अपनी निधि के अनुसार करीब पांच-पांच करोड़ के प्रस्ताव सीडीओ को उपलब्ध करा दिए हैं, जहां से विधायकों के प्रस्ताव के अनुसार कार्य कराए जा रहे हैं। एमएलसी अनूप गुप्ता की निधि में करीब 50 लाख रुपये व्यय होना शेष हैं।

किसी विधायक के खाते में बड़ी उपलब्धि नहीं

आठों विधायकों द्वारा रूटीन के कार्य जैसे इंटरलॉकिंग सड़क, सोलर लाइट, सेमी हाईमास्ट लगवाने जैसे ही कार्य कराए गए हैं। इसके अलावा कोई बड़े उल्लेखनीय कार्य नहीं कराए गए हैं, जिससे क्षेत्र में उनका योगदान कहीं दिखाई पड़े। इससे नागरिकों को भी विधायकों द्वारा कराए गए कार्य क्षेत्र में कहीं नजर नहीं आते हैं। जबकि विधायकों की निधि सांसद के बराबर हो चुकी है, जिसमें सांसद को पांच विधानसभा क्षेत्रों में कार्य कराने होते हैं। जबकि विधायक को अपनी ही विधानसभा में कार्य कराने हैं।

श्रीनगर विधायक मंजू त्यागी ने बताया कि निधि के अनुसार विभिन्न कार्य कराने के प्रस्ताव तैयार किए जा चुके हैं, अब तक चार करोड़ के कार्य कराए जा चुके हैं। शेष एक करोड़ के भी प्रस्ताव तैयार हैं, जिन्हें जल्द ही विकास भवन भेज दिया जाएगा। वित्त वर्ष समाप्त होने से पहले पूरी निधि का उपयोग कर लिया जाएगा।

निघासन विधायक शशांक वर्मा ने बताया कि क्षेत्र की आवश्यकतानुसार कार्य कराए जा रहे हैं। निधि में कुछ धनराशि शेष है। अभी विधानसभा में हूं, जहां से लौटने के बाद वित्तीय वर्ष की समाप्ति से पूर्व प्रस्ताव देकर क्षेत्र में विकास कार्य कराए जाएंगे।

विधायकों द्वारा दिए गए प्रस्तावों (कार्यों) की संख्या

विधानसभा क्षेत्र	प्रस्तावों की संख्या
पलिया	42
निघासन	17
गोला	48
श्रीनगर	66
धौरहरा	47
लखीमपुर	98
कस्ता	109
मोहम्मदी	211
एमएलसी	27

2500 करोड़ के निवेश प्रस्ताव के बाद धरातल पर उतरने लगीं इकाइयां

19 फरवरी को हो सकती है ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी, की जा रही तैयारी

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

जिला उद्योग केंद्र भवन। ● अमृत विचार

▸▸ इकाइयों में 30 हजार से ज्यादा लोगों को मिलेगा रोजगार

अमृत विचार: पिछले साल हुए यूपी इन्वेस्टर्स समिट में 2500 करोड़ के निवेश प्रस्ताव आए थे, जिसमें से 40 से ज्यादा इकाइयां धरातल पर उतरने लगी हैं। अप्रैल के बाद कुछ में उत्पादन शुरू होने की भी उम्मीद है। इनसे जिले में करीब 30 हजार से ज्यादा लोगों को रोजगार मिल सकेगा। 19 फरवरी को होने वाली ग्राउंड सेरेमनी में इनके पेश होने की तैयारी चल रही है।

पिछले साल 25 जनवरी को जिले में उद्योग समिट का आयोजन किया गया था, जिसमें 2500 करोड़ के 90 प्रोजेक्ट के एमओयू साइन किए गए थे। कई प्रोजेक्ट जमीन न मिलने के कारण धरातल पर नहीं उतर पाए। हालांकि शासन से दिए गए लक्ष्य के सापेक्ष छह गुना अधिक एमओयू साइन किए गए थे। इसमें शासन ने पहले 200 फिर 300 करोड़ का लक्ष्य दिया था। बाद में इनकी संख्या और बढ़ती गई, जिससे 2500 करोड़ के प्रस्ताव मिल गए थे। इनमें 200 करोड़ से ज्यादा के तीन बड़े गन्ना उत्पादन पर आधारित प्रोजेक्ट हैं। पसगवां में स्थित डीसीएम ग्रुप की चीनी मिल का सबसे बड़ा प्रोजेक्ट है।

बॉटलिंग प्लांट में मार्च से शुरू होगा उत्पादन

उपायुक्त संजय सिंह ने बताया कि जिन बड़े निवेशकों ने एमओयू साइन किए थे, उनमें ग्लोबस ग्रुप ने 200 करोड़ का एथेनॉल डिस्टीलरी एंड बॉटलिंग प्लांट लगाया है, जिसमें मार्च से उत्पादन शुरू होने की उम्मीद है। इसके अलावा गोला रोड पर करनपुर गांव में डेयरी प्रोजेक्ट और शहर के छाउछ एरिया में प्लाईवुड उत्पादन का काम भी इसी साल शुरू हो जाएगा। एमएसएमई के तहत करीब एक करोड़ के प्रोजेक्ट भी चालू होने की दिशा में अग्रसर हैं।

क्या है ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी

जिला उद्योग केंद्र के उपायुक्त संजय सिंह ने बताया कि एमओयू साइन होने वाले प्रोजेक्ट की स्थापना को लेकर ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी आयोजित की जा रही है। इसमें वह सभी उद्यमी शामिल होंगे, जो अपने प्रोजेक्ट स्थापित कर चुके हैं। 40 से ज्यादा प्रोजेक्ट पर काम शुरू हो गया है। इनमें उत्पादन की तैयारी की जा रही है।

जिले में पिछले साल करीब ढाई हजार करोड़ के प्रस्ताव पर एमओयू साइन किए गए थे। 40-45 प्रोजेक्ट तैयार हैं। ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी के बाद उद्योगों की स्थापना में प्रगति आएगी। अप्रैल के बाद कई अन्य इकाइयां भी धरातल पर आ जाएंगी। **-संजय सिंह,** उपायुक्त- उद्योग।

नाली की ईंटें निकालने की अधिकारियों से शिकायत

गोला गोकर्णनाथ, अमृत विचारः कुम्भी ब्लाक की ग्राम पंचायत बगहा शहाबुद्दीनपुर में ग्राम प्रधान पर नाली की ईंट निकालने का आरोप लगाते हुए ग्रामीण ने अधिकारियों से शिकायत की है।

गांव निवासी राजेश कुमार मिश्रा ने अधिकारियों को भेजी शिकायत में बताया कि ग्राम प्रधान सुरभि वर्मा के पति अजीत कुमार वर्मा ने मकान के पास नाली की ईंटें निकलवा ली हैं। जिससे नाली का पानी सड़कों पर बहने लगा है। ऐसे में लोगों को निकलने में कठिनाई होती है। प्रधान पति द्वारा कहा गया था कि जल्द ही नई नाली बनवा दी जाएगी, लेकिन साढ़े तीन वर्ष बीत जाने के बाद भी नाली का निर्माण नहीं हो पाया है। जिसके चलते पानी का निकास अवरुद्ध हो जाने से पानी उनके मकान की नींव में जा रहा है, जिससे मकान को क्षति पहुंचने की संभावना है। प्रधान पति अजीत कुमार वर्मा ने बताया की मकान बनवाते समय शिकायतकर्ता द्वारा स्वयं ही नाली उखड़वाई गयी थी और उसी जगह पर उन्होंने दीवार उठवाकर मकान बनवा लिया, आरोप निराधार है ।

लकड़ी के नीचे दबकर साइकिल सवार की मौत

युवक की मौत के बाद जुटे लोग और जांच करती पुलिस। ● अमृत विचार

संवाददाता, सिंगाही

▸▸ दुधवा जंगल से जलौनी लकड़ी लेकर आ रहा था युवक

अमृत विचार: दुधवा जंगल से जलौनी लकड़ी लेकर आ रहे युवक की साइकिल अचानक लड़खड़ाकर पलट गई, जिससे वह लकड़ी के नीचे दब गया और उसकी मौके पर ही मौत हो गई। पुलिस ने पंचायतनामा भरकर शव परिवार वालों को सौंप दिया।

नगर के मोहल्ला भेडोरा निवासी राम जीवन कश्यप (35) शुक्रवार को दुधवा जंगल से जलोनी लकड़ी लेकर साइकिल से घर आ रहा था। खैरीगढ़ गांव के निकट उसकी साइकिल अनियंत्रित होकर पलट गई। जिससे वह साइकिल पर रखी लकड़ी के नीचे दब गया, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। हादसे में मौत की खबर मिलते ही उसके परिवार में चीख पुकार मच गई। रोते बिलखते परिवार के लोग मौके पर पहुंच गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घटना स्थल का निरीक्षण किया। परिवार वालों के पोस्टमार्टम कराने से इंकार करने पर पंचायतनामा भरकर शव परिजनों को सौंप दिया। एसएसआई हीरालाल रावत ने बताया कि परिवार वालों ने पोस्टमार्टम कराने से इंकार किया है।

गोला में नौ करोड़ से बनेंगी गन्ना विभाग की दो सड़कें

लखीमपुर खीरी, अमृत विचारः गोला क्षेत्र में गन्ना विभाग की जर्जर पड़ी दो सड़कों का जल्द ही कायाकल्प होने वाला है। शासन ने दोनों सड़कों के निर्माण के लिए बजट आवंटित कर दिया है, जिसके बाद कार्यदाई संस्था पीडब्ल्यूडी निर्माण खंड तीन ने टेंडर प्रक्रिया प्रारंभ कर दी है। दोनों सड़कों के निर्माण पर करीब नौ करोड़ लागत आएगी। गोला चीनी मिल को जाने वाले गोला-कुकरा टाउन के अवशेष मार्ग पर जर्जर हो चुकी करीब 600 मीटर सड़क को सात मीटर चौड़ा किया जाएगा। सड़क पर पानी भरने की समस्या को देखते हुए इस बार दोनों ओर नाली भी बनाई जाएगी। इस कार्य पर करीब ढाई करोड़ रुपये खर्च होंगे। इसके अलावा 6.500 किलोमीटर लंबे गोला कुकरा टाउन मार्ग का नवीनीकरण किया जाएगा। इसकी चौड़ाई 3.75 मीटर ही रहेगी। इस कार्य पर करीब 4.50 करोड़ रुपये लागत आएगी। कार्यदाई संस्था पीडब्ल्यूडी निर्माण खंड तीन द्वारा इन दोनों मार्गों पर निर्माण कार्य प्रारंभ कराने के लिए टेंडर प्रक्रिया प्रारंभ कर दी गई है।

जमीन की रंजिश में हुई मारपीट में घायल बुजुर्ग ने तोड़ा दम

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

▸▸ पुलिस ने दर्ज मामले में बढ़ाई हत्या की धारा

रिपोर्ट पहले से दर्ज है। धारा तरमीम कर ली गई है। आरोपी पुलिस की हिरासत में है। पूछताछ की जा रही है। जल्द ही आरोपियों को जेल भेजा जाएगा। घटना के पीछे जमीनी रंजिश बताई जा रही है। **-सुबोध जायसवाल,** सीओ सिटी

अमृत विचार: शारदा नगर थाना क्षेत्र में जमीनी रंजिश को लेकर छह दिन पूर्व हुई मारपीट में घायल बुजुर्ग की उपचार के दौरान जिला अस्पताल में मौत हो गई। पुलिस ने दर्ज जानलेवा हमले के मामले में हत्या की धारा बढ़ाई है। पुलिस ने पोस्टमार्टम कराकर शव परिवार वालों को सौंप दिया। पुलिस ने आरोपियों को हिरासत में लिया है।

शारदा नगर थाना क्षेत्र के गांव छंगा गौढ़ी निवासी हेतराम (70) का परिवार के ही हरिनंदन से जमीन के बंटवारे को लेकर विवाद चल रहा है। इसको लेकर आए दिन दोनों गुटों के बीच झगड़ा होता रहता था। आरोप है कि तीन फरवरी की रात हरिनंदन ने अपने पूरे परिवार के साथ हेतराम पर हमला कर दिया। उसके बेटे ने हेतराम के सिर पर कोई वजनदार चीज मार दी, जिससे उसका सिर फट गया और वह गंभीर रूप से घायल हो गया।

घटना को अंजाम देकर आरोपी भाग निकले। परिवार के लोग हेतराम को लेकर जिला अस्पताल पहुंचे, जहां उसका इलाज शुरू हुआ। हेतराम के बेटे ने आरोपियों के खिलाफ पुलिस को तहरीर दी। पुलिस ने तहरीर के आधार पर हरिनंदन, सरोजनी, उमेश, अभय, हर्षित व पूर्वी निवासी छंगा के खिलाफ बलवा, मारपीट, जानलेवा हमला समेत कई गंभीर धाराओं में रिपोर्ट दर्ज की थी। उधर जिला अस्पताल में गुरुवार की शाम इलाज के दौरान हेतराम की मौत हो गई।

परिजनों ने मामले की जानकारी पुलिस को दी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में ले लिया। पुलिस ने हत्या की धारा बढ़ा ली है। साथ ही तीन आरोपियों को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। पुलिस का दावा है कि जल्द ही घटना का खुलासा कर आरोपियों को जेल भेजा जाएगा।

घर में सोता रहा परिवार, ताला तोड़कर चोर ले गए नगदी-जेवर

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

▸▸ तीन अन्य घरों से भी उड़ाया माल, पीड़ित ने बेटे के साले पर दर्ज कराई रिपोर्ट

अमृत विचार: कस्बा व थाना खीरी के मोहल्ला हनिया टोला के एक मकान में घुसे चोर बक्सा आदि का ताला तोड़कर 45 हजार रुपए और करीब दो लाख के जेवर चोरी कर ले गए। खटपट की आवाज पर जागी मकान मालिक की पुत्री ने एक आरोपी को पहचान लिया। पुलिस ने मकान मालिक की तहरीर पर आरोपी के खिलाफ चोरी की रिपोर्ट दर्ज की है। पुलिस आरोपी की तलाश कर रही है।

मोहल्ला हनिया टोला निवासी गुड्डू गुप्ता ने बताया कि गुरुवार की रात वह परिवार के साथ घर में सो रहे थे। रात करीब तीन बजे चार लोग घर में घुस आए और बक्सों आदि का ताला तोड़ दिया। इसी बीच खटपट की आवाज होने पर पुत्री शीतल की आंख खुल गई। शीतल के शोर मचाने पर आरोपी बक्से में रखे 45 हजार रुपए, सोने का हार, लर, अंगूठी झुमकी, झाला, कुंडल, पायल आदि लेकर भाग निकले। उन्होंने बताया पुत्री ने एक आरोपी की पहचान कोतवाली सदर के मोहल्ला रामनगर निवासी दीपक गुप्ता के रूप में की है। आरोपी उनके पुत्र नितिन का साला है। आरोप है कि इन्हीं लोगों ने मोहल्ले के सुरेश कुमार, लल्लू और सीमा पत्नी नीरज के घर भी इसी रात को चोरी की है। एसओ खीरी अजीत कुमार ने बताया कि रिपोर्ट दर्ज कर ली गई है।

खर-फूस लेने को सशर्त अनुमति

संवाददाता, पलियाकलां

थारुओं के साथ समन्वय बैठक में मौजूद एसडीएम कार्तिकेय सिंह व अन्य अधिकारी।

▸▸ वन अधिनियम का उल्लंघन करने पर होगी कार्रवाई

अमृत विचार: थारू बाहुल्य गांवों के महिला-पुरुषों ने जलौनी लकड़ी और घर बनाने के लिए फूस एकत्र किए जाने को लेकर जबरन जंगल में घुसने की चेतावनी दी थी। इसके बाद अनेक थारूओं ने जंगल में घुसकर खर-फूस लेने की भी कोशिश की थी। इसको लेकर शुक्रवार को तहसील के अधिकारियों ने तहसील सभागार में थारुओं के साथ समन्वय बैठक की। बैठक में थारुओं द्वारा जंगल से जलौनी लकड़ी और खर-फूस लेने पर सशर्त अनुमति दे दी।

एसडीएम पलिया कार्तिकेय सिंह की अध्यक्षता में तहसील सभागार में हुई समन्वय बैठक में वन संपदा की सुरक्षा और जनजातियों की मान्यताओं व आवश्यकताओं आदि के संबंध में विस्तार से चर्चा की गई। कहा गया कि थारू लोग जंगल की रक्षा करते हैं और वन पर आश्रित हैं। एसडीएम ने कहा कि वन संपदा को नुकसान पहुंचाए बगैर वह जंगल से जलौनी लकड़ी और घास फूस ले सकते हैं।

यदि नुकसान पहुंचाया या वन अधिनियम का उल्लंघन मिला तो संबंधित पर विधिक कार्रवाई की जाएगी। बैठक में थारुओं की ओर से ग्राम पंचायतों के प्रधान, थारू ग्राम स्तरीय वन अधिकार समिति के सदस्य और बिरादरी के महिला-पुरुषों के साथ तहसीलदार पलिया आरती यादव, उप प्रभागीय वन अधिकारी, क्षेत्रीय वन अधिकारी गौरीफंटा, वनकटी, उत्तर सोनारीपुर, दक्षिण सोनारीपुर, दुधवा, गौरीफंटा रेंज आदि अफसर मौजूद रहे।

कर्ज से परेशान युवक ने फंदे से लटक कर दी जान, मचा कोहराम

युवक की मौत के बाद विलाप करते परिजन। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

अमृत विचार: थाना खमरिया क्षेत्र के गांव में बॉयलर मुर्गे का व्यापार करने वाले युवक कर्ज से परेशान होकर गन्ने के खेत में आम के पेड़ से फंदा लगा लटक गया। परिजनों की सूचना पर पहुंची खमरिया पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया ।

खमरिया थाना क्षेत्र के ईसवारापुरवा मजरा बेहटा निवासी अमित कुमार(25)पुत्र रामदुलारे ने शुक्रवार को कर्ज से परेशान होकर रसूलपुर गांव के पास एक गन्ने के खेत में आम के पेड़ से फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। परिजनों ने बताया कि अमित बॉयलर मुर्गों को खरीदकर उनकी बिक्री करता था। लगातार हो रहे घाटे की वजह से उस पर कर्ज का बोझ बढ़ता चला गया और लोगों द्वारा उधार चुकता करने के दबाव के चलते उसने फांसी लगा ली। मौके पर पहुंचे परिजनों ने खमरिया पुलिस को सूचना दी। एएसपी नैपाल सिंह ने बताया की परिजन कर्ज को लेकर आत्महत्या की बात कह रहे हैं। मामले की जांच की जा रही है।

हल्द्वानी की घटना को लेकर अलर्ट धर्म स्थलों पर मुस्तैद रही पुलिस

संवाददाता, गोला गोकर्णनाथ/ लखीमपुर खीरी

मोहम्मदी रोड मस्जिद पर खड़े एसडीएम रत्नाकर मिश्र और पुलिस बल।

▸▸ एसडीएम-सीओ ने भी नगरों में लिया जायजा

▸▸ मस्जिदों और मंदिरों पर रही कड़ी नजर

अमृत विचार: हल्द्वानी के बनभूलपुरा में हुई घटना को लेकर जिले भर में अलर्ट रहा। प्रशासन और पुलिस के अधिकारी जुमे की नमाज के दौरान सक्रिय रहे। उधर, छोटी काशी में भी स्थानीय प्रशासन अलर्ट रहा। जुमे की नमाज के दौरान एसडीएम ने पुलिस फोर्स के साथ शहर की मस्जिदों और मंदिरों का जायजा लेकर शांति व्यवस्था परखी।

हल्द्वानी के बनभूलपुरा में हुई पत्थरबाजी और आगजनी की घटना को देखते हुए शहर के अलावा छोटी काशी के नाम से विख्यात नगर गोला गोकर्णनाथ, पलिया कलां, निघासन, धौरहरा, ईसानगर, मितौली, मोहम्मदी, मैलानी और मैगलगंज में शुक्रवार होने के कारण प्रशासनिक अधिकारी जुमे की नमाज पर पैनी नजर बनाए रहे। एसडीएम रत्नाकर मिश्र ने कोतवाल इंद्रजीत सिंह समेत पुलिस फोर्स के साथ मोहम्मदी रोड की जामा मस्जिद समेत मोहल्ले में बनी मस्जिदों का जायजा लिया और मंदिरों के पास पहुंच सुरक्षा व्यवस्था देखी। एसडीएम ने लोगों से नगर में गंगा जमुनी तहजीव को कायम रखने की भी अपील की है।

फर्जी बिल पर ले जाई जा रही थी 130 बोरी भांग, पुलिस ने दबोचा

कार्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

▸▸ रायबरेली से लाई जा रही थी भांग दो आरोपी मौके से भाग निकले

अमृत विचार: कोतवाली सदर की रामापुर चौकी पुलिस ने पीलीभीत-बस्ती नेशनल हाईवे पर एक डीसीएम से ले जाई जा रही 130 बोरी भांग बरामद कर एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। जबकि उसके दो साथी मौके से भाग निकले। पुलिस ने पकड़े गए आरोपी के खिलाफ धोखाधड़ी सहित कई धाराओं में रिपोर्ट दर्ज कर उसका चालान भेजा है।

रामपुर चौकी इंचार्ज दिनेश पांडेय ने बताया की वह गुरुवार की रात गश्त कर रहे थे। इसी दौरान मिली सूचना के आधार पर नकहा की तरफ से आ रही डीसीएम को रमही पुल के पास रोक लिया। तलाशी में डीसीएम के अंदर से भांग मिली। डीसीएम में बैठे लोगों को पुलिस ने पकड़ने की कोशिश की। लेकिन दो लोग पुलिस को चकमा देकर भाग निकले। जबकि एक युवक को पुलिस ने दबोच लिया। उसकी पहचान टिंकू श्रीवास्तव निवासी चितौहला थाना महौली जिला सीतापुर के रूप में हुई। पुलिस ने भांग की बोरियों की गिनती कराई तो 130 बोरी मिलीं। तौल करने पर भांग 5200 किग्रा हुई। पकड़े गए युवक ने पुलिस को भांग के पेपर भी दिखाए। उसका कहना था कि भांग वैध है, लेकिन जांच में पेपर फर्जी पाए गए। आरोपी के अनुसार भांग रायबरेली ले जाई जा रही थी। वहीं फरार आरोपी पिता-पुत्र बताये जा रहे हैं। उनकी पहचान कफील और मुन्ना के रूप में हुई है। दोनों अशोकपुर थाना खीरी के रहने वाले हैं। प्रभारी निरीक्षक सदर अंबर सिंह ने बताया कि जल्द ही फरार आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेजा जाएगा।

कार की टक्कर से बाइक सवार तीन युवक घायल

केशवापुर, अमृत विचार : शुक्रवार सुबह 10 बजे सराहा पेट्रोल पंप खम्हौल के सामने बाइक और कार में आमने-सामने की जोरदार टक्कर हो गई, जिससे बाइक सवार तीन युवक गम्भीर घायल हो गये।

घटना के बाद कार चालक मय वाहन मौके से भाग निकला। राहगीरों की मदद से घायल युवकों रविन्द्र कुमार (28) पुत्र मूलचंद, अजय कुमार (29) पुत्र ब्रह्मादीन, सोनू (27) पुत्र लखपति निवासी अमकोटवा को गोला सीएचसी में भर्ती कराया गया।

SBFC
एस.बी.एफ.सी. फाइनेंस लिमिटेड
पता : यूनिट नं. 103, प्रथम तल सी एंड बी स्क्वॉयर, संगम कॉम्पलेक्स, 127, अंधेरी कुरला रोड, ग्राम चकला, अंधेरी (ईस्ट), मुम्बई 400059
टेलीफोन : +91 22 67875300
फैक्स : +91 22 67875334, www.sbfc.com
CIN NO. : U67190MH2008PTC178270
सार्वजनिक सूचना
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि हमने दिनांक 20 दिसम्बर 2023 को बरेली शाखा स्थानान्तरित करने की सूचना अखबार में दी थी जो गलत थी सही दिनांक 19.03.2024 है। इस असुविधा के लिए हम खेद व्यक्त करते हैं।
नोट : अन्य जानकारी यथावत रहेगी।
हमारी नई शाखा का पता :
एस.बी.एफ.सी. फाइनेंस लिमिटेड
ए-24, ग्राउंड फ्लोर,दीन दयाल पुरम,बरेली-243001 (यू.पी.)
सम्पर्क सूत्र-9136950325

शर्मायें नहीं सम्पर्क करें
हर उम्र में
ताकत रुकावट बवासीर
बै-औलाद
शुक्राणुओ की कमी
हर तरफ से निराश स्त्री पुरुष गुप्त रोगी मिलें
शुगर
जोड़ों का दर्द

GMP & ISO CERTIFIED Co.
डा.शेख
क्या आप बचपन में की गई गलतियों के कारण अपना वैवाहिक जीवन बर्बाद हो गया है और जगह जगह इलाज करा करा परेशान हो चुके हैं या डाक्टर, हकीमों से हट चुका है तो एक बार हिन्दुस्तान के जाने माने यौन रोग चिकित्सक डा.शेख से सम्पर्क करें डा. शेख को अच्छे इलाज के लिये अनेको अवार्डो से सम्मानित किया जा चुका है जैसे
Gold Medalist Best Sexologist in india
Pride of Country Kohinoor A Tibb
Chikitask Ratan Manav Sewa Ratan
Ahinsha Dharam Ratan
मिलें हर मंगलवार
मालियों की पुलिया
बरेली
9837023223

सैक्स रोगी मिलें
सैक्स रोगों का एकमात्र स्थायी समाधान

डॉ. रफीक
समय-रोजाना प्रातः 9 बजे से सायं 5 बजे तक (रविवार अवकाश)
बड़ी बिहार, निकट डेलापीर मण्डी, बरेली। मो. 9319929913
नामर्दों Impotance, नसों की कमजोरी, संभोग से घबराहट, उत्तेजना की कमी, स्त्रियों में सैक्स की इच्छा न होना, मानसिक तनाव आदि के लिए नि:संकोच मिलें।
ताकत, जोश, रुकावट और वैवाहिक जीवन का आनन्द उठाएं।
- शीघ्र पतन (Premature Ejaculation)
- धात रोग (Spermatorrhoea)
- स्वप्न दोष (Night Fall)
- वीर्य का पतलापन बगैरा का इलाज विशेष प्रकार की भस्मों, माजून, तिलों द्वारा किया जाता है।
- निल शुक्राणु (Azoospermia)
- शुक्राणुओं की कमी (Oligospermia)
- बांझपन (Sterility)
- सफेद पानी (Leucorrhoea)
- पेट में दर्द (Pelvic Pain)
- बार-बार गर्भपात होना

35 वर्षों का अनुभवी आयुर्वेदिका, यूनानी इलाज कराएं, जीवन में खुशियां लाएं।

ALA Herbal
ताकत, जोश, रुकावट का स्थायी समाधान
कैप्सूल मैनसूल
(काम्बो पैक)

धात, शीघ्रपतन, नपुंसकता के सम्पूर्ण समाधान के लिए इस पैक में तीन प्रकार के कैप्सूल है। तीनों तरह के एक-एक कैप्सूल दूध के साथ खाने से हर प्रकार की कमजोरी ठीक हो जाती है। यह शुक्राणुओं की कमी को दूर करता है। इम्युनिटी पावर को बढ़ाता है। Streess, Depression में लाभ करता है।
यह पूर्णतयः हर्बल है, इसका कोई साइड इफैक्ट नहीं है
Flipkart, Amazon पर उपलब्ध है।
Helpline No.
8439818102
7451039913
स्टॉकिस्ट
आरोग्य सदन बरेली
9837007202

लंदनपुर ग्रंट का देवीपुर गांव बदहाल

पक्की सड़कें बनीं न नालियां, गांव में नहीं आता सफाईकर्मी, परेशान होते हैं लोग

संवाददाता, गोला गोकर्णनाथ

अमृत विचार: कुंभी ब्लॉक की सबसे अधिक मजरों और आबादी वाली ग्राम पंचायत लंदनपुर ग्रंट के मजरा देवीपुर के वाशिंदे सड़क, नाली के लिए तरस रहे हैं। घरों का पानी सड़क पर बहने से कच्चे रास्ते पर कीचड़ और दलदल हो जाता है, जिससे लोगों को आने-जाने में दिक्कत होती है।

देवीपुर गांव के नीरज कुमार, बांकेलाल, नारेंद्र कुमार, गजराम, सुरजनलाल, गोपी शुक्ला, प्रहलाद, गोलू वर्मा, धीरज शुक्ला आदि का कहना है कि ग्राम प्रधान शगुन जायसवाल के कार्यकाल में ग्रामीणों की सबसे ज्यादा उपेक्षा हुई है। महिला प्रधान होने के कारण उनके पति भी गांव में शायद ही कभी कभार आते हैं, जिससे गांव के लोग शौचालय, आवास तक की सुविधाओं से वंचित हैं। गांव के चार प्रमुख रास्ते कच्चे होने से हल्की बरसात में उन पर दलदल और कीचड़ हो जाता है। ऐसे में वाहन तो दूर पैदल निकलना तक मुश्किल हो जाता है।

गांव के गजराम, मुनेंद्र कुमार आदि ने ग्राम प्रधानपति से इंटरलाकिंग कराने और नालियां बनवाने की कई बार मांग की। ग्राम पंचायत अधिकारी अखिलेश कुमार सिंह को लिखित प्रार्थना पत्र भी दिए, लेकिन किसी ने भी समस्या पर ध्यान नहीं दिया है, जिससे लोग परेशान हो रहे हैं।

देवीपुर में सड़क पर भरा पानी। ● अमृत विचार

देवीपुर में अतिक्रमण से सिकुड़ गया खड़ंजा। ● अमृत विचार

2200
आबादी है लंदनपुर ग्रंट ग्राम पंचायत की

1400
मतदाता हैं ग्राम पंचायत क्षेत्र में

ग्राम पंचायत में देवीपुर सहित पांच अन्य गांवों के विकास, इंटरलाकिंग, खड़ंजा, पक्की नाली का प्रस्ताव पास कराकर अधिकारियों को भेजा गया है। स्वीकृति मिलने एवं धन आवंटित होने पर प्राथमिकता के आधार पर देवीपुर में नालियां और इंटरलाकिंग का कार्य कराया जाएगा।
-शगुन जायसवाल, ग्राम प्रधान ग्राम पंचायत ग्रंट लंदनपुर।

देवीपुर के हरीराम का कहना है कि गांव में किसी भी सड़क पर इंटरलाकिंग न कराए जाने से कच्चे रास्तों पर पानी भरा रहने से हर मौसम में ग्रामीणों को आने-जाने में दिक्कतें होती हैं। स्कूली बच्चों को कंधे पर बैठाकर गांव के बाहर तक छोड़ना और छुट्टी के समय वापस घर लाना पड़ता है।

गंव के नवलकिशोर का कहना है कि ग्राम प्रधान की उदासीनता से सरकार की विकास योजनाएं देवीपुर गांव के बाहर ही निकल जाती हैं। गांव में अगर पक्की नाली बनवाकर इंटरलाकिंग करा दी गई होती तो लोगों को आने जाने में भी सहूलियत होती, साथ ही स्वच्छता के मामले में गांव अग्रणी रहता।

विजय कुमार बताते हैं कि उन्होंने ग्राम प्रधान से लेकर ग्राम पंचायत अधिकारी और खंड विकास अधिकारी तक प्रार्थनापत्र दिए हैं। उन्हें केवल आश्वासन ही मिले, किसी भी अधिकारी ने गांव की तरफ मुड़कर नहीं देखा, जिससे गांव के लोग कच्चे और दलदल भरे मार्गों पर निकलने को मजबूर हैं।

सतीश कुमार का कहना है कि लंदनपुर ग्राम पंचायत को आदर्श ग्राम पंचायत का दर्जा बहुत पहले ही दिया जा चुका है। यहां कुम्हूंपुर के पास शासन की योजनांतर्गत दो दर्जन लोगों को आवास बनाकर सभी ग्रामीण सुविधाएं दी गई हैं लेकिन गांव देपीपुर की ओर अधिकारी उदासीन हैं।

अमृत विचार एक सम्पूर्ण अखबार
लखनऊ, बरेली, मुरादाबाद, हल्द्वानी अयोध्या व कानपुर से प्रकाशित
बरेली संस्करण
स्मृतियाँ शेष
निधन | अंतिम यात्रा | पुण्यतिथि
पीपलपानी | स्मृतियां | उठावनी | पगड़ी
साइज व रेट
साइज --------5cmX8cm / 1000 with GST
साइज -------10cmX8cm / 1800 with GST
साइज -------15cmX8cm / 2500 with GST
अन्य साइज कलर 25 रुपए प्रति वर्ग सेमी.।
शोक संदेश प्रकाशित कराने हेतु सम्पर्क करें :-
0581-4000222
हेड ऑफिस :- 932, कटरा चांद खां भारत पेट्रोल पम्प के सामने, पीलीभीत बाईपास रोड बरेली 243006

सुगमकर्ता का तीन दिवसीय प्रशिक्षण शुरू

पसगवां, अमृत विचार: स्पेशल प्रोजेक्ट फार इक्विटी के अंतर्गत पावर एंजिल सशक्तिकरण एवं नेतृत्व क्षमता प्रदान करने के लिए सुगमकर्ता की ब्लाक स्तरीय तीन दिवसीय कार्यशाला बीआरसी पसगवां में शुक्रवार को प्रारंभ हुई।

कार्यशाला में पावर एंजिल की क्षमता संवर्धन के लिए सुगमकर्ताओं को विभिन्न मुद्दों पर प्रशिक्षण दिया जा रहा है। जिसमें आदर्श रूप स्टीरियोटाइप लिंग भेद जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे शामिल हैं। इसके अतिरिक्त आधाफुल कामिक सीरीज को पूर्वज्ञान से जोड़ते हुए प्रगति के पंख संदर्शिका को विद्यालयों में लागू करने के लिए सुगमकर्ताओं को प्रशिक्षित और इस संदर्शिका के लागू करने के लिए शिक्षक मार्गदर्शिका का भी प्रस्तुतीकरण किया जा रहा है। प्रशिक्षण विकास क्षेत्र के सभी उच्च प्राथमिक विद्यालयों एवं संविलियन विद्यालयों से एक-एक शिक्षक-शिक्षिका को सुगमकर्ता के रूप में दिया जा रहा है। कार्यशाला को शिक्षक सत्येंद्र बहादुर सिंह एवं शिक्षिका गरिमा सिंह कुशवाहा बतौर संदर्भदाता संचालित कर रहे हैं।

Rohilkhand
INFERTILITY & IVF CENTRE
Creating life.... completing families.
RISAA IVF
दिल्ली का जाना माना IVF सेन्टर अब बरेली शहर में

परामर्श शुल्क
₹200/- ₹100/-
प्रत्येक सोमवार
प्रातः 09:00 से 03 बजे तक
हेल्पलाइन नं०
6398018900
अपनी नन्हीं खुशियों को आज ही अपने घर लाये हमारे साथ !
उपलब्ध सुविधायें :-
● नि:सन्तानता सम्बन्धित सम्पुर्ण इलाज व जाँचें, ● टेस्ट ट्यूब बेबी (IVF) रियायती दरो पर,
● इन्फर्टीलिटी अल्ट्रासाउंड, ● ICSI, I.U.I., लेप्रोस्कॉपी हिस्ट्रोस्कोपी (दुरबीन द्वारा बच्चेदानी व अंडेदानी की जाँच)
● उच्चतम सफलता दर, ● विश्वस्तीय आधुनिकतम IVF लैब
स्थान :
IVF सैन्टर Ist Floor न्यू बिल्डिंग कमरा नं. 106
रोहिलखण्ड मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल
सुरेश शर्मा नगर चौराह, डेंटल कॉलेज रोड, बरेली फोन नं. 0581-2526012,11

आरओ- एआरओ की परीक्षा कल, 15850 अभ्यर्थी होंगे शामिल

लखीमपुर खीरी, अमृत विचार : रविवार को जिले में आरओ-एआरओ की परीक्षा होगी। उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग प्रयागराज ने इसके लिए जिले में 36 परीक्षा केंद्र बनाए हैं। इन पर 15850 अभ्यर्थी दो पालियों में परीक्षा देंगे। इनको आवागमन में किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसके लिए रोडवेज प्रशासन ने पूरी तैयारी कर ली है।

▸▸ दो पालियों में 36 केंद्रों पर होगी परीक्षा रोडवेज प्रशासन ने आवागमन को लेकर कसी कमर

समीक्षा अधिकारी एवं सहायक समीक्षा अधिकारी पद पर भर्ती के लिए रविवार को होने वाली परीक्षा को लेकर रोडवेज प्रशासन पूरी तैयारी का दावा कर रहा है। एआरएम का कहना है कि लखीमपुर डिपो की सभी 90 बसों का संचालन हो रहा है। परीक्षा को देखते हुए यात्रियों की संख्या के अनुसार बसें संचालित कराई जाएंगी। गोला डिपो के केंद्र प्रभारी कमलेश वर्मा ने बताया कि 20 बसों के मेले में जाने के बाद 93 बस संचलित हैं। यात्रियों और अभ्यर्थियों को आवागमन में किसी प्रकार की दिक्कत नहीं होने दी जाएगी।

परीक्षा का दिन- रविवार
- परीक्षा केंद्र- 36
- अभ्यर्थी- 15850
- प्रथम पाली- सुबह 9:30 से 11:30 बजे तक
- द्वितीय पाली- दोपहर 2:30 से 3:30 बजे तक

नया ट्रांसफार्मर टेस्ट में हुआ फेल

कर्यालय संवाददाता, लखीमपुर खीरी

रविवार तक आधे शहर की बिजली बहाल होने की उम्मीद

अमृत विचारः छाउछ पॉवर हाउस में गुरुवार को आया 10 एमवीए का ट्रांसफार्मर चार्जिंग के दौरान लोड डालने पर टेस्टिंग के दौरान फेल हो गया है, जिससे एक्सईएन ने ट्रांसफार्मर को वापस भेजने का निर्णय लेते हुए संबंधित कंपनी से दूसरा ट्रांसफार्मर मंगाया है।

जिसके शनिवार तक पहुंचने की उम्मीद है। इसके साथ ही पांच दिनों से बिजली कटौती से परेशान आधे शहर में रविवार तक बिजली बहाल होने की उम्मीद है।

छाउछ पॉवर हाउस का 10 एमवीए ट्रांसफार्मर रविवार की रात को फुंक गया था, जिससे पूरे शहर में ब्लैक आउट हो गया।

मोहल्ला राजगढ़, रामनगर, बुद्धविहार, छाउछ, शिवकालोनी, गोटैयाबाग, देवकली रोड, मोतीपुर, बलदेवनगर आदि मोहल्लों में बिजली आपूर्ति ठप है। बिजली आपूर्ति ठप होने से लोगों के सामने पानी का संकट हो गया है। लोगों की परेशानी को कम करने के लिए दूसरे बिजलीघरों से रोस्टर के मुताबिक एक-दो घंटे के लिए इन मोहल्लों में बिजली आपूर्ति की जा रही है, लेकिन उससे भी समस्या दूर नहीं हो रही है। गुरुवार को 10 एमवीए का नया ट्रांसफार्मर आने से लोगों को उम्मीद थी कि शुक्रवार से बिजली आपूर्ति सुचारू हो जाएगी, लेकिन वह ट्रांसफार्मर टेस्ट में ही फेल हो गया है। एक्सईएन शैलेंद्र कुमार ने संबंधित कंपनी को इसके खराब होने की सूचना देते हुए दूसरा ट्रांसफार्मर भेजने के लिए कहा है। उन्होंने बताया कि शनिवार को दूसरा ट्रांसफार्मर आ जाएगा, जिसके बाद रविवार की शाम तक बिजली आपूर्ति बहाल हो जाएगी।

मौनी अमावस्या पर पौराणिक शिव मंदिर में उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़

श्रद्धालुओं ने गोकर्ण तीर्थ में स्नान कर की पूजा

संवाददाता, गोला गोकर्णनाथ

शिव मंदिर में पूजा करते श्रद्धालु। ● अमृत विचार

अमृत विचारः मौनी अमावस्या पर नगर के गोकर्ण तीर्थ पर श्रद्धालुओं ने स्नान कर पौराणिक शिव मंदिर में भगवान भोलेनाथ का जलाभिषेक कर परिवार की सुख शांति की कामना की।

मौनी अमावस्या पर नगर के पौराणिक शिव मंदिर के कपाट भोर के प्रहर ही भक्तों के दर्शनार्थ खोल दिए गए। नगर और ग्रामीण क्षेत्रों से आए शिव भक्तों ने गोकर्ण तीर्थ में स्नान, पग प्रच्छालन कर भगवान भोलेनाथ की दुग्ध, गंगाजल, भांग, धतूरा, शमीपत्र, विल्वपत्र, चंदन, अक्षत आदि से पूजन कर मनौती मांगी। श्रद्धालुओं ने गोकर्ण तट पर भगवान सत्यनारायण की कथा सुन ब्राह्मणों, कन्याओं को दान कर पुण्य कमाया।

मौसम में गर्मी आ जाने पर अमावस्या के कारण दूर दराज के श्रद्धालुओं को आने से नगर में भीड़भाड़ बनी रही। सहालग का समय होने से लोगों ने शादी बरातों के सामान की जमकर खरीदारी भी की। नगर के मेला मैदान में लगे मेले की दुकानों पर भी खरीदारों की भीड़ जुटी रही। सुरक्षा की दृष्टि से शिव मंदिर परिसर पर पर्याप्त पुलिस बल तैनात रहा। खुटार रोड स्थित अहमदनगर के क्लेशहरण मंदिर पर भक्तों ने भगवान शिव का पूजन कर भगवान सत्यनारायण की कथा सुन दान पुण्य किया।

शारदा नदी में भी लगाई आस्था की डुबकी

पलिया कलां। मौनी अमावस्या पर अनेक श्रद्धालुओं ने कड़ाके की सर्दी के बावजूद सूर्योदय पूर्व शारदा नदी तट पर पहुंचकर आस्था की मौन डुबकी लगाई और पड़ोस में बने मंदिरों में पूजा-अर्चना कर दान- पुण्य किया। इसके अलावा लोगों ने नगर के प्रमुख पांडे बाबा मंदिर, ठाकुरद्वारा राम मंदिर, श्री कुल आश्रम के प्रसिद्ध देवी मंदिर, पुरानी बाजार स्थित हनुमान मठिया, पीपल चौराहे वाले देवी मंदिर आदि पहुंचकर मत्था टेका और दान पुण्य किया। अनेक लोगों ने मौनी अमावस्या को ध्यान में रखते हुए भगवान सत्यनारायण की कथा सुनी तो बहुतों ने खिचड़ी, आटा, तिल के लड्डू, गुड़, घी, फल, मिष्ठान, वस्त्र, रुपये आदि पंडितों तथा जरूरतमंदों को दान किया।

टेढ़ेनाथ मंदिर पर श्रद्धालुओं ने कतारबद्ध होकर की पूजा

बग्घून। गोमती तट पर स्थित बाबा टेढ़ेनाथ धाम पर हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने गोमती नदी के काकर घाट पर स्नान कर भगवान टेढ़ेनाथ मंदिर में विल्वपत्र, भांग, धतूरा, दुग्ध, शहद, दही, गंगाजल आदि से अभिषेक कर भगवान शिव का पूजन किया। मौनी अमावस्या पर टेढ़ेनाथ मंदिर पर सुबह से ही लोग ट्रैक्टर ट्राली, साइकिल, बाइक और कार से पहुंचने लगे थे। जिन्होंने भगवान भोलेनाथ की विधि विधान से पूजा कर मंदिर के बाहर लगी दुकानों पर सामान की खरीदारी की। मंदिर के पुजारी प्रेमचंद गिरि ने बताया कि मौनी अमावस्या होने के कारण श्रद्धालुओं ने भगवान टेढ़ेनाथ मंदिर पहुंचकर शिव का पूजन अर्चन कर दान पुण्य किया।

मोहम्मदी में सपा का कार्यकर्ता सम्मेलन आज

मोहम्मदी, अमृत विचारः लोकसभा चुनाव की रणनीति बनाने के लिए समाजवादी पार्टी का मोहम्मदी विधानसभा का कार्यकर्ता सम्मेलन शनिवार को बरवर रोड स्थित सिटी पैलेस में होगा। सम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि पूर्व मंत्री और सपा के प्रदेश महासचिव जयशंकर पांडेय व विशिष्ट अतिथि पूर्व सांसद दाउद अहमद, पूर्व वैज्ञानिक श्रीकृष्ण भार्गव आदि मौजूद रहेंगे। विधानसभा क्षेत्र अध्यक्ष सुरेश पाल सिंह यादव और नगर अध्यक्ष इकरार खां ने बताया कि सम्मेलन में बूथ प्रभारी, सेक्टर प्रभारी, जोन प्रभारी, निर्वाचित जनप्रतिनिधि मौजूद रहेंगे।

विधायक ने मुख्यमंत्री के सामने रखीं क्षेत्र के विकास की योजनाएं

मुख्यमंत्री से मुलाकात करते विधायक अमन गिरि। ● अमृत विचार

संवाददाता, गोला गोकर्णनाथ

अमृत विचारः विधानसभा के शीतकालीन बजट सत्र के दौरान जिले के विधायकों ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से भेंट कर अपने-अपने क्षेत्र के विकास के लिए चर्चा की और वरीयता के आधार पर विकास कार्य कराने की मांग रखी। विधायक अमन गिरि ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से विशेष मुलाकात कर अपने विधानसभा क्षेत्र में हो रहे विकास कार्यों पर चर्चा की। साथ ही क्षेत्र के विकास के लिए कई प्रस्ताव मुख्यमंत्री के सामने रखे। विधायक ने बताया कि मुख्यमंत्री ने समस्त कार्यों सड़क, बिजली, जल-जंगल संरक्षण के लिए परियोजनाओं के बेहतर क्रियान्वयन का आश्वासन के साथ आशीर्वाद भी दिया है।

थारू ग्रामों में पहुंची गुरु गोरखनाथ स्वास्थ्य यात्रा

पलियाकलां। नेशनल मेडिकल ऑर्गेनाइजेशन सेवा अवध प्रांत के तत्वावधान में आये लखनऊ, गोरखपुर और इलाहाबाद मेडिकल कॉलेज के चिकित्सकों ने पलिया सीएचसी स्टाफ के साथ एक दर्जन आदिवासी थारू ग्रामों में स्वास्थ्य कैंप लगाकर मरीजों का परीक्षण किया और दवाएं दीं। थारू ग्राम कजरिया, वनकटी, पिपरौला, बिरिया, देवराही, ध्यानपुर, चंदन चौकी, परशिया, बरबटा, धुसकिया, सुरमा एवं कमलापुरी में चिकित्सा शिविर लगाए गए। डॉक्टरों ने सीएचसी पलिया के अधीक्षक डॉ. भारत सिंह आदि के सहयोग से मरीजों का स्वास्थ्य परीक्षण किया।

पोर्टल की खामी से एडेड विद्यालयों के शिक्षकों फंसा वेतन

लखीमपुर खीरी। मानव संपदा पोर्टल के आधार पर जनवरी से सभी शिक्षकों को वेतन भेजने की शुरूआत हो गई है, जिससे राजकीय व परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों को वेतन मिल गया है। लेकिन एडेड विद्यालयों के शिक्षकां को वेतन नहीं मिल पाया है। शासन ने मानव संपदा पोर्टल के आधार पर ही सभी राजकीय, परिषदीय व एडेड शिक्षकों को वेतन भुगतान अनिवार्य कर दिया है। जनवरी का वेतन फरवरी में भेजा गया है, लेकिन एडेड विद्यालयों के शिक्षकों समेत अन्य कर्मचारियों को वेतन नहीं मिल पाया है। जनपद में कुल 62 एडेड विद्यालय हैं, जिनमें बेसिक के 17 और माध्यमिक के 45 विद्यालय हैं। इनमें शिक्षक व शिक्षणेत्तर कर्मचारी मिलाकर करीब 800 कर्मचारी प्रभावित हुए हैं। वित्त एवं लेखाधिकारी हरिकेश बहादुर सिंह ने बताया कि मानव संपदा पोर्टल में तकनीकी समस्या आ रही है, जिससे एडेड विद्यालयों के शिक्षक व शिक्षणेत्तर कर्मचारियों को वेतन का भुगतान नहीं हो पा रहा है। इस संबंध में शासन स्तर से कार्रवाई की जा रही है।

यूपी बोर्ड परीक्षाः केंद्र व्यवस्थापकों को बांटी परीक्षा सामग्री

लखीमपुर खीरी। यूपी बोर्ड की हाईस्कूल व इंटरमीडिएट परीक्षा के लिए परीक्षा सामग्री व प्रवेश पत्र आदि सामग्री का वितरण शुक्रवार को किया गया। डीआईओएस कार्यालय में परीक्षा सामग्री लेने के लिए सभी तहसील क्षेत्रों से केंद्र व्यवस्थापक पहुंचे, जिससे लगभग 80 प्रतिशत केंद्रों को परीक्षा सामग्री का वितरण कर दिया गया है। डीआईओएस डॉ. महेंद्र प्रताप सिंह ने बताया कि मोहम्मदी, मितौली, गोला, धौरहरा, लखीमपुर, पलिया और निघासन तहसील क्षेत्र के परीक्षा केंद्रों के केंद्र व्यवस्थापकों को परीक्षा सामग्री वितरित की गई है। करीब 20 प्रतिशत केंद्रों को परीक्षा सामग्री वितरित किया जाना शेष है, जिन्हें शनिवार तक वितरित कर दिया जाएगा। उन्होंने कहा कि परीक्षार्थियों को सूचना देकर उन्हें 14 फरवरी तक प्रवेश पत्र जरूर वितरित कर दें।

लाइलाज नहीं है कुष्ठ रोगियों से न करें भेदभाव

गोला गोकर्णनाथ। स्पर्श कुष्ठ रोग जागरुकता अभियान के तहत ग्राम पंचायत लाल्हापुर में कार्यशाला का आयोजन कर ग्रामीणों को कुष्ठ रोग के प्रति सचेत किया गया। लाल्हापुर प्रधान जर्नादन गिरि की अध्यक्षता में हुई कार्यशाला में उन्होंने बताया कि जागरुकता के अभाव में लोग कुष्ठ को दैवीय प्रकोप मान बैठते हैं, लेकिन लगातार इलाज के बाद इस रोग पर पूर्णतया रोक लगाई जा सकती है। कुष्ठ रोगी भी अपने घर में रहकर सामान्य जीवन जी सकता है। 6 से 12 माह तक लगातार दवाई लेने के बाद यह रोग ठीक हो सकता है। सरकारी अस्पतालों में इस रोग का नि:शुल्क इलाज किया जाता है। कार्यशाला में बताया कि कुष्ठ रोगियों के साथ किसी भी प्रकार का कोई भेदभाव न करें। बल्कि समाज को कुष्ठ जैसे रोग से मुक्त कराने का संकल्प लें। कार्यशाला में आशा कार्यकत्री शीला देवी, मंजूलता, सिद्धेश्वरी, ऊषा देवी, आशा देवी, ज्योति चौधरी, मंजू देवी, सोनिया राठौर, चित्रा राठौर, गीता देवी, सीमा देवी, गुलाबो देवी, उमा देवी, अंजू देवी, नंदकिशोर, परशुराम, जयप्रकाश, लक्ष्मी राठौर, अरविन्द कुमार आदि मौजूद रहे।

अमृत विचार क्लासीफाइड

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरी संस्था गौशाला का इजाजतनामा की मूल प्रति एवं अन्य कागजात दिनांक 27.01.2024 को अपने निवास से तहसील गोला जाते समय रास्ते में कहीं गिर गये है। वापस देने वाले को उचित इनाम दिया जायेगा। **रामसेवक शुक्ला प्रबंधक श्री धर्मादा समिति गौशाला पुत्र स्व. रिक्खी लाल शुक्ला निवासी गौशाला कुम्हारन टोला,गोला गोकर्णनाथ-खीरी। मो. 9415460769**

सूचना

हमने अपने पुत्र सूरज सिंह पुत्र अशोक कुमार को उसके दुर्व्यवहार व चाल चलन ठीक न होने के कारण उससे सम्बन्ध विच्छेद कर अपनी चल अचल सम्पत्ति से बेदखल कर दिया है। वह अपने कृत्यों व लेनदेन का स्वयं जिम्मेदार होगा। **अशोक कुमार पुत्र छोटेलाल मोहल्ला कुम्हारन टोला गोला गोकर्णनाथ, जिला लखीमपुर-खीरी।**

NOTICE

This is to be notify that both names RAJAKISHORE SAHOO & RAJAKISHOR SAHOO belongs to me. I have been known as both these names. Army No. JC389111H Rank SUB Name RAJAKISHORE SAHOO S/O Maheshwar Sahoo R/o Abhi manyubalia Tehsil Binjharpir Distt. Jajpur (Orrisa)

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा पासपोर्ट संख्या X7713201 जिसकी वैधता 12.06.2033 हैं, उसमे मेरा नाम भूलवश मोनिश दर्ज हो गया है जबकि मेरा वास्तविक नाम मो.मोनिश (MOHD MONISH) है भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना व पहचान जाये। **मो. मोनिश पुत्र श्री हसमुद्दीन निवासी ग्राम अंडरायन थाना जहानाबाद तहसील अमरिया जिला पीलीभीत।**

वैधानिक सूचना :- समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन जैसे टावर सम्बन्धी, नौकरी सम्बन्धी, ऋण सम्बन्धी या अन्य किसी भी प्रकार के विज्ञापन में पाठकों को सावधान किया जाता है। विज्ञापनदाता द्वारा किये गये दावे या उल्लेख, समर्थन की पुष्टि समाचार पत्र नहीं करता है।

अम्बा हैल्थ क्लीनिक
ISO:9001:2008 एवं Trademark Certified Clinic
डा.आर.एस.सिंह
B.A.M.S.F.R.H.S. (आयुर्वेदाचार्य)
स्वास्थ्य एवं गुप्त रोग विशेषज्ञ
● रजि. भारतीय चिकित्सा परिषद, उत्तर प्रदेश द्वारा मान्यता प्राप्त
● 27 सालों से स्वास्थ्य एवं गुप्त रोगों का चिकित्सा अनुभव
पतले दुबले, गाल पिचके व कमजोर स्त्री/पुरूष तंदरूस्ती प्राप्त करें।
मोटे होने का रामवाण इलाज
नवयुवक-युवतियां 3 से 4 इंच तक लम्बाई बढ़ायें
विशेष चिकित्सा:- ●भूख न लगना ● कब्ज ●अपच ●गैस ● खाने के बाद शौचालय जाना ● शारीरिक अंगों का विकास रूकना ● पुलिस फोर्स एवं फिल्मों में आदि में भर्ती में नाप-तोल में कमी होना ● 3 से 4 इंच कद लम्बा करें। ● बच्चों का बिस्तर में पेशाब करना मोटे व थुल-थुले व्यक्ति वजन कम करें। ● कील, मुंहासे, झाइयां, सफेद दाग दूर करें सावलांपन हटायें और सुन्दर बनें। ● बालो का झड़ना व टूटना एवं सफेद होना व गंजापन दूर करें। ● खूनी व वादी बवासीर का रामबाण इलाज।
शराबी को बिना लाये, बिना बताये शराब व अन्य नशा छुड़ायें।
नारी तत्व को सुडौल व आकर्षक बनायें एवं वैवाहिक जीवन को सफल बनायें
सैक्स समस्याऐं
छिपाएं नहीं बताएं या मिलें
स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, मर्दाना कमजोरी
● शुरू से लाभ, 40 से 80 दिनों में इलाज सम्भव।
● हस्तमैथुन व धात जाने से नसों में खराबी।
● इन्द्री का ढ़ीलापन, पतलापन, छोटापन दूर करें।
● वीर्य में शुक्राणु निल होना या कम होना।
● ल्यूकोरिया, बांझपन, बच्चेदानी में रसौली होना।
● योनि का ढ़ीलापन होना व सैक्स इच्छा कम होना।
● मासिक धर्म अनियमित होना या उम्र पहले बन्द होना।
Sexually Transmitted Bacterial Disease
सुजाक, गिनोरिया, एड्स, यौन अंगो पर खुजली या छाले पड़ने पर तुरन्त डाक्टर से सम्पर्क करें।
गलत फिल्में देखने व फोन पर बातें करने से या पेशाब में चिपचिपा पदार्थ निकलने पर तुरन्त सम्पर्क करें।
10 से 21 वर्ष शादी से पहले जिन बच्चों की इन्द्री का छोटापन, पतलापन, मोटापन का रामबाण इलाज के लिए उन माता-पिता से निवेदन है कि अवश्य मिलें। कहीं ऐसा न हो कि शादी के बाद पछताना पड़े। (25 वर्षों का अनुभव)
विज्ञापन साथ लाने पर मेडिसिन पर 10% की विशेष छूट
मिलें सुबह 11 से सायं 5 बजे तक
दिनांक :- 11 फरवरी 2024, रविवार
25 फरवरी 2024, रविवार
निकट बरेली कॉलेज, होटल मोती महल
काली बाड़ी चौराहा, बरेली
9837069463
7599211076

रोहिलखण्ड मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल
पीलीभीत बाईपास रोड, बरेली। हैल्प लाईन नं. : 9520876126
द्वारा
निःशुल्क नेत्र व दन्त चिकित्सा शिविर
शिविर में उपलब्ध सुविधाएं
● आँखों के कैम्प में आये मरीजों को दवाईयाँ मुफ्त।
● मोतियाबिन्द का ऑपरेशन व दवाईयाँ एवं लैंस मुफ्त।
● मोतियाबिन्द के भर्ती मरीज को खाना मुफ्त एवं बस द्वारा लेकर जाना मुफ्त।
● यदि मोतियाबिन्द निकलता है तब ऑपरेशन रोहिलखंड हॉस्पिटल में ले जाकर मुफ्त में किया जायेगा घर पर बताकर आयें।
● मोतियाबिन्द के मरीज का इलाज मुफ्त।
● दन्त रोग परीक्षण व इलाज मुफ्त।
नोट : मुफ्त में ऑपरेशन कराने के लिऐ घर से आधार कार्ड , फोन नं. व कम्बल भी अवश्य साथ लायें तभी ऑपरेशन किया जायेगा।
नोट : निशक्त जन सेवा संस्थान द्वारा दिव्यांग जनों को उनकी जरूरत के मुताबिक ट्राई साईकिल, वितरण की जायेंगी एवं नये रजिस्ट्रेशन भी किये जायेंगे।
दिनांक : 12 फरवरी 2024, सोमवार
समय : प्रातः 09:30 से 1:00 बजे तक
शिविर स्थान
अंकुर राईस मिल, निकट असम चौराहा, पूरनपुर रोड, पीलीभीत
सौजन्य से -
● सम्यता वर्मा, ब्लॉक प्रमुख, मरौरी ● स्वामी प्रवक्ता नन्द, विधायक, 128-बरखेड़ा विधान सभा, पीलीभीत
● डॉ. सुधीर कुमार गुप्ता, एम.एल.सी. पुवायाँ
निःशक्त जन सेवा संस्थान पीलीभीत
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें। शकीब उद्दीन मो.नं. 8534088093

रोहिलखण्ड मेडिकल कालेज एवं हास्पिटल
सुरेश शर्मा नगर, पीलीभीत बाईपास रोड, बरेली
अब पहले से और उच्चस्तरीय सुविधायें
आई.सी.यू. व इमरजेंसी भर्ती की सुविधा 24 घंटे उपलब्ध अनुभवी डाक्टरों की देखरेख में।
मुफ्त स्वास्थ्य सेवायें * | मुफ्त भर्ती एवं पलंग * | मुफ्त फेफड़ों के टी.वी. की दवा * | मुफ्त टीकाकरण *
मुफ्त सामान्य ऑपरेशन * | मुफ्त डिलीवरी व सिजेरियन की सुविधा *
विशेष कैम्प 1 से 15 फरवरी 2024 तक
हड्डी रोग विभाग | बाल रोग विभाग | स्त्री रोग विभाग | छाती एवं क्षय रोग विभाग | शल्य रोग (सर्जरी) विभाग | मेडिसिन विभाग
रोहिलखण्ड हॉस्पिटल में भर्ती मरीजों के लिए उपलब्ध सुविधायें
ओ.पी.डी. पर्चा 20/- रु. मात्र
भर्ती मरीजों की मुफ्त सामान्य जांचे *
जल्दी करें उपरोक्त सभी सुविधायें सीमित समय तक
हड्डी रोग विभाग: एक्सीडेन्ट के गम्भीर मरीजों का सबसे अच्छा एवं सस्ता इलाज अत्याधुनिक ट्रामा सेन्टर में गर्दन के समस्त ऑपरेशन। गर्दन के पीछे, कमर के समस्त दर्द एवं रोगों का इलाज।
स्त्री रोग विभाग: स्त्री रोग विभाग, जच्चा बच्चा का पूर्ण इलाज, बच्चेदानी की रसौली एवं कैंसर का इलाज, बांझपन का इलाज सभी प्रकार के स्त्री रोगों का सम्पूर्ण इलाज।
शल्य रोग (सर्जरी) विभाग: अनुभवी शल्य चिकित्सकों द्वारा दूरबीन से पित्त की थैली के ऑपरेशन हार्निया गुर्दे की पथरी पित्त की पथरी तथा आंतों व गुर्दे की पथरी तथा आंतों व गुर्दे के सफल ऑपरेशन बेहद घटे दरों पर किया जाता है।
बाल रोग विभाग: बच्चों की अत्याधुनिक नर्सरी (NICU) एवं (PICU) की सुविधा ट्रान्सफ्यूजन सरफेक्टेंट थेरेपी, सी-पैप (CPAP) की सुविधा उपलब्ध है। बच्चों में खून व खांसी, लकवा, डायरिया, निमोनिया आदि रोगों का परामर्श व इलाज की सुविधा।
छाती एवं क्षय रोग विभाग: छाती व सांस फूलना, खांसी आना, बुखार बना रहना, सीने में दर्द, फेफड़ों में पानी आना आदि रोगों का इलाज तथा पी.एफ.टी. की सुविधा एवं इलाज मुफ्त।
मेडिसिन विभाग: अनुभवी चिकित्सकों द्वारा पेट, जिगर रोग एवं पीलिया, तेजाब, अलसर, ब्लड प्रेशर, फेफड़ा रोग, लीवर, शुगर एवं गुर्दे की बीमारियों के इलाज व ऑपरेशन मुफ्त।
फाईलेरिया अभियान के अन्तर्गत दिनांक 10 से 28 फरवरी 2024 तक रोहिलखंड हॉस्पिटल के कमरा नं. 1167 में फाईलेरिया की दवाई मुफ्त में मिलेगी।
रोहिलखण्ड हॉस्पिटल में इम्पैनल्ड संस्थायें
इम्पैनल्मेंट संस्थाओं के नाम (कैशलेस-इलाज)
1. आयुष्मान भारत योजना
2. राष्ट्रीय अन्धता नियंत्रण कार्यक्रम (NBCP)
3. हौसला साझेदारी (परिवार नियोजन)
4. केंद्रीय सरकार स्वास्थ्य योजना (CGHS)
5. सी.ए.आर.आई. (CARI)
6. एक्स-सर्विसमैन कंट्रब्यूटरी हेल्थ स्कीम (ECHS)
7. आई.वी.आर.आई. (IVRI)
8. कर्मचारी राज्य बीमा कारपोरेशन (ESIC)
इम्पैनल्मेंट टी.पी.ए. कंपनी (कैशलेस-इलाज)
1. एचडीएफसी एर्गो
2. एरिकसन इंश्योरेंस प्राइवेट लिमिटेड
3. सेफवे इंश्योरेंस टी.पी.ए. प्राइवेट लिमिटेड
4. रिलायंस हेल्थ इंश्योरेंस
5. आदित्य बिरला ग्रुप जनरल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
6. जेनिस इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड
केवल सामान व दवाई का खर्च अतिरिक्त*
हैल्पलाइन नं. 9520876126, 9045372695, 8171925965
एन.ए.बी.एच.*'राष्ट्रीय स्तर' द्वारा प्रमाणित संस्था *एंट्री लेवल

कार्यालय जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, शाहजहाँपुर

पत्रांक : समग्र शिक्षा/एम.आई.एस./8365-72/2023-24 दिनांक : 09.02.24

प्रेस विज्ञप्ति

जनपद शाहजहाँपुर में संचालित कक्षा 01 से कक्षा 12 तक के समस्त सरकारी/सहायता प्राप्त/मान्यता प्राप्त विद्यालयों (सी.बी.एस.ई.) आई.सी.एस.सी., बेसिक शिक्षा, माध्यमिक बोर्ड, अल्पसंख्यक विभाग से संचालित मदरसा, केन्द्रीय विद्यालय एवं अन्य के द्वारा यू-डायस+2023-24 ऑनलाइन पोर्टल के माध्यम से विद्यालय प्रोफाइल, शिक्षक प्रोफाइल एवं छात्र प्रोफाइल भरना अनिवार्य है, परन्तु कतिपय विद्यालयों (कक्षा 01 से 12) द्वारा अभी तक अपने विद्यालय का यू-डायस+2023-24 में विद्यालय प्रोफाइल, शिक्षक प्रोफाइल एवं छात्र प्रोफाइल ऑनलाइन अपडेट नहीं किया गया है।

ऐसे प्रबन्धक/प्रधानाचार्य अपने विद्यालय का डाटा इन्ट्री एवं सत्यापन वेगसाइट https://udiseplus.gov.in पर यूजर नेम एवं पासवर्ड डालकर लॉगइन कर दिनांक 14.02.2024 तक प्रत्येक दशा में पूर्ण करायें। यदि विद्यालय द्वारा यू-डायस में ऑनलाइन डाटा इन्ट्री/अपडेशन कार्य पूर्ण नहीं किया जाता है, तो यह मानते हुए कि उक्त विद्यालय संचालित नहीं है अथवा संचालन हेतु इच्छुक नहीं है, सम्बन्धित विद्यालय के यू-डायस कोड एवं मान्यता प्रत्याहरण की कार्यवाही जा सकती है। यू-डायस+ में उपरोक्त डाटा अपलोड न करने के उपरान्त भी सम्बन्धित विद्यालय के संचालित पाये जाने पर विद्यालय के विरूद्ध शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के अन्तर्गत आर्थिक दण्ड लगाते हुये विधिक कार्यवाही की जायेगी, जिसके लिए सम्बन्धित विद्यालय के प्रधानाध्यापक/प्रधानाचार्य/प्रबन्धक व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी होंगे।

(रणवीर सिंह)
जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, शाहजहाँपुर

कार्यालय ग्राम पंचायत बबक्करपुर वि.खं. ददरौल, शाहजहाँपुर

निविदा आमंत्रण सूचना

सभी पंजीकृत फर्मो एवं आपूर्तिकर्ताओं को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत बबक्करपुर की स्वीकृत कार्य योजना वित्तीय वर्ष 2023-24 के अनुसार मनरेगा योजना के अन्तर्गत प्राप्त धनराशि से निर्माण कार्य कराया जाना है।

क्र.सं.	कार्य का नाम	माप	अनुमानित लागत
1.	घासीराम के मकान से पातीराम के मकान तक इंटरलॉकिंग सड़क व नाली निर्माण	85 मीटर	3,76,556

उक्त वर्णित कार्य के लिये सामग्री क्रय हेतु जिसमें इंटरलॉकिंग ईट, ईट (प्रथम) रोड़ा, सीमेंट, मौरंग, बजरी आदि सामग्री वस्तुओं की आपूर्ति के लिये सीलबंद निविदा ग्राम पंचायत के कार्यालय पर दिनांक 12.02.24 तक अपरान्ह 12 बजे तक आमंत्रित की जा रही है। जिसे दिनांक 13.02.24 को अपरान्ह 12 बजे ग्राम पंचायत के कार्यालय पर खोली जायेगी। बिना किसी अग्रिम सूचना के टेंडर को निरस्त करने का पूर्ण अधिकार ग्राम पंचायत को होगा।

श्रीमती नीलम वर्मा — ग्राम प्रधान
धर्मेन्द्र मिश्रा — सचिव

कार्यालय ग्राम पंचायत काँवर खास, विकास खंड शेरगढ़, जिला बरेली

निविदा सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत काँवर खास, विकास खंड-शेरगढ़, बरेली में सी.सी. रोड व नाली निर्माण कार्य मनरेगा योजना के अन्तर्गत कराया जाना है। उक्त कार्य हेतु ईंट एवं रोड़ी, सीमेंट, रेता, बजरफुट, सरिया, आदि सामग्री की सप्लाई हेतु अल्पकालीन निविदाएं आमन्त्रित की जाती हैं। इच्छुक फर्मों से निविदाएं बन्द लिफाफे में दिनाँक 10 फरवरी 2024 से 12 फरवरी 2024 अपरान्ह 3 बजे तक ग्राम पंचायत कार्यालय में प्राप्त की जायेंगी और उसी दिन सायं 4 बजे खोली जाएंगी। ग्राम पंचायत की समस्त शर्ते लागू रहेंगी।

क्र.सं.	कार्य का नाम	माप	अनु० लागत
1.	ग्राम पंचायत काँवर खास में अन्नपूर्णा भवन निर्माण कार्य	-	7,75,000/-
2.	बाबू राम के घर से चौकीदार के घर तक सी.सी. व नाली निर्माण कार्य	90x4 मी.	3,99,000/-
3.	कुँए से छोटे लाल जाटव के घर तक सी.सी. व नाली निर्माण कार्य	95x4 मी.	3,70,000/-
4.	छोटे लाल जाटव के घर से तालाब तक नाला निर्माण कार्य	172 मी.	7,50,000/-

प्रधान-मान सिंह — सचिव-राहुल राना

कार्यालय ग्राम पंचायत गठौना वि.खं. उझानी, बदायूँ

पत्रांक : ग्रा.पं.सं./मनरेगा निर्माण कार्य/2023-24 दिनांक : 07.01.2024

अल्पकालीन निविदा

विकास खण्ड उझानी की ग्राम पंचायत गठौना मनरेगा/ग्राम निधि योजना अन्तर्गत निम्नलिखित निर्माण कार्य हेतु ईट, रोड़ा, सीमेन्ट, रोड़ी, बजरी, रेता, बजरफुट, स्टील, लोहा एवं सरिया आदि की आपूर्ति की इच्छुक समस्त अधिकृत फर्मो पंजीकृत विक्रेताओं को एतदद्वारा सूचित किया जाता है कि दिनांक 15.02.2024 समय 02:00 बजे तक निविदा सम्बन्धित शर्तो तथा सामग्री की मात्रा की जानकारी ग्राम पंचायत कार्यालय में ग्राम पंचायत सचिव से जानकारी कर नियत शुल्क 500/- रू. जमा उपरान्त निविदा फार्म प्राप्त कर अपने सीलबंद धरोहर टेक्निकल विट व निविदा जमा करें। जोकि उसी दिन सायं 3:00 बजे निविदादाता अथवा उनके प्रतिनिधि के समक्ष ग्राम पंचायत कार्यालय पर नियत कमेटी द्वारा खोले जायेंगे। एवं आपूर्ति की जाने वाली सामग्री की मात्रा हेतु Abstract of Cost किसी भी कार्य दिवस में सम्बन्धित ग्राम पंचायत के कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है। निविदा फार्म ग्राम पंचायत कार्यालय से कार्य दिवस में निर्धारित अवधि में निर्धारित शुल्क 500/- प्रति फार्म प्राप्त कर सकते हैं। कार्यो का विवरण निम्नवित है :-

क्र.सं.	ग्राम पंचायत का नाम	कार्य का विवरण स्थल सहित	कार्य की माप/सं.	कार्य की अनु. धनराशि (लाख)
1.	गठौना	ग्राम गठौना में इसाक के घर के पास पार्क निर्माण कार्य	1	300706

निविदा अस्वीकृत करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरी के पास सुरक्षित रहेगा।

ग्राम प्रधान/पंचायत सचिव
ग्राम पंचायत गठौना, बदायूँ।

कार्यालय जिला पंचायत, शाहजहाँपुर

पत्रांक : सी-551/जि.पं.सम्पत्ति/2023-24 दिनांक : 31.1.24

नीलाम सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि जिला पंचायत शाहजहाँपुर के प्रबन्धाधीन विकास खण्ड मिर्जापुर भरतपुर बाग में साप्ताहिक पशु बाजार/बाजार के ठेका वर्ष 2024-25 का नीलाम दिनांक 16.02.2024 को समय 11:00 बजे कार्यालय जिला पंचायत शाहजहाँपुर में किया जायेगा। बोलीदाता को बोली बोलने से पूर्व जमानत के रूप में अंकन 10000/- रूपये जमा करना अनिवार्य होगा। इसके साथ ही जिला पंचायत के स्वामित्वाधीन बादशाहनगर कहेलिया मार्ग, जलालाबाद खण्डहर मार्ग, पुवायां निगोही मार्ग, कटरा खुदागंज मार्ग, बण्डा पूरनपुर मार्ग, कांट मदनापुर मार्ग की आम फसल बहार का भी नीलाम उक्त दिनांक को ही किया जायेगा। फसल बहार लेने वाले व्यक्ति को अंकन 2000/- रूपये जमानत जमा करना अनिवार्य होगा। सर्वोच्च बोलीदाता को बोली की समस्त धनराशि तुरन्त जमा करनी होगी। नीलामी के समय जो भी नीलाम समिति द्वारा व्यवस्था दी जायेगी वह सभी को मान्य होगी। सर्वोच्च बोलीदाता को अपने व्यय पर अनुबंध करना होगा तथा जिला पंचायत द्वारा निर्धारित दरों पर उगाही का कार्य करना होगा। नीलाम स्वीकार/अस्वीकार करने का अधिकार सक्षम अधिकारी को होगा। यदि उपरोक्त नीलाम तिथि को किसी कारणवश नीलाम नहीं हो पाता है तो नीलाम की कार्यवाही प्रत्येक बुधवार को निर्धारित समय व स्थान पर की जाएगी। अन्य जानकारी कार्य दिवस में प्राप्त की जा सकती है।

अपर मुख्य अधिकारी
जिला पंचायत, शाहजहाँपुर

जश्ने मेराजुन्नबी का किया गया आयोजन

मितौली। शब-ए-मेराज के मौके पर कस्बे की कादरी जामा मस्जिद में जश्ने मेराजुन्नबी का आयोजन किया गया। इस मौके पर कादरी जामा मस्जिद मोहल्ला इस्लाम नगर में जलसा हुआ। यहां शाहजहांपुर से आये मौलाना अनीस खां, मौलाना जियाउद्दीन ईस्माइली सीतापुरी, शायरे इस्लाम किश्वर दानवई शाहजहांपुरी आदि ने तकरीर की।

कार्यालय ग्राम पंचायत धर्मपुरा, विकास खंड शेरगढ़, जिला बरेली

निविदा सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत धर्मपुरा, विकास खंड-शेरगढ़, बरेली में सी.सी. रोड व नाली निर्माण कार्य मनरेगा योजना के अन्तर्गत कराया जाना है। उक्त कार्य हेतु ईंट एवं रोड़ी, सीमेंट, रेता, बजरफुट, सरिया, आदि सामग्री की सप्लाई हेतु अल्पकालीन निविदाएं आमन्त्रित की जाती हैं। इच्छुक फर्मों से निविदाएं बन्द लिफाफे में दिनाँक 10 फरवरी 2024 से 12 फरवरी 2024 अपरान्ह 2 बजे तक ग्राम पंचायत कार्यालय में प्राप्त की जायेंगी और उसी दिन अपरान्ह 3 बजे खोली जाएंगी। ग्राम पंचायत की समस्त शर्ते लागू रहेंगी।

क्र.सं.	कार्य का नाम	माप	अनु० लागत
1.	छुटटू खां की दुकान से जाबिर के मकान तक सी.सी. रोड एवं नाली निर्माण कार्य	126x3 मी.	4,25,000/-

प्रधान-शरीफ खां — सचिव-नन्हें खां

कार्यालय ग्राम पंचायत बरीपुरा, विकास खंड शेरगढ़, जिला बरेली

निविदा सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत बरीपुरा, विकास खंड-शेरगढ़, बरेली में सी.सी. रोड व नाली निर्माण कार्य मनरेगा योजना के अन्तर्गत कराया जाना है। उक्त कार्य हेतु ईंट एवं रोड़ी, सीमेंट, रेता, बजरफुट, सरिया, आदि सामग्री की सप्लाई हेतु अल्पकालीन निविदाएं आमन्त्रित की जाती हैं। इच्छुक फर्मों से निविदाएं बन्द लिफाफे में दिनाँक 10 फरवरी 2024 से 12 फरवरी 2024 अपरान्ह 2 बजे तक ग्राम पंचायत कार्यालय में प्राप्त की जायेंगी और उसी दिन अपरान्ह 3 बजे खोली जाएंगी। ग्राम पंचायत की समस्त शर्ते लागू रहेंगी।

क्र.सं.	कार्य का नाम	माप	अनु० लागत
1.	ग्राम पंचायत वरीपुरा में मन्दिर से शेर सिंह के घर तक सी.सी. व नाली निर्माण कार्य	210x3 मी.	8.9246 लाख
2.	राम बहादुर के घर से नहर की पुलिया तक सी.सी. व नाली निर्माण कार्य	160x3 मी.	7 लाख

प्रधान-सुषमा देवी — सचिव-राहुल राना

कार्यालय अधिशासी अभियन्ता प्रान्तीय खण्ड, लो०नि०वि०, बरेली

पत्रांक : 484/ई-टेण्डर/23-24 दिनांक 31.01.2024

अल्पकालीन ऑन-लाइन निविदा आमंत्रण सूचना

1- महामहिम राज्यपाल, उ0प्र0 की ओर से अधिशासी अभियन्ता, प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0, बरेली के अंतर्गत निम्न तालिका में अंकित विवरण के अनुसार ऑन लाइन ई-निविदा दिनांक 12.02.2024 से दिनांक 20.02.2024 की मध्यान्ह 12:00 बजे तक आमंत्रित कर दिनांक 20.02.2024 को अपरान्ह 12:30 बजे खोला जाना प्रस्तावित किया गया है:-

क्रम सं0	कार्य का नाम	खण्ड का नाम	निविदा की अनुमानित लागत (लाख रू0)	निविदा की धरोहर धनराशि (लाख रू0)	टेण्डर फीस व स्टेशनरी चार्ज+ जी0एस0टी0 (रू0)	कार्य पूर्ण करने की अवधि	फर्म/ ठेकेदारों की आवश्यक पंजीकरण श्रेणी (मार्ग कार्य)
1	2	3	4	5	6	7	8
	वित्तीय वर्ष 2023-24 में विशेष मरम्मत के कार्य						
1	बहेड़ी रूद्रपुर मार्ग के किमी0 10 से इटौआ खुशहाल मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	7.80	0.78	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
2	मण्डनपुर गौटिया गुरवारा मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	8.60	0.86	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
3	मुड़िया नवीबक्श से गोठा सम्पर्क मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	7.80	0.78	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
4	भिटौरा-बहेड़ी आदिलपुर मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	6.20	0.62	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
5	रिछा जहानाबाद से मंगतपुर मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	17.7 0	1.77	944.00	तीन माह	ए, बी, सी, डी
6	भूड़ा फरीदपुर से भिलैया मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	7.40	0.74	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
7	चक नरकुंडा से नरकुंडा सम्पर्क मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	15.00	1.50	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
8	लवेदी सम्पर्क मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	5.60	0.56	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
9	मुड़िया नवीबक्श मार्ग से बकैनिया खजुरिया मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	16.20	1.62	944.00	तीन माह	ए, बी, सी, डी
10	भिटौरा-बहेड़ी से नगरिया कला मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	22.10	2.21	944.00	तीन माह	ए, बी, सी, डी
11	रा0मा0 24 से मीरापुर गौतारा होते हुए पिथुपुरा मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	13.10	1.31	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
12	एन0एच0-24 से पदारथपुर भिण्डौरिया मार्ग	प्रान्तीय खण्ड , लो0नि0वि0 बरेली	17.50	1.75	944.00	तीन माह	ए, बी, सी, डी
13	धारूपुर से परतासपुर मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	13.10	1.31	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
14	बरेली बीसलपुर मार्ग किमी 5 से सिमरा अजूबा बेगम	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	14.00	1.40	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
15	बरेली बीसलपुर से तैय्यतपुर मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	8.80	0.88	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
16	बरेली बदायूं मुख्य मार्ग कि0मी0 57 में स्थित ट्रान्सफार्मर के सामने सर्वोदय नगर मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	13 .40	1.34	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
17	कैनाल मार्ग से धारूपुर मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	8.80	0.88	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
18	कैनाल मार्ग से सैदपुर होते हुए लश्करीगंज मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	8.70	0.87	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
19	सारीपुर सम्पर्क मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	8.80	0.88	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
20	टहाताजपुर मार्ग से यामनगर गौटिया मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	14.10	1.41	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
21	घंघोरा घंघोरी से मझौआ गंगशपुर मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	6.00	0.60	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
22	घंघोरा घंघोरी से ठिरिया ठाकुरान मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	7.60	0.76	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
23	बरेली बागेश्वर मार्ग से इटौआ कैदारनाथ मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	30.20	3.02	944.00	तीन माह	ए, बी, सी, डी
24	बरेली नैनीताल मार्ग से रायपुर शमाद खॉ के मकान तक	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	12.10	1.21	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
25	सीबीगंज जोगीठेर मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	27.20	2.72	944.00	तीन माह	ए, बी, सी, डी
26	देवरनिया भदरक मार्ग से भीकमपुर सम्पर्क मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	11.20	1.12	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
27	चकदाह से अमौर मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	14.50	1.45	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
28	अकीलाबाद से निर्भुआ सम्पर्क मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	7.40	0.74	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
29	सागलपुर कब्रिस्थान से फरीदपुर तक मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	20.70	2.07	944.00	तीन माह	ए, बी, सी, डी
30	रूकमपुर पुलिया से पीलीभीत सीमा तक मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	4.10	0.41	767.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
31	कुंवरपुर से सावर खेड़ा मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	8.20	0.82	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
32	मिलक अलीनगर से रत्ना चुन्नीलाल मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	14.00	1.40	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
33	हाफिजगंज सेंथल जादोपुर से सिथोलिया खाम सम्पर्क मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	12.30	1.23	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
34	पीलीभीत बरेली मार्ग से फरीदपुर नहर की पटरी होते हुए सैंथल तक मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	23.10	2.31	944.00	तीन माह	ए, बी, सी, डी
35	रम्पुरा विसी से ज्योति जागीर मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	6.10	0.61	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
36	शाहपुर इनायत उल्ला से चन्द्रमापी से जोगीठेर मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	12.30	1.23	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
37	फरीदपुर कैनाल ब्रांच मार्ग से आसपुर हसनअली मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	8.35	0.84	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
38	नकटीनारायनपुर से नौगवा भगवन्तपुर मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	6.20	0.62	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
39	नवाबगंज बीजामऊ कैमुआ कटैया मार्ग किमी0 5 से सभापुर सम्पर्क मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	7.80	0.78	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
40	नवाबगंज शहरी भाग किमी0 1 से बोहर नगला होते हुए देशनगर सम्पर्क मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	20.70	2.07	944.00	तीन माह	ए, बी, सी, डी
41	अहमदाबाद से मधुकरपुर मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	14.50	1.45	856.00	दो माह	ए, बी, सी, डी
42	लाभाखेड़ा से अहमदाबाद मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	20.50	2.05	944.00	तीन माह	ए, बी, सी, डी
43	नबाबगंज बिजौरिया कल्यानपुर मार्ग से नवदिया अख्तियारपुर मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	17.40	1.74	944.00	तीन माह	ए, बी, सी, डी
44	बराबरौर मार्ग से डण्डिया मोहसिन सम्पर्क मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	18.00	1.80	944.00	तीन माह	ए, बी, सी, डी
45	सेंथल बरौर से लाईखेड़ा मार्ग	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0 बरेली	28.50	2.85	944.00	तीन माह	ए, बी, सी, डी

2. निविदा दस्तावेज एवं निविदा हेतु आमंत्रण के विस्तृत नियम एवं शर्तो हेतु वेबसाइट http://etender.up.nic.in पर Login किया जा सकता है।

UP - 202584 दिनांक 08.02.2024
विज्ञापन वेबसाइट www.up.gov.in, पर उपलब्ध है।

(नारायण सिंह)
अधिशासी अभियन्ता
प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0बरेली

सिविल बार एसोसिएशन की नई कार्यकारिणी ने ली शपथ

शपथ ग्रहण के बाद बार एसोसिएशन के नवनियुक्त पदाधिकारी।

निघासन खीरी, अमृत विचार : सिविल बार एसोसिएशन की नवनियुक्त कार्यकारिणी का शुक्रवार को शपथ ग्रहण के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि सिविल जज जूनियर डिवीजन प्रीति यादव ने अध्यक्ष सर्वेश गुप्ता, मंत्री हरिनंदनलाल यादव, वरिष्ठ उपाध्यक्ष मोहम्मद अमीन एकनिष्ठ, उपाध्यक्ष रवि गुप्ता, संयुक्त मंत्री त्रिभुवनलाल यादव, हरिओम गुप्ता, दीपचंद्र गुप्ता व कोषाध्यक्ष छोटेलाल, कार्यकारिणी सदस्य वरिष्ठ शैलेन्द्र श्रीवास्तव एवं सदस्य कनिष्ठ रमेश भार्गव व रमेश भारती को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। इस दौरान रवि श्रीवास्तव, प्रदीप कश्यप, रामगोपाल शाक्य, दिनेश वर्मा, प्रमोद यादव, राहुल गुप्ता, अरुण गुप्ता, अटल दीक्षित, आत्मा कुमार, हेमंत शुक्ला आदि मौजूद रहे।

श्रीराम जानकी विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा के लिए हुए कार्यक्रम

पसगवां। जंगबहादुरगंज में नवनिर्मित मंदिर में श्रीराम जानकी के विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा 12 फरवरी को होनी है। इसके कार्यक्रम इस समय चल रहे हैं। मेडिकल व्यवसाई दिनेश गुप्ता ने अपने पिता पुत्तूलाल यज्ञसैनी और माता कलावती की स्मृति में यह मंदिर बनवाया है। इसके परिप्रेक्ष्य में शुक्रवार को जलाधिवास, अन्नाधिवास, फलाधिवास और वेदी पूजन किया गया। प्रधान आचार्य पं. शैलेन्द्र अवस्थी, उनके सहयोगी पं. मयंक शरण शास्त्री, अनिरुद्ध आचार्य वृंदावन और पं. आदित्य अवस्थी ने मंत्रोच्चार के साथ सभी पूजन कार्यक्रम सम्पन्न हुए। यजमान डॉ. जीतेश गुप्ता ने पत्नी सोनल गुप्ता के साथ पूजा में भाग लिया। परिवार से दिनेश गुप्ता, राकेश चंद्र गुप्ता, रजनीश गुप्ता, सारिका, नीरज गुप्ता, रिंकी गुप्ता ने भी सहभागिता की।

श्रीराम कथा में सुनाया बाल लीलाओं का प्रसंग

गोला गोकर्णनाथ। नीलकंड मैदान में चल रही श्री राम कथा के चौथे दिन कथावाचक देवाचार्य देवेंद्र कृष्ण ने श्रीराम कथा में बाल लीला का प्रसंग सुनाया। भगवान श्रीराम सहित चारों भाईयों के जन्म, बाल लीला का वर्णन सुन श्रोता भाव विभोर हो गए। कथावाचक ने कहा कि भगवान के जन्म लेने से अयोध्या में इतनी खुशी हुई कि लोग देवताओं का आभार व्यक्त करने के लिए घर-घर हवन करने लगे। श्रीराम कथा सुनने के लिए धमेंद्र गिरि मोंटी, अजीत पांडे, कपिल भारती, तनु गुप्ता, सुरजनलाल वर्मा, जनार्दन गिरि, सचिन सिंह, भोली गिरि, गौरव कोहली, रामगुलाम पांडे आदि मौजूद रहे।

स्कूल के बच्चों ने दिया सड़क सुरक्षा का संदेश : लखीमपुर खीरी। सड़क जागरुकता कार्यक्रम के अंतर्गत जयपुरिया विद्यालय के बच्चों ने एलआरपी चौराहे पर नुक्कड़ नाटक कर सड़क सुरक्षा नियमों का पालन करने का संदेश दिया। संचालन विद्यालय प्रबंधक आशीष गुप्ता किया।

कार्यालय ग्राम पंचायत खजुरिया श्रीराम वि.खं. इस्लामनगर बदायूं

अल्पकालीन निविदा 09-02-2024

समस्त सामग्री आपूर्ति यथा (सीमेंट, रेता, बजरी, बदरफुट ईट, सरिया, एंगिल, रोडा) आदि को सूचित किया जाता है कि मनरेगा राज्य वित्त, केन्द्र वित्त योजना (2023-24) के अंतर्गत प्राप्त धनराशि से ग्राम पंचायत खजुरिया श्रीराम वि. खं. इस्लामनगर बदायूं में निम्न कार्य हेतु निवादाएं आमंत्रित की जाती है। अतः समस्त संबंधित आपूर्तिकर्ताओं को सूचित किया जाता है कि निविदा की तारीख से सामग्री की दरे बन्द लिफाफे में ग्राम पंचायत कार्यालय पर दिनांक 16.02.2024 को शाम 3:00 बजे तक कार्यालय में जमा करना सुनिश्चित करें। कार्य का विवरण निम्न प्रकार है।

क्र.सं.	कार्य का विवरण	अनुमानित धनराशि
1.	पुलिया से स्योराज के घर तक खडण्जा/नाली/मिट्टी/निर्माण कार्य	प्राकल्लन के अनुसार
2.	राम बहादुर के स्कूल से रामफूल के घर तक खडण्जा/नाली/मिट्टी निर्माण कार्य	प्राकल्लन के अनुसार

सचिव — प्रधान

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता बरेली वृत लो0नि0वि0, बरेली

पत्रांक : 799/453सी0(ई0टेण्डर)-3/2023-24 दिनांक: 27.01.2024

ऑन-लाइन निविदा आमंत्रण सूचना

1- महामहिम राज्यपाल, उ0प्र0 की ओर से अधीक्षण अभियन्ता, बरेली वृत, लो0नि0वि0, बरेली के द्वारा निर्माण खण्ड-1, लो0नि0वि0, बरेली के कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत निम्न तालिका में अंकित विवरण के अनुसार लो0नि0वि0 में पंजीकृत ठेकेदारों/फर्मो से मदवार दरों पर ई-निविदा दिनांक 12.02.2024 से दिनांक 26.02.2024 की मध्यान्ह 12.00 बजे तक आमंत्रित की जाती हैं। निविदादाता बिड से संबंधित अभिलेख जैसे कि कान्ट्रेक्ट डाटा, प्रपत्र, शर्ते, विशिष्टियों, बिल ऑफ क्वाटिन्टी एवं बिड की संशोधित/परिशिष्ट शर्तो इत्यादि का भली-भॉति परीक्षण कर लें। निविदा की तकनीकी बिड दिनांक 26.02.2024 को अपरान्ह 12.30 बजे ऑन-लाइन खोला जाना प्रस्तावित किया गया है:-

क्र0 सं0.	कार्य का नाम	खण्ड का नाम	अनुमानित लागत (रू0 लाख में)	धरोहर धनराशि (रू0 लाख मे)	कार्य पूर्ण करने अवधि	निविदा प्रपत्र का मूल्य) (निविदा शुल्क+ स्टेशनरी+ जी0एस0टी0)	ठेकेदारो की पात्रता श्रेणी
1	2	3	4	5	6	7	8
1.	जनपद बरेली में फरीदपुर बीसलपुर मार्ग से मेहत्तरपुर तिजा सिंह खनपुरा होते हुए मढैया मार्ग (अन्य जिला मार्ग)(लम्बाई 14 .100किमी0) के चौडीकरण एवं सुदृढ़ीकरण का कार्य।	निर्माण खण्ड-1 लो0नि0वि0,बरेली	2860.18	42.91	12 माह	2725.00	ए (मार्ग कार्य)

2. निविदा दस्तावेज एवं निविदा हेतु आमंत्रण के विस्तृत नियम एवं शर्तो हेतु वेबसाइट http://etender.up.nic.in पर लॉन ऑन किया जा सकता है।

UP - 202583 दिनांक 08.02.2024
विज्ञापन वेबसाइट www.up.gov.in, पर उपलब्ध है।

(राजीव अग्रवाल)
अधिशासी अभियन्ता
निर्माण खण्ड-1 लो0नि0वि0 बरेली

(अभिनेश कुमार)
अधीक्षण अभियन्ता
बरेली वृत, लो0नि0वि0 बरेली

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता बदायूँ/पीलीभीत वृत्त, लो0नि0वि0, बरेली

पत्रांक: 612/76सी0(ए)(ई-टेण्डर)-08/2023-24 दि0 24/01/2024

ई-निविदा आमंत्रण सूचना

1.महामहिम राज्यपाल महोदय, उ0प्र0 की ओर से अधीक्षण अभियन्ता, बदायूँ/पीलीभीत वृत, लो0नि0वि0, बरेली के द्वारा प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0, पीलीभीत/निर्माण खण्ड-1, लो0नि0वि0, पीलीभीत के क्षेत्र के अन्तर्गत निम्न तालिका में अंकित विवरण के अनुसार ई-निविदा प्रतिशत दरों पर आमंत्रित की जाती है। निविदा प्रपत्र बेवसाइट/पोर्टल पर दि0 12.02.24 से दिनांक 24.02.2024 की मध्यान्ह 12:00 बजे तक उपलब्ध रहेगें एवं तकनीकी विड दिनांक 24.02.2024 को अपरान्ह 12:30 बजे खोली जायेगी।

क्र0 सं0	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (लाख रू0 में)	बिड सिक्युरिटी (रू0 लाख में)	बिड डाक्यूमेन्ट का मूल्य (रू0 में)	कार्य पूर्ण करने का समय	फर्म/ठेकेदारों की आवश्यक पंजीकरण श्रेणी (मार्ग कार्य)
1	2	3	4	5	6	7
	निर्माण खण्ड-1, लो0नि0वि0, पीलीभीत					
1	शाही जहानाबाद मार्ग से तेजनगर सम्पर्क मार्ग का पुनः निर्माण कार्य।	35.00	3.50	रू0 2714.00	02 Month	A, B & C
	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0, पीलीभीत					
2	जनपद पीलीभीत में वित्तीय वर्ष 2023-24 के अन्तर्गत पीलीभीत खटीमा मार्ग से मुख्तयार कालोनी सम्पर्क मार्ग के किमी0 1 व 2(500) में पुर्ननिर्माण कार्य।	95.00	6.75	रू0 2714.00	06 Month	A & B
3	जनपद पीलीभीत में वित्तीय वर्ष 2023-24 के अन्तर्गत किशनपुर हरिपुर सम्पर्क मार्ग के शेष भाग का पुर्ननिर्माण कार्य।	54.00	4.70	रू0 2714.00	04 Month	A, B & C
4	जनपद पीलीभीत में वित्तीय वर्ष 2023-24 के अन्तर्गत पीलीभीत बस्ती मार्ग से नवदिया दुर्जनपुर सम्पर्क मार्ग के पुर्ननिर्माण कार्य।	330.00	18.50	रू0 2714.00	12 Month	A
5	जनपद पीलीभीत में वित्तीय वर्ष 2023-24 के अन्तर्गत पीलीभीत बस्ती मार्ग से नवदिया दुर्जनपुर कलां सम्पर्क मार्ग के पुर्ननिर्माण कार्य।	345.00	19.25	रू0 2714.00	12 Month	A

2. निविदा दस्तावेज एवं निविदा हेतु आमंत्रण के विस्तृत नियम एवं शर्तो हेतु वेबसाइट http://etender.up.nic.in पर लॉन ऑन किया जा सकता है।

UP - 202708 दिनांक 08.02.2024
विज्ञापन वेबसाइट www.up.gov.in, पर उपलब्ध है।

(संजीव कु0 जैन)
अधिशासी अभियन्ता
निर्माण खण्ड-1, लोनिवि, पीलीभीत।

(उदय नारायण)
अधिशासी अभियन्ता
प्रान्तीय खण्ड, लोनिवि, पीलीभीत।

(रवि दत्त कुमार)
अधीक्षण अभियन्ता
बदायूँ/पीलीभीत वृत्त, लोनिवि, बरेली।

पब्लिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे मुवक्किल पीरामल कैपीटल एण्ड हाउसिंग फाइनेन्स लि. शाखा बरेली से निदा सलीम पत्नी अहमद मियाँ नि. 146, गढ़ैया खन्नू मोहल्ला, किला बरेली एक किता मकान नं. 36 रकबई 43.91 वर्गमी. वाकै मो. रेती तह. व जिला बरेली जिसकी चौहद्दी पूरब में मकान ऋषिपाल आदि, पश्चिम में मकान हरप्रसाद आदि, उत्तर में मकान कमाल खां व दक्षिण में गली 6 फिट चौड़ी बादहू मकान कन्हैया लाल आदि है को बंधक रखकर मेरे मुवक्किल से ऋण ले रहे हैं। उक्त सम्पत्ति से सम्बन्धित एक मूल इकरारनामा निरस्तीकरण जो श्रीमती निदा सलीम के पक्ष में श्रीमती इरम ने किया था जिसकी रजिस्ट्री स.र. बरेली में दिनांक 07.03.2020 को बही सं. 1 जिल्द सं. 12091 के पृष्ठ 01 से 42 पर क्रमांक 2699 पर हुई है व एक मूल बैनामा जो श्री यासीन के पक्ष में श्रीमती गंगादेई ने किया था जिसकी रजिस्ट्री स.र. बरेली में दिनांक 29.06.2011 को बही सं. 1 जिल्द सं. 4619 के पृष्ठ 97 से 134 पर क्रमांक 7386 पर हुई है व एक मूल बैनामा जो तोताराम रस्तोगी के पक्ष में गंगादेई ने किया था जिसकी रजिस्ट्री स.र. बरेली में दिनांक 09.09.1997 को फो.0प्र.पं. सं. 1 खण्ड 481 के पृष्ठ 53 से 68 पर क्रमांक 5612 पर हुई है जो कहीं खो गये हैं जिनके खोने की सूचना दिनांक 08.02.2024 को थाना किला बरेली में दर्ज कराई जा चुकी है।

अतः सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि यदि किसी अन्य व्यक्ति/बैंक/संस्था आदि को उक्त बंधक सम्पत्ति के सम्बंध में कोई आपत्ति हो तो वह अपनी आपत्ति सामान्य कार्य दिवस के 15 दिन के अन्दर मेरे मुवक्किल पीरामल केपीटल एण्ड हाउसिंग फाईनेन्स लि. शाखा बरेली पर या मेरे कार्यालय पर व्यक्तिगत रूप से उपस्थित होकर दर्ज करा सकता है। उक्त समयावधि बीत जाने के उपरान्त मेरे मुवक्किल द्वारा उक्त ऋण जार कर दिया जायेगा। दिनांक : 09.02.2024

मुनीश कुमार सक्सेना, एडवोकेट
चैम्बर नं. 27 न्यू बिल्डिंग
बंगलिया सिविल कोर्ट, बरेली
सूचीबद्ध अधिवक्ता
पी.के.ए.हा.फा.लि. बरेली
मो.नं. 9997389012

उत्तर प्रदेश आवास एवं विकास परिषद
कार्यालय सम्पत्ति प्रबन्धक 122, सिविल लाइन्स, बरेली।

सर्व साधारण को सूचना

परिषद की राजेन्द्र नगर यो.सं.-2, बरेली में स्थित दु.आ.वर्ग भवन सं.-सी-723 आवास विकास परिषद द्वारा सरदार सतवंत सिंह पुत्र श्री सरदार केसर सिंह को प्रदेशन पत्र सं.-242 दि. 09.01.1985 द्वारा आवंटित किया गया था। सरदार सतवंत सिंह पुत्र श्री सरदार केसर सिंह ने श्री शंकर दास पुत्र श्री चतुरी प्रसाद को अपना मुख्त्यारेआम नियुक्त किया गया था। श्री शंकर दास पुत्र श्री चतुरी प्रसाद ने मुख्त्यारेआम के आधार पर विक्रय विलेख अपने पक्ष में दि. 23.02.2000 को निष्पादित करा लिया गया। अब उनकी पत्नी श्रीमती सुशीला देवी पत्नी स्व. श्री शंकर दास द्वारा अवगत कराया है कि उनके पति स्व. शंकर दास की मृत्यु दि. 07.06.2023 को हो चुकी है उनकी मृत्यु उपरान्त उक्त भवन का अन्तरण मृत्यु के आधार पर अपने पक्ष में कराने हेतु परिषद नियमानुसार निम्न प्रपत्र आन लाईन प्रार्थना पत्र के माध्यम से कार्यालय में प्रस्तुत किये हैं।

अतः एतद्वारा सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि राजेन्द्र नगर यो.सं.-2, बरेली में स्थित दु.आ. वर्ग भवन सं.-सी-723 श्री शंकर दास पुत्र श्री चतुरी प्रसाद की मृत्यु दि. 07.06.2023 को हो जाने के फलस्वरूप भवन का अन्तरण उनकी पत्नी श्रीमती सुशीला देवी पत्नी स्व. श्री शंकर दास के पक्ष में किया जाना है। भवन सं.-सी-723 के अन्तरण में किसी प्रकार की यदि किसी को कोई आपत्ति हो तो विज्ञप्ति प्रकाशन की तिथि से 30 दिन के अन्दर कार्यालय में साक्ष्य सहित आपत्ति दाखिल कर सकते हैं। समय सीमा व्यतीत हो जाने के उपरान्त किसी भी आपत्ति पर विचार किया जाना सम्भव नहीं होगा तथा तदनुसार सम्पत्ति का अन्तरण श्रीमती सुशीला देवी पत्नी स्व. श्री शंकर दास के पक्ष में करने की कार्यवाही अमल में लायी जायेगी।

आज्ञा से सम्पत्ति प्रबन्धक

कार्यालय ग्राम पंचायत कमालपुर शुमाली, विकास खंड शेरगढ़, जिला बरेली

निविदा सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत कमालपुर शुमाली, विकास खंड-शेरगढ़, बरेली में सी.सी. रोड व नाली निर्माण कार्य मनरेगा योजना के अन्तर्गत कराया जाना है। उक्त कार्य हेतु ईंट एवं रोड़ी, सीमेंट, रेता, बजरफुट, सरिया, आदि सामग्री की सप्लाई हेतु अल्पकालीन निविदाएं आमन्त्रित की जाती हैं। इच्छुक फर्मों से निविदाएं बन्द लिफाफे में दिनाँक 10 फरवरी 2024 से 12 फरवरी 2024 अपरान्ह 3 बजे तक ग्राम पंचायत कार्यालय में प्राप्त की जायेंगी और उसी दिन अपरान्ह 3 बजे खोली जाएंगी। ग्राम पंचायत की समस्त शर्ते लागू रहेंगी।

क्र.सं.	कार्य का नाम	माप	अनु० लागत
1.	ग्राम पंचायत कमालपुर शुमाली में हरिओम के मकान से मो. इरफान के मकान तक सी.सी. व नाली निर्माण कार्य	100x3 मी.	3,95,000/-
2.	ग्राम पंचायत कमालपुर शुमाली में हरका प्रसाद के घर से ओम प्रकाश के मकान तक सी.सी. व नाली निर्माण कार्य	90x3 मी.	3,90,000/-

प्रधान-रानी — सचिव-प्यारे लाल यदुवंशी

एक नजर

कश्मीर मे हथियारों का जखीरा बरामद, दो पकड़े

श्रीनगर। सुरक्षा बलों ने जम्मू कश्मीर के सोपोर उप जिले में दो ठिकानों से हथियारों और गोला-बारूद का जखीरा बरामद कर दो लोगों को गिरफ्तार किया किया है। पुलिस सूत्रों ने बताया कि 2023 में दर्ज एक मामले की जांच के तहत कुछ संदिग्धों को पूछताछ के लिए सोपोर थाने में बुलाया गया था। पूछताछ में मिले सुराग के आधार पर पुलिस, सेना और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की टीम ने संदिग्ध के घर में तलाशी ली। इस दौरान सोपोर में तारजू के अब्दुल रशीद नजर के घर के अंदर एक गुप्त कंक्रीट ठिकाने का पता चला जहां से आईईडी, पिस्तौल, पिस्तौल पत्रिका, जीवित गोला-बारूद बरामद किए गए। उन्होंने बताया कि रशीद ने खुलासा किया कि सोपोर का अब्दुल जमील लाराह भी इसी तरह की विध्वंसक गतिविधियों में शामिल था। इसके बाद जमील के आवास पर भी तलाशी ली गई।

किसान को थप्पड़ मरने वाले तहसीलदार को हटाया

बड़वानी। मध्य प्रदेश के बड़वानी जिले के पानसेमल के तहसीलदार का एक आदिवासी किसान को थप्पड़ मारने का वीडियो वायरल होने के बाद कलेक्टर ने तहसीलदार को हटाते हुए कलेक्टर कार्यालय में पदस्थ कर दिया है। सोशल मीडिया पर गुरुवार को एक वीडियो वायरल हुआ। जिसमें पानसेमल के प्रभारी तहसीलदार हितेंद्र भावसार उनका वीडियो पर बनाए जाने पर नाराज दिखाई दिए। उन्होंने किसान रविंद्र को अपने पास बुलाया और थप्पड़ मार दिया। घटना एक हफ्ते पुरानी बताई जा रही है। जिला कलेक्टर डॉक्टर राहुल फटिंग ने गुरुवार को ही हितेंद्र भावसार को हटाकर कलेक्ट्रेट में पदस्थ कर दिया है।

बिलकीस बानो मामले के दोषी को 5 दिन की पैरोल

दाहोद (गुजरात)। उच्चतम न्यायालय के आदेश पर बिलकीस बानो मामले में दोषियों के जेल अधिकारियों के सामने आत्मसमर्पण करने के कुछ दिनों बाद उनमें से एक को उसके ससुर के निधन के कारण गुजरात उच्च न्यायालय ने पांच दिन की पैरोल दी है। पुलिस के एक अधिकारी ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। दाहोद जिले के निवासी दोषी प्रदीप मोढिया को पैरोल पर गोधरा जिला जेल से रिहा कर दिया गया है।

संप्रग भ्रष्टाचारजीवी सरकार थी, सोनिया थीं सुपर प्राइम मिनिस्टर : सीतारमण

वित्तमंत्री ने लोस में श्वेत पत्र पर हुई चर्चा का जवाब देते हुए कांग्रेस पर किया प्रहार

नई दिल्ली, एजेंसी

वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने शुक्रवार को कांग्रेस पर आर्थिक कुप्रबंधन, भ्रष्टाचार और घोटालों को लेकर तीखा प्रहार किया और आरोप लगाया कि संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन' (संप्रग) सरकार एक 'आंदोलनजीवी और भ्रष्टाचारजीवी सरकार' थी, जिसने देश में 'जयंती टैक्स' को जन्म दिया।

केंद्रीय वित्तमंत्री ने 'भारतीय अर्थव्यवस्था और देश के नागरिकों पर इसके प्रभाव पर श्वेत पत्र' को लोकसभा में हुई चर्चा का जवाब देते हुए यह दावा भी किया कि सोनिया गांधी संप्रग सरकार में सुपर प्राइम मिनिस्टर थीं और उनकी अध्यक्षता वाली राष्ट्रीय सलाहकार परिषद (एनएसी) 'किचन कैबिनेट' से भी बदतर थी, जो असंवैधानिक संस्था के रूप में कानून बनवा रही थी। वित्त मंत्री ने संप्रग सरकार पर राष्ट्रीय सुरक्षा से खिलवाड़ का आरोप लगाया और कहा कि उस वक्त नेतृत्व का अभाव था। उन्होंने कहा कि श्वेत पत्र एक गंभीर दस्तावेज है, जिसमें दस्तावेजी प्रमाण हैं।

उन्होंने कहा कि सरकार का प्रयास रहा है कि संप्रग सरकार के 10 साल के कुप्रबंधन को दुरुस्त करना और अर्थव्यवस्था को ऐसे आगे ले जाना कि यह मजबूती के साथ बढ़े। वित्त मंत्री का कहना था कि इस दस्तावेज में कोई भी आधारहीन आरोप नहीं लगाए गए हैं और इसमें कैग की रिपोर्ट और सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणियों को उद्धृत किया गया है। उन्होंने कहा, 'इस श्वेत पत्र में की गई हर बात प्रमाण के साथ है।' सीतारमण के जवाब के बाद सरकार के श्वेतपत्र के विरोध में आरएसपी के एन के प्रेमचंद्रन और तृणमूल कांग्रेस के सौगत राय द्वारा लाए गए स्थानापन्न प्रस्तावों को सदन ने ध्वनिमत से खारिज कर दिया।

राष्ट्रीय सुरक्षा से खिलवाड़ करने का आरोप

सीतारमण ने संप्रग सरकार पर राष्ट्रीय सुरक्षा के साथ खिलवाड़ करने का आरोप लगाते हुए कहा कि उस वक्त के रक्षा मंत्री एके एंटनी ने सीमावर्ती इलाकों में सड़कों के निर्माण नहीं होने की बात कही थी। उनके अनुसार, एंटनी ने तब कहा था कि कि बड़ी परियोजनाओं के लिए पैसे नहीं हैं और एक अप्रैल (अगले वित्त वर्ष) तक का इंतजार करिए। वित्त मंत्री ने आरोप लगाया कि संप्रग सरकार के समय में रक्षा परियोजनाओं में घोटाला होता था। उन्होंने 'अगस्ता वेस्टलैंड' मामले का उल्लेख करते हुए कहा कि कैग ने तोपों की खरीद में विलंब के लिए सरकार की खिंचाई की थी। उन्होंने कहा, पिछले 10 वर्षों में रक्षा बजट दो गुना हो गया है। सीतारमण के अनुसार, सीमा पर बुनियादी ढांचे के निर्माण में निवेश बढ़ाया गया है। उन्होंने रक्षा क्षेत्र में मोदी सरकार की उपलब्धियों का उल्लेख किया और कहा, ''गर्व की बात है कि आईएनएस विक्रांत, तेजस, अर्जुन, धनुष सबका निर्माण भारत में हो रहा है।

ईसी के खिलाफ दायर अवमानना याचिका खारिज

नई दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने नए मतदाता पंजीकरण के लिए आधार संख्या की अनिवार्यता पर जोर देने पर चुनाव आयोग के खिलाफ अवमानना कार्रवाई की गुहार वाली याचिका शुक्रवार को खारिज कर दी। मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़, न्यायमूर्ति मनोज मिश्रा और न्यायमूर्ति सतीश चंद्र शर्मा की पीठ ने यह कहते हुए याचिका पर विचार करने से इनकार कर दिया कि चुनाव आयोग ने तेलंगाना प्रदेश समिति के जी निरंजन की जनहित याचिका में उठाए गए मुद्दों को हल करने का दावा किया है। पीठ ने कहा कि पिछली याचिका का निपटारा 2023 में कर दिया गया था, जब चुनाव आयोग ने कहा था कि वह मुद्दे पर गौर कर रहा है। याचिकाकर्ता ने दावा किया कि यह सही है कि चुनाव आयोग ने आश्वासन दिया था कि नए मतदाता पंजीकरण के लिए आधार संख्या अनिवार्य नहीं है, लेकिन उसके आश्वासन के मुताबिक आवेदन फॉर्म में जरूरी बदलाव नहीं किया गया।

सुप्रीम कोर्ट आजीवन कारावास से जुड़ी याचिका पर सुनवाई को सहमत

नई दिल्ली, एजेंसी

▸▸ पीठ ने दिल्ली सरकार को नोटिस जारी कर चंद्रकांत झा की याचिका पर मांगा जवाब

सुप्रीम कोर्ट शुक्रवार को उस याचिका पर सुनवाई करने के लिए सहमत हो गया जिसमें यह बताने का अनुरोध किया गया है कि क्या आजीवन कारावास का मतलब पूरे जीवन के लिए होगा या इसे क्या आपराधिक प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) की धारा 432 के तहत प्राप्त शक्तियों द्वारा कम या माफ किया जा सकता है। न्यायमूर्ति हृषिकेश रॉय और न्यायमूर्ति प्रशांत कुमार मिश्रा की पीठ ने दिल्ली सरकार को नोटिस जारी कर चंद्रकांत झा द्वारा दायर याचिका पर जवाब मांगा।

झा हत्या के तीन मामलों में दोषी ठहराए जाने के बाद आजीवन कारावास की सजा काट रहा है। वकील ऋषि मल्होत्रा के माध्यम से दायर अपनी याचिका में, झा ने कहा कि उसे भारतीय दंड संहिता की धारा 302 (हत्या) और 201 (अपराध के सबूतों को गायब करना) के तहत अपराध के लिए दोषी ठहराया गया है। उसने कहा कि दिल्ली उच्च न्यायालय ने पहले एक निचली अदालत द्वारा उसे दी गई मौत की सजा को कम कर दिया था और इसे आजीवन कारावास में बदल दिया था। याचिका में कहा गया है, यहां यह उल्लेख करना उचित है कि आईपीसी की धारा 302 में दो दंडों का उल्लेख किया गया है, एक है मौत की सजा और दूसरा है आजीवन कारावास। याचिका में कहा गया है कि यदि आजीवन कारावास का मतलब अपनी अंतिम सांस तक कैद में रहना होता है तो यह दोषी व्यक्ति के मौलिक अधिकार का उल्लंघन है। इसमें कहा गया है कि हत्या के अपराध के लिए अंतिम सांस तक कारावास की सजा देना असंवैधानिक है क्योंकि यह किसी व्यक्ति के सुधार का मौका पूरी तरह से छीन लेता है। अदालत के समक्ष उठाया गया मुख्य मुद्दा यह है कि क्या ''आजीवन कारावास'' का मतलब पूरे जीवन तक होगा या इसे सीआरपीसी की धारा 432 के तहत छूट की शक्तियों के माध्यम से कम या माफ किया जा सकता है।

मेयर चुनाव विवाद : चंडीगढ़ प्रशासन को कोर्ट का नोटिस

चंडीगढ़। चंडीगढ़ मेयर चुनाव विवाद में वरिष्ठ महापौर और उपमहापौर चुनावों को लेकर पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय ने शुक्रवार को चंडीगढ़ प्रशासन को नोटिस जारी कर 26 फरवरी तक अपना पक्ष रखने का निर्देश दिया। कांग्रेस की वरिष्ठ उपमहापौर और उपमहापौर पद के लिए उम्मीदवारों गुरप्रीत सिंह और निर्मला देवी की ओर से दाखिल याचिका में 30 जनवरी को वरिष्ठ उपमहापौर और उपमहापौर के चुनाव करवाने को चुनौती दी गई है। न्यायाधीश सुधीर सिंह और हर्ष बंगर की खंडपीठ के समक्ष याचिका पर शुक्रवार को सुनवाई हुई। अधिवक्ताओं राजीव शर्मा, करणबीर सिंह और मंजोत गुजराल के जरिए दायर इस याचिका में कहा गया है कि चंडीगढ़ नगर निगम में 30 जनवरी को गैरकानूनी ढंग से निर्वाचित महापौर ने पीठासीन प्राधिकारी के रूप में वरिष्ठ उप महापौर और उप महापौर के चुनाव करवाए, जो कि रद किए जाएं और उच्च न्यायालय के एक सेवानिवृत्त न्यायाधीश की देखरेख में नए चुनाव कराने का भी निर्देश दिया जाए। याचिका पर अगली सुनवाई 26 फरवरी को होगी।

पुरी तट पहुंचे नौटियाल ...

पुरी : गायक जुबिन नौटियाल ने पुरी में कलाकार सुदर्शन पटनायक द्वारा बनाई गई भगवान जगन्नाथ की रेत कला के साथ तस्वीरें खिंचवाईं। ● एजेंसी

डीप फेक से निपटने को नियमों में किया जा रहा बदलाव : वैष्णव

नई दिल्ली, एजेंसी

▸▸ इलेक्ट्रॉनिक एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री ने राज्यसभा में दी जानकारी

इलेक्ट्रॉनिक एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया कि सोशल मीडिया पर भ्रामक सूचनाएं फैलाने या डीप फेक जैसे मुद्दों से कठोरता से निपटने के लिए नियमों में बदलाव तथा सोशल मीडिया मंचों की जवाबदेही तय करने की व्यवस्था की जा रही है।

वैष्णव ने राज्यसभा में प्रश्नकाल के दौरान कहा कि आज सोशल मीडिया, इंटरनेट जीवन का जरूरी हिस्सा बन गया है और व्यवहारिक रूप से हम कई मामलों के लिए इन पर निर्भर हैं लेकिन सोशल मीडिया पर भ्रामक सूचनाएं फैलाना या डीप फेक जैसे मुद्दे खतरनाक है जिन पर रोक लगाने के लिए कड़े कदम उठाए जा रहे हैं। इसके लिए नियमों में बदलाव किया जा रहा है तथा सोशल मीडिया मंचों में जवाबदेही तय करने की व्यवस्था की जा रही है।

उन्होंने कहा कि आज सोशल मीडिया मंच खुद ही अपने में लगातार बदलाव कर रहे हैं और इसके लिए उनके पास प्रौद्योगिकी है। आज वैश्विक नियामक समुदाय इस बात पर सहमत हो रहा है कि सोशल मीडिया मंच को अपने यहां डाली गई सामग्री के लिए अधिक जवाबदार होना होगा।'' वैष्णव ने कहा कि डिजिटल इकॉनामी के लिए एक संस्थागत रूपरेखा बनाई जा रही है। इसके तहत दूरसंचार विधेयक, डेटा संरक्षण विधेयक को मंजूरी दी जा चुकी है तथा सभी पक्षों से यह सुनिश्चित करने के लिए लगातार बातचीत की जा रही है कि इंटरनेट पूरी तरह भरोसेमंद हो।

आसपास

घरों पर बुलडोजर चलेगा तो अपनी हिफाजत खुद करेंगे

बरेली कार्यालय

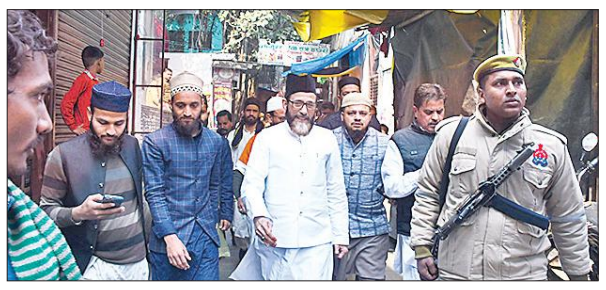

अपने घर से आला हजरत मस्जिद की ओर जाते मौलाना तौकीर रजा खां।

▸▸ गिरफ्तारी देने के लिए अपने निवास से निकलने से पहले मीडिया से बात कर दिखाए तीखे तेवर

▸▸ बोले- सुप्रीम कोर्ट संज्ञान नहीं ले रहा, प्रधानमंत्री देश के सबसे बड़े बेईमान

अमृत विचार : गिरफ्तारी देने के लिए पहले अपने निवास से निकलने से पहले मौलाना तौकीर रजा ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि अगर हमारे घरों पर बुलडोजर चलाया जाएगा तो अपनी हिफाजत हम खुद करेंगे। बोले, अफसोस इस बात का है कि सुप्रीम कोर्ट इन घटनाओं का संज्ञान नहीं ले रहा है। प्रधानमंत्री के सामने भी शिकायत की जा सकती थी लेकिन वह खुद देश के सबसे बड़े बेईमान हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को यह कहकर आगाह किया कि प्रदेश में मुसलमानों को दबाना बंद किया जाए।

मौलाना ने तीखे तेवर दिखाते हुए कहा कि देश का कानून हमें अधिकार देता है कि अगर कोई हमारे ऊपर हमलावर हो रहा है तो हम उसे जान से मार दें। बोले, अपराध मदरसे ने नहीं किया है जो बुलडोजर चला दिया गया। जिसने अपराध किया, सजा उसे सजा दी जानी चाहिए।

पुलिस और बजरंग दल मिलकर देश को बदनाम करना चाहते हैं। सुप्रीम कोर्ट के अधिकारों का भी हनन हो रहा है। हम इस बेईमानी को बर्दाश्त नहीं कर सकते।

हल्द्वानी में हुए बवाल का जिक्र करते हुए मौलाना तौकीर ने कहा कि हमारे घर पर बुलडोजर चला दोगे तो क्या हम अंधे-बहरे बने बैठे रहेंगे। सुप्रीम कोर्ट भी संज्ञान नही ले रहा है तो हम अपनी हिफाजत खुद करेंगे। मौलाना ने यूनिफार्म सिविल कोड पर सवाल उठाते हुए कहा कि वह यूनिफार्म कब रहा जब उसमें कुछ लोगों को छोड़ दिया गया।

बैरिकेडिंग तोड़कर आगे बढ़े मौलाना ने कहा- लाठी चलाओ या गोली, हर हाल में जाऊंगा इस्लामिया

बरेली, अमृत विचार : करोलान मस्जिद में नमाज अदा करने के बाद मौलाना तौकीर ने भीड़ से बगैर नारेबाजी किए गिरफ्तारी देने को कहा। इसके बाद रास्ते में लगा बैरियर तोड़कर इस्लामिया ग्राउंड की ओर बढ़े तो पुलिस से धक्कामुक्की शुरू हो गई। अफसरों से तीखी नोकझोंक के दौरान मौलाना ने कहा, चाहे उन पर लाठी चले या गोली मार दी जाए, वह हर हाल में इस्लामिया ग्राउंड जाएंगे। हालांकि अफसरों ने उन्हें समझाया और आगे नहीं बढ़ने दिया। मौलाना को इस पर वापस लौटना पड़ा। नमाज के बाद मौलाना तौकीर गलियों से होते हुए वह बिहारीपुर पुलिस चौकी की बगल वाली गली में पहुंचे तो पार्टी नेता नदीम खान, डॉ. नफीस, मुनीर इदरीसी समेत तमाम समर्थकों ने इस्लामिया ग्राउंड तक जाने की मांग शुरू कर दी। इसके बाद मौलाना रास्ते में लगा बैरियर तोड़कर बढ़े लेकिन पुलिस ने उन्हें आगे नहीं बढ़ने दिया। बता दें कि मौलाना ने नमाज के बाद इस्लामिया ग्राउंड पर इकट्ठे होने के बाद कलेक्ट्रेट तक मार्च कर सामूहिक गिरफ्तारी देने का एलान किया था। आईएमसी के मीडिया प्रभारी मुनीर इदरीसी ने बताया कि सांकेतिक तौर पर गिरफ्तारी दी गई है। उन्होंने बताया कि सुबह से ही पार्टी के तमाम नेताओं के घरों पर पुलिस का पहरा रहा।

तीन गैंगस्टर की 1.31 करोड़ की संपत्ति जब्त करने के आदेश

बरेली, अमृत विचार : डीएम ने मादक पदार्थ की तस्करी के मामले में पकड़े गए तीन आरोपियों पर गैंगस्टर की कार्रवाई कर अवैध तरीके से अर्जित की गई संपत्ति को जब्त करने का आदेश दिया है। जब्त की जानी वाली संपत्ति की कीमत 1.31 करोड़ 17 हजार 516 रुपये बताई जा रही है। दरअसल, फरीदपुर थाना क्षेत्र के ऊंचागांव निवासी बाहर अली, पदेरा निवासी अतहर अली और मुर्शीद को पुलिस ने मादक पदार्थ की तस्करी के मामले में गिरफ्तार किया था। जांच में पता चला कि तीनों ने अवैध तरीके से धन अर्जित कर संपत्तियां खरीदी हैं। डीएम ने तीनों पर गैंगस्टर की कार्रवाई करते हुए अवैध तरीके से जुटाई गई संपत्ति को जब्त करने का आदेश दिया।

छात्रा को शोहदे की धमकी 18 की होने पर उठा ले जाऊंगा

बरेली कार्यालय

▸▸ सुभाषनगर पुलिस ने नहीं सुनी फरियाद, दहशत में स्कूल जाना छोड़ा

▸▸ एसएसपी के आदेश पर पांच के खिलाफ दर्ज की रिपोर्ट

अमृत विचार : सुभाषनगर क्षेत्र में 12 वीं की छात्रा ने शोहदे के डर से स्कूल जाना छोड़ दिया। शिकायत पर उसने और उसके परिजनों ने छात्रा और उसकी मां को धमकी दी कि 18 की होने पर छात्रा को उठा ले जाएगा। शिकायत पर सुभाषनगर पुलिस ने पीड़िता और उसके परिजनों को डांट कर भगा दिया। एसएसपी के आदेश पर पुलिस ने पांच आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज की।

महिला ने बताया कि उनकी बेटी 12वीं की छात्रा है। होली चौराहा दामोदर पुरम निवासी अरुण बेटी से अक्सर छेड़खानी करता है और जबरन शादी करने का दबाव बनाता है। जवाब न देने पर मारपीट करता है और कहता कि 18 की उम्र पूरी होने पर उठा ले जाएगा। डर के कारण बेटी ने स्कूल जाना बंद कर दिया। पांच फरवरी को शाम पांच बजे अरुण दोनों हाथों में चाकू लेकर घर आ धमका और बेटी को डराने धमकाने लगा। बेटों को भी जान से मारने की धमकी दी। अरुण के पिता भगवानदास से शिकायत की तो वह गाली गलौज करने लगा। भगवान दास अपने भाई सरवन, बेटे सूरज, विकास को साथ लेकर घर में घुस आया और मारपीट की।

बीएएमएस की रद परीक्षा अब 17 को

बरेली कार्यालय

▸▸ 20 जनवरी को गजरौला के केंद्र पर लीक हुआ था पेपर

▸▸ पेपर लीक की तीन सदस्यी समिति कर रही है जांच

अमृत विचार : गजरौला के केंद्र पर बीएएमएस का प्रश्नपत्र लीक होने के बाद रद्द की गई परीक्षा अब 17 फरवरी को होगी। रुहेलखंड विश्वविद्यालय ने 16 फरवरी को परीक्षा पूरी होने के बाद की तिथि निर्धारित की है। वहीं विश्वविद्यालय जल्द ही नर्सिंग और पैरामेडिकल की परीक्षा के समय में बदलाव कर सकता है।

20 जनवरी को गजरौला में बीएएमएस की परीक्षा के दौरान प्रश्नपत्र से मिलते-जुलते प्रश्नों की पर्ची लीक हुई थी। इसके बाद विश्वविद्यालय ने तुरंत परीक्षा निरस्त कर दी थी। विश्वविद्यालय ने गजरौला के केंद्र से प्रश्नपत्र लीक होने की संभावना के चलते केंद्र भी बदल दिया था। इस मामले की विश्वविद्यालय की तीन सदस्यी समिति जांच कर रही है। समिति की रिपोर्ट के बाद इस मामले में कोई कार्रवाई हो सकती है। अब विश्वविद्यालय ने निरस्त परीक्षा को 17 फरवरी को कराने का निर्णय लिया है।

बरेली कॉलेज में परीक्षा कक्ष में भिड़े छात्र

बरेली। बरेली कॉलेज में एलएलबी की परीक्षा के दौरान कक्ष में दो छात्र आपस में भिड़ गए। एक छात्र ने दूसरे छात्र से कॉपी दिखाने के लिए कहा, जब छात्र ने मना किया तो उसकी कॉपी छीनने की कोशिश की। सचल दल ने मामले को शांत किया। इसके बाद छात्रों को अलग-अलग कक्ष में बैठाया गया। वहीं शिक्षक संघ का कहना है कि कॉलेज में नकल पर रोक नहीं लग पा रही है। एलएलबी और बीएएलएलबी विषम सेमेस्टर की परीक्षा 1 फरवरी से शुरू हुई हैं। एलएलबी तृतीय और पंचम सेमेस्टर की परीक्षा समाप्त हो गईं और 10 फरवरी तृतीय सेमेस्टर की परीक्षा समाप्त हो जाएगी। 12 फरवरी को बीएएलएलबी की परीक्षा समाप्त हो जाएगी। जब से परीक्षा शुरू हुई है, तब से बरेली कॉलेज में छात्र नकल करते पकड़े जा रहे हैं। शुक्रवार को परीक्षा के दौरान प्रॉक्टोरियल बोर्ड ने नकल रोकने के लिए सख्ती की। एक कक्ष में एक नेता ने दूसरे छात्र की कॉपी से देखकर नकल करने की कोशिश की। इस पर छात्र ने विरोध किया तो नेता ने कॉपी छीनने की कोशिश की। इससे दोनों में नोकझोंक हो गई। इसके बाद प्रॉक्टोरियल बोर्ड मौके पर पहुंचा और मामले को शांत किया। चीफ प्रॉक्टर प्रो. आलोक खरे ने बताया कि जबरन कॉपी देखने के विरोध पर दो छात्रों में नोकझोंक हुई थी। दोनों को अलग-अलग कक्षा में बैठाया गया।

बरेली कॉलेज में एमकॉम की मिड टर्म 12 से होंगी शुरू

बरेली, अमृत विचार : बरेली कॉलेज में एमकॉम प्रथम और तृतीय सेमेस्टर की मिड टर्म परीक्षा 12 फरवरी से शुरू होंगी। विभागाध्यक्ष प्रो. भूपेंद्र सिंह ने बताया कि एमकॉम प्रथम सेमेस्टर-एडवांस्ड मैनेजमेंट अकाउंटिंग और बिसनेस रिसर्च मैथोडोलॉजी की परीक्षा 12 फरवरी, स्टेटिस्टिकल मेथेड्स और मैनेजेरियल इकोनॉमिक्स की 13 फरवरी को होगी। इसके अलावा एमकॉम तृतीय सेमेस्टर- एडवांस्ड फाइनेंशियल मैनेजमेंट और ई-कॉमर्स की परीक्षा 15 फरवरी और एडवरटाइजिंग एंड सेल्स मैनेजमेंट और स्टेटिक मैनेजमेंट की 16 फरवरी को होगी। परीक्षा सुबह 9 बजे से होगी लेकिन छात्रों को विभाग में 8:30 बजे उपस्थित होना होगा।

सिविल लाइंस में कुत्तों ने महिला को दौड़ाकर काटा

बरेली, अमृत विचार : पॉश कॉलोनी सिविल लाइंस में आवारा कुत्तों से लोग परेशान हैं। कुत्ते लोगों को दौड़ाकर काट रहे हैं। कुत्तों ने बृहस्पतिवार को एक महिला को दौड़ाकर पैर में कई जगह काट लिया, जिससे महिला गंभीर रूप से घायल हो गई। नगर निगम आवारा कुत्तों को पकड़ ही नहीं रहा है और सिर्फ छुट्टा गोवंशीय पशु ही पकड़ने में जुटा है। सिविल लाइंस में 40 वर्षीय सावित्री बृहस्पतिवार को एक घर से दूसरे घर में काम करने जा रही थीं। रास्ते में उन्हें आवारा कुत्ते ने दौड़ाकर काट लिया। सावित्री ने बचने का काफी प्रयास किया लेकिन वह सफल नहीं हो सकीं। लोगों का कहना है कि कॉलोनी में कुछ लोग आवारा कुत्तों को खाने का सामान देते हैं, जब खाने को नहीं मिलता है तो वह राहगीरों पर झपटते हैं। पशु चिकित्सा कल्याण अधिकारी डॉ. आदित्य तिवारी ने बताया कि सूचना मिलने पर कुत्ता पकड़ने की टीम भेजी थी लेकिन टीम को कुत्ते मिले नहीं है। अब दोबारा टीम भेजी जाएगी।

उम्मीद पिता से नाराजगी के चलते 1993 में घर से चला गया था 22 वर्षीय आलम, जेल से रिहा होने से घर वालों में खुशी

जवानी में जेल गया आलम बुढ़ापे में आ सकता है वापस

संवाददाता, टांडा

अमृत विचार : कहानी फिल्मी सी है...। 30 साल पहले पिता से किसी बात पर नाराजगी के चलते घर से गया आलम मियां वापस नहीं लौटा। बेटे की जुदाई के गम में माता-पिता और भाई-बहनों की आंखें रो-रोकर खुश्क हो गईं। बेटे की घर वापसी के इंतजार में पिता की 2004 और मां की 2021 में मृत्यु हो गई। एक साल पहले खुफिया एजेंसी के जरिए घर वालों को जानकारी मिली कि आलम मियां पाकिस्तान की जेल में हैं। यह खबर परिजनों के लिए काफी खुशियां लेकर आई है। एक बार फिर आलम के घर वापसी की सुगबुगाहट से परिजनों में खुशी है।

नगर के मोहल्ला भब्बलपुरी में एक छोटे से मकान में परिवार सहित रहने वाले बिट्टन मियां का 22 वर्षीय पुत्र आलम मियां पिता से नाराजगी के चलते 1993 में घर छोड़ कर चला गया था। गरीब माता-पिता और घर के सभी सदस्य उसकी वापसी का इंतजार करते रहे। बेटे का इंतजार करते-करते 2004 में बाप की मौत हो गई। उसके बाद 2021 में उसकी मां मेहताब जहां भी दुनिया छोड़ कर चली गईं। भाई इकबाल मियां की भी 2008 में मौत हो गई। आलम सात बहन-भाइयों में सबसे बड़ा था। एक वर्ष पूर्व एलआईयू से फोन पहुंचने पर पता चला कि आलम मियां पाकिस्तान की जेल में बंद है। परिजन खुशी से झूम उठे। लेकिन, मां-बाप बेटे को याद करते-करते इस दुनिया को अलविदा कह चुके थे। आलम मियां ने क्या अपराध किया है और किस जुर्म की सजा काट रहा रहा है इसकी जानकारी घर वालों को नहीं हो पाई है। लेकिन वह इस उम्मीद पर हैं कि अगर वह जेल में है तो सजा पूरी करने के बाद कभी घर लौटेगा।

जेल से जल्द रिहा होगा आलम

आलम के भाई इकबाल मियां ने अमृत विचार को बताया कि कुछ दिन पहले एलआईयू सहित विभिन्न माध्यम से घर वालों को जानकारी मिली कि आलम मियां 30 साल जेल में गुजारने के बाद रिहा होने वाले हैं। दोनों देशों के बीच आवश्यक कानून प्रक्रिया चल रही है। इसकी जानकारी मिलने से परिजनों में खुशी है। आलम मियां के दूसरे भाइयों अनवर मियां, अकबर मियां, मुकर्रम मियां तथा फरहत मियां सहित दोनों बहनों ने उनकी जेल से रिहाई पर खुशी का इजहार करते हुए बताया कि वह अपने भाई को खुशी-खुशी साथ रखने को तैयार हैं। कहा कि आखिर वह हमारा सगा भाई है। उसने क्या जुर्म किया इसकी जानकारी नहीं है। यह तो उसके घर वापसी के बाद ही पता चल सकेगा कि किस जुर्म की सजा में उसे 30 साल जेल की कोठरी में गुजारने पड़े।

कक्षा पांच तक शिक्षित है आलम

अनवर मियां ने बताया कि आलम मियां ने कक्षा पांच तक की पढ़ाई मोहल्ले के ही प्राइमरी स्कूल से की थी। आगे की पढ़ाई के बारे में उसे कोई जानकारी नहीं है। वार्ड सभासद तायरा बेगम का कहना है कि आलम मियां उसकी शादी से पहले ही घर से जा चुके थे। उनके घर वालों और मोहल्ले वासियों के जरिए मालूम हुआ कि वह अपने पिता से नाराजगी के चलते घर छोड़ कर चले गए थे। वह कहां हैं किस हालत में हैं इसकी जानकारी नहीं हो सकी। अब जब वह वापस जेल से रिहा होकर घर आ सकते हैं तो घर वाले खुश हैं। आलम मियां के भाइयों ने बताया कि भाई की रिहाई के लिए अगर उन्हें हिंदुस्तान के किसी कार्यालय या पाकिस्तानी एंबेसी में भी जाने की जरूरत पड़ी तो वह हर तरह की कानूनी कार्रवाई के लिए तैयार हैं।

जवानी में गए आलम को बुढ़ापे में मिलेगा परिजनों का सहारा

1993 में 22 वर्ष की उम्र में आलम पिता से लड़ाई करके घर से चला गया था। उसके बाद परिजन उसके आने का इंतजार करते रहे। अब वह पाकिस्तान की जेल से छूटकर आएगा तो माता-पिता और एक भाई से बिछड़ चुका होगा। क्योंकि परिवार में तीन लोगों की मौत हो चुकी है। अब वह बुढ़ापे में अपने भाइयों और बहनों के साथ रहेगा।

स जीवति गुणा यस्य धर्मो यस्य च जीवति।
गुणधर्मविहीनस्य जीवनं निष्प्रयोजनम् ॥

जिस व्यक्ति के धर्म और गुण जीवित हैं। वास्तविकता में वही जीवन जी रहा है। इनके बिना जीवन का कोई अर्थ नहीं है।

संपादकीय

सुरक्षित हिंद महासागर क्षेत्र

हिंद महासागर क्षेत्र (आईओआर) भू-राजनीति के लिए हाल के दिनों में निर्णायक बन गया है। क्षेत्र में चीन की बढ़ती मौजूदगी, सामरिक उद्देश्यों के लिए उसकी आर्थिक भागीदारी और भू-राजनीतिक हसरतों ने आईओआर में अमेरिका, रूस, फ्रांस और यूरोपीय संघ जैसी ताकतों की दिलचस्पी बढ़ा दी है। परिणाम स्वरूप आईओआर में सामरिक प्रतिद्वंद्विता और प्रतिस्पर्धा में बढ़ोतरी हुई है। हिंद महासागर क्षेत्र में स्थिरता और समृद्धि सुनिश्चित करने के लिये साझा जिम्मेदारी और केंद्रित प्रयासों की आवश्यकता है। जलवायु परिवर्तन, समुद्र का बढ़ता स्तर और समुद्री प्रदूषण आईओआर में महत्वपूर्ण पर्यावरणीय चुनौतियां हैं। हिंद महासागर पर केंद्रित सातवां दो दिवसीय सम्मेलन पर्थ में आयोजित किया जा रहा है। सम्मेलन में भाग लेने गए विदेश मंत्री ने अपने ऑस्ट्रेलियाई समकक्ष पेनी वोंग से शुक्रवार को मुलाकात की और द्विपक्षीय व्यापक रणनीतिक साझेदारी, हिंद-प्रशांत क्षेत्र, पश्चिम एशिया की स्थिति और अन्य क्षेत्रीय तथा वैश्विक मुद्दों पर चर्चा की। सम्मेलन में 22 से अधिक देशों के मंत्री, 16 देशों के वरिष्ठ अधिकारी और 6 बहुपक्षीय संगठनों के प्रतिनिधि भी शामिल हो रहे हैं। सम्मेलन का विषय है- स्थाई और सतत हिंद महासागर की ओर। गौरतलब है कि सम्मेलन क्षेत्र के महत्वपूर्ण राज्यों और प्रमुख समुद्री साझेदारों को आम मंच पर लाने का प्रयास करता है ताकि क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास (एसएजीएआर) के लिए क्षेत्रीय सहयोग की संभावनाओं पर विचार-विमर्श किया जा सके।

हिंद महासागर सम्मेलन (आईओसी) 2016 में शुरू हुआ था और पिछले वर्षों में यह क्षेत्रीय मामलों पर क्षेत्र के देशों के लिए प्रमुख परामर्शदात्री मंच के रूप में उभरा है। हिंद महासागर क्षेत्र प्रमुख शक्तियों के बीच भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा के लिए आकर्षण का केंद्र है। प्रतियोगिता में रणनीतिक हित, प्रभाव और संसाधनों तक पहुंच शामिल है, जिससे तनाव और संघर्ष होते हैं। चीन हिंद महासागर में भारत के हितों और स्थिरता के लिए चुनौती रहा है। भारत के पड़ोसी चीन से सैन्य और ढांचागत सहायता प्राप्त कर रहे हैं। ऐसे में हिंद महासागर क्षेत्र में सभी भागीदारों के हित के लिए ये ज़रूरी है कि वो एक साथ रहें और इस क्षेत्र में सुरक्षा एवं स्थिरता के सामूहिक हित के लिए काम करें। देशों को अपनी सामाजिक संरचना की रक्षा करते हुए उग्रवाद और कट्टरवाद से उत्पन्न खतरों से निपटने के लिए आवश्यक समाधान सुनिश्चित करना चाहिए। सुरक्षित और स्थिर हिंद महासागर क्षेत्र के लिए आवश्यक सोच, नीति और दृष्टिकोण में प्रमुख बदलाव के साथ ही कई व्यावहारिक कदम उठाए जाने की भी आवश्यकता है।

लोकप्रिय विज्ञान लेखन और भारतीय शब्दावली

रणवीर सिंह फोगाट
सेवानिवृत्त अधिकारी
स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग
आईसीएमआर

> भारतीय परिवेश में सन 1800 से पहले विज्ञान, टेक्नोलॉजी और इंजीनियरिंग विधाओं में जो नए शब्द सामने आए हैं उनके बनने की प्रक्रिया तब थम गई थी, जब इस्लामिक सल्तनत के देश में स्थापित होने बाद भारत की प्राचीन भाषाओं के चिंतकों और शोधकर्मियों का काम थम गया।

भारत सरकार द्वारा मानव संसाधन मंत्रालय के अंतर्गत काम करने वाली संस्था 'वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग' द्वारा दो खंडों में प्रकाशित हिंदी भाषा में तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दावली कोश होने के बावजूद पिछले 45 वर्ष से हिंदी में विज्ञान की बात सामान्य और साधारण शैली में लिखते हुए अभी तक मैं अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध शब्दावली का इस्तेमाल करने के लिए विवश हूं।

वैज्ञानिक और तकनीकी शब्द अगर ऐसे हैं जिनसे आमजन परिचित नहीं और उन्हें समझने के लिए यदि उसे शब्दकोश का सहारा लेना पड़ेगा तो वह लेख को पढ़ेगा ही नहीं। इसके लिए मुझे लेखन प्रक्रिया के दौरान गैर हिन्दुस्तानी शब्द के भाव और निहितार्थ को समझाने के लिए व्याख्या देनी होती है। प्रिंट मीडिया में उपलब्ध स्पेस में ही अपनी बात कहनी होती है। लोग कहते हैं यह 'पॉपुलर साइंस' शैली है लेकिन मेरा मानना है कि 'आसान' भाषा में लिखा हुआ मजमून आमजन में से अगर पांच प्रतिशत ही पढ़ते हैं तो यह 'पॉपुलर' कैसे हुआ अर्थात न तो लोक विज्ञान हुआ और न ही 'प्रिय'? यह अलग बात है कि विज्ञान की समझ बढ़ाने के लिए रुचि अनुसार लोक शैली में लिखे गए विज्ञान लेख और फीचर्स को पाठक पढ़ लेते हैं। 'पॉपुलर साइंस' टर्म भी पश्चिम के अखबार, पत्रिका या पुस्तिक लेखन के भाषाई स्वरुप से लिया गया शब्द है।

भारतीय परिवेश में सन 1800 से पहले विज्ञान, टेक्नोलॉजी और इंजीनियरिंग विधाओं में जो नए शब्द सामने आए हैं उनके बनने की प्रक्रिया तब थम गई थी, जब इस्लामिक सल्तनत के देश में स्थापित होने बाद भारत की प्राचीन भाषाओं के चिंतकों और शोधकर्मियों का काम थम गया। सल्तनत और मुगल शासकों के दौर में ईरानी और अरबी मेडिकल सिस्टम्स, खगोल और वारफेयर टेक्नोलॉजी के आने से भाषा सिस्टम बदल कर अरबी-फारसी और बाद में उर्दू में हुआ। इसलिए हम साइंस और टेक्नोलॉजी कम्युनिकेशन में उन दिनों के जर्नल्सनुमा ग्रंथों और यात्रावृत्तों में वैसे ही शब्द देखने के आदी हो गए जैसा कि शासक की भाषा तय हुई। तिब्बिया मेडिसिन की शब्दावली भारतीय भाषाओं और भारतीय परिवेश में सन 1800 से पहले विज्ञान, टेक्नोलॉजी और इंजीनियरिंग विधाओं

> विज्ञान और टेक्नोलॉजी से संबंधित सामग्री में पाठकीय रुचि तभी पैदा होती है जब पाठक को मालूम हो कि कैसी और किस प्रकार की सामग्री कहां से और कैसे उपलब्ध होती है।

में जो नए शब्द सामने आए हैं उनके बनने की प्रक्रिया तब थम गई थी, जब इस्लामिक सल्तनत के देश में स्थापित होने बाद भारत की प्राचीन भाषाओं के चिंतकों और शोधकर्मियों का काम थम गया। सल्तनत और मुगल शासकों के दौर में ईरानी और अरबी मेडिकल सिस्टम्स, खगोल और वारफेयर टेक्नोलॉजी के आने से भाषा सिस्टम बदल कर अरबी-फारसी और बाद में उर्दू में हुआ। इसलिए संस्कृत के साइंटिफिक टेक्स्ट्स से बिलकुल अलग है। इतिहास में जो भी अनुसंधान कर्मी, जैसे कि आर्यभट, वराहमिहिर, चरक और सुश्रुत, अनेक अज्ञात हुनरमंद लोग हुए उन्होंने नई जानकारी की उत्पत्ति होने पर अपनी मातृभाषा में इसे बताने के लिए नए शब्द गढ़े।

जाहिर है जो साइंटिस्ट या टेक्नोक्रैट जिस भाषा का जानकार है वह अपनी भाषा की शाब्दिक धरोहर, जैसे कि लैटिन, ग्रीक, स्पेनिश, मंडारिन, बांग्ला, तमिल, मराठी और हिंदी में ही शब्द गढ़ेगा न कि अंग्रेजी या स्वाहिली में। मध्य-अठारहवीं सदी में जब विज्ञान और टेक्नोलॉजी में रिसर्च से नए ज्ञान के सृजन के प्रयासों में तेजी से वृद्धि हुई और नए ज्ञान की नहीं बल्कि इसे पब्लिश करके साझा करने और दूसरों से समर्थन पाने की तीव्र उत्कंठा बनी तो विज्ञान और टेक्नोलॉजी से संबंधित हज़ारों नए शब्द भी अस्तित्व में आए। कॉलोनियल टाइम्स में यूरोपियन देशों की कॉलोनीज में भी शासक देश की भाषा का वर्चस्व स्थापित हुआ तो उपनिवेशों में मातृभाषा में विज्ञान और टेक्नोलॉजी से संबंधित शब्दों की उत्पत्ति की सृजनात्मक और कुदरती प्रक्रिया को बड़ा धक्का लगा। सभी उपनिवेशों में विज्ञान और टेक्नोलॉजी में स्वामी देश द्वारा शोध से उत्पन्न जो शब्दावली बनी उसे ही इस्तेमाल करने की मजबूरी बनी। स्थानीय या वर्नाक्यूलार भाषाओं में खुद के इस्तेमाल के लिए भी एक बंधन के रूप में हाल में सामने आ रही औपनिवेशकालीन अध्येताओं ने इसे एक बाधा के रूप में पहचाना है। देखा गया है कि भारतीय भाषाओं ने खुद को इस मामले में रुपांतरित करके ही विकसित किया। फिर भी दिक्कतें तो हैं ही और वे इसलिए हैं कि हमारे विज्ञानी और टेक्नोक्रैट्स शोध कार्य करते समय तो अपनी भाषा में सोचते हैं लेकिन एक शोधपत्र लिखते समय वे उसी शब्दावली विज्ञान (टर्मिनोलॉजी) का इस्तेमाल करते हैं जिसका क्रमिक विकास पश्चिम में या अंग्रेजी भाषा के जानकारों से भरी लेबोरेट्री या वर्कशॉप में हुआ। मुझे नहीं लगता कि इस मामले में अब हम अपनी अलग लीक बना पाएंगे।

प्रसंगवश कहें तो आधुनिक रीति से समझे जाने वाले लोकशैली में लिखी जाने वाली वैज्ञानिक और तकनीकी लेखन की शुरुआत भारत में तमिल, मराठी और बंगाली भाषाओं में 19 वीं सदी के साठादि दशक से हुई लेकिन हिंदी में तो बीसवीं सदी के पहले दशक के पूरा होते ही 'विज्ञान' पत्रिका के प्रकाशन से यह यात्रा शुरू हुई। 'विज्ञान' पत्रिका के प्रारंभिक दशकों के अंक देखने से लगता है कि यह पश्चिम के पॉपुलर साइंस लेखन से ही अधिक प्रभावित रही और इसके लेखों में शुरूआती दौर से ही नवाचार (इनोवेशन) और क्रिटिकल एसेस्मेंट या भारतीय विज्ञान और शोध की 'पॉपुलर रिपोर्टिंग' के बारे में अधिक जिक्र नहीं किया गया। इसके उलट अंग्रेज़ और जर्मन इस मामले में अधिक सहज रहे क्योंकि उनके यहां हर विधा पर काम करने के लिए रॉयल सोसाइटीज मौजूद थीं जिनकी स्थापना अठारवीं या इससे पहले की सदी में होने से वहां वैज्ञानिक चिंतन, एक्सप्लोरेशन और शोध प्रकाशन और शोध गोष्ठियों के एक नियमित और चिरंजीवी प्रक्रिया को राजतंत्रीय आशीर्वाद मिलता रहा। कमोबेश या स्थिति यूरोप के सभी देशों में स्थापित हो चुकी थी। ब्रिटेन में उन्नीसवीं सदी से ही साधारण या सामान्य भाषा में विज्ञान की ऐसी पुस्तकों का प्रकाशन शुरू हो चुका था जिनमें लोकरुचि जागृत हुई थी। बाद में लोकरुचि शैली में उन्होंने कुछेक पत्रिकाओं का प्रकाशन शुरू किया जिनमें से 'न्यू साइंटिस्ट' अभी तक प्रकाशित होती है और ब्रिटेन में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी बेहद लोकप्रिय है। इसी तरह अमरीका से साइंस डाइजेस्ट, पॉपुलर साइंस, ओम्नी और साइंटिफिक अमेरिकन का प्रकाशन हुआ जिनमें से अब सिर्फ साइंटिफिक अमेरिकन ही जीवित है। इसका इंडियन एडिशन भी कुछेक साल से प्रकाशित किया जाता है।

विज्ञान और टेक्नोलॉजी से संबंधित सामग्री में पाठकीय रुचि तभी पैदा होती है जब पाठक को मालूम हो कि कैसी और किस प्रकार की सामग्री कहां से और कैसे उपलब्ध होती है। इंटरनेट युग के आगाज और संगठनों और संस्थाओं की वेबसाइट बनने से पहले संयोग से ही किसी लोकरुचि विज्ञान पत्र या पत्रिका के बारे में मालूम हुआ करता लेकिन वर्ल्डवाइड वेब होने से अब इसे आसानी से वे लोग ढूंढ सकते हैं जिनकी रुचि है। वेबसाइट से बहुत सी सामग्री अब फुल टेक्स्ट, फ्री, पीडीऍफ फॉर्मेट में डाउनलोड करके पढ़ी जा सकती है। पार्श्व- जिज्ञासा वाली बात यह जानना भी होना चाहिए कि सल्तनत और मुग़ल काल से पहले भारत में साइंटिफिक, टेक्निकल और इंजीनियरिंग से संबंधित शब्दावली का क्रमिक विकास कैसे होता रहा और यह किन संदर्भो और भाषाओं में विकसित हो पाई थी। इसके लिए भारतीय ज्ञान दर्शन के ग्रंथों -जैसे कि खगोल विज्ञान और समय की अवधारणों की व्याख्या करने वाले शब्द, गणित और गणनाओं से संबंधित शब्द और चिन्ह, आयुर्वैज्ञानिक टेक्स्ट्स, संगीत और साजों की शब्दावली, गृह निर्माण, वस्त्र-परिधान से संबंधित शब्दावली, मौसम और जल से जुड़ी हुई शब्दावलियां, खनन और धातु विज्ञान की शब्दावली, औजारों और इनकी सहायता से निर्मित होने वाली वस्तुएं जैसे कि आभूषण और बर्तन, ट्रांसपोर्ट व्हीकल्स, पशुओं और पशु चिकित्सा संबधित शब्दावली, औषधि और आहार संबंधी शब्दावली को हमें ढूंढ और संकलित करके कोश के रूप में प्रकाशित करना होगा। इस एक प्रयोजन से ही भारत में विज्ञान लेखन और प्रकाशन में आमजन की रुचि बनी रहेगी। कठिनाई यही है कि 500 साल पुराने शब्द क्या नई साइंस और टेक्नोलॉजी को उस रूप और प्रयोजन से बता पाने में सक्षम होंगे? इसके लिए हमें अंतर-भाषिक शब्दों का इस्तेमाल करना ही होगा क्योंकि इसी एक वजह से हम क्षेत्रीय स्तर (रीजनल लेवल) पर एक बहुभाषी देश में विज्ञान और टेक्नोलॉजी के पॉपुलर रूप की स्वीकार्यता बढ़ा पाएंगे।

प्रसंगवश

चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न के मायने

> खास बात यह है कि चौधरी चरण सिंह अपने खास वोट बैंक जाटों के अलावा अन्य पिछड़े वर्ग में भी खासी पैठ रखते थे। पिछड़े हिंदू ही नहीं, पिछड़े मुस्लिमों की बड़ी आबादी उनको वोट करती थी। खासकर उत्तर भारत के ग्रामीण परिकर में उनका दबदबा था।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सही कहते हैं कि वे चार साल काम और एक साल राजनीति करते हैं। वाकई उनका कथन सौ फीसदी सत्य साबित होता दिख रहा है। एक तरफ जहां इंडिया गठबंधन बिखर रहा है, वहीं दूसरी ओर एनडीए गठबंधन दिन-ब-दन मजबूत होता जा रहा है। शुक्रवार को दो पूर्व प्रधानमंत्रियों चौधरी चरण सिंह, नरसिंह राव और हरितक्रांति के जनक स्वामीनाथन को देश का सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न देने के ऐलान से न केवल यह उत्तर से दक्षिण को साधने की मुहिम है बल्कि आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर एक तरह से यह नरेंद्र मोदी का यह मास्टर स्ट्रोक ही माना जाएगा। इससे पहले वे बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर और भाजपा के संस्थापकों में एक पूर्व उप प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी को भी भारत रत्न सम्मान देने का ऐलान कर चुके हैं। चौधरी चरण सिंह की किसानों के मसीहा के रूप में पहचान है। इसमें कोई शक नहीं कि चौधरी साहब जीवन पर्यन्त कभी लोकदल, कभी भारतीय क्रांति दल, कभी जनता पार्टी और कभी जनता दल के जरिए देश के किसानों के लिए आवाज उठाते रहे। उनकी पैठ केवल उत्तर प्रदेश न होकर हरियाणा, पंजाब, मध्य प्रदेश, राजस्थान आदि राज्यों के किसानों तक थी। वे ग्रामीण भारत के खास किसान नेता थे। यही वजह रही कि वे जब तक पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे उत्तर भारत लगभग सभी राज्यों से उनके दल के सांसद जीते। राजनीति में इंदिरा गांधी, अटल बिहारी बाजपेई और चंद्रशेखर जैसे कद्दावर राजनेता भी उनका सम्मान करते थे।

गोलेश स्वामी
वरिष्ठ पत्रकार, लखनऊ

खास बात यह है कि चौधरी चरण सिंह अपने खास वोट बैंक जाटों के अलावा अन्य पिछड़े वर्ग में भी खासी पैठ रखते थे। पिछड़े हिंदू ही नहीं, पिछड़े मुस्लिमों की बड़ी आबादी उनको वोट करती थी। खासकर उत्तर भारत के ग्रामीण परिकर में उनका दबदबा था। उत्तर भारत में उनकी राजनीतिक हैसियत का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि जब उन्होंने अपने बेटे चौधरी अजित सिंह को अपनी राजनीतिक विरासत सौंपी, तब करीब तीन दर्जन सांसद उनके पास थे। चौधरी चरण सिंह दो बार यूपी के मुख्यमंत्री, केंद्र सरकार में गृह मंत्री और बाद में देश के प्रधानमंत्री बने। उनकी विधानसभा की सीट छपरौली को पूरे देश में पहचान मिली। फिर वे बागपत से सांसद चुने जाते रहे। वे कहते थे कि भारत की समृद्धि का रास्ता किसानों के खेत-खलिहानों से जाता है। जिस दिन इस देश का किसान समृद्ध होगा, भारत भी उतना ही समृद्ध होगा। जहां तक उनकी राजनीतिक विरासत का सवाल है चौधरी साहब कांग्रेस छोड़ने के बाद कांग्रेस विरोधी राजनीति करते रहे, लेकिन उनके सुपुत्र चौधरी अजित सिंह (जो अमेरिका में साफ्टवेयर इंजीनियर थे) ने कांग्रेस का थामन थाम लिया। वे संघर्ष के रास्ते पर चलने के बजाए सत्ता की राजनीति के हामी रहे, इसीलिए धीरे-धीरे हाशिए पर आए गए। यहां तक कि एक समय जहां उनके पास करीब तीन दर्जन सांसद थे, अंत में एक भी सीट नहीं जीत सके।

अपनी मजबूत विरासत वाली सीट बागपत भी खो दी। चौधरी अजित सिंह के बेटे जयंत चौधरी भी नहीं जीते। चौधरी अजित सिंह के निधन के बाद जयंत चौधरी यानी चौधरी चरण सिंह के पौत्र जयंत चौधरी उनकी राजनीतिक विरासत को आगे बढ़ाने का कार्य कर रहे हैं। पिछले की चुनावों में उन्होंने सपा प्रमुख अखिलेश यादव से हाथ मिलाया था, लेकिन चौधरी चरण सिंह को भारत रत्न दिए जाने और राजनीतिक हवा का रुख देखकर उनका एनडीए में शामिल होना निश्चित हो गया है। बस आधिकारिक घोषणा बाकी है। जयंत चौधरी के एनडीए में शामिल होने से निश्चित रूप से जाट लैंड खासकर यूपी के पश्चिमी यूपी में भाजपा को मजबूती मिलेगी।

हल्द्वानी पर 'किसकी टिकी नजर'

ये हुआ क्या मेरे शहर को...। मैं हल्द्वानी हूं। देवभूमि कहे जाने वाले उत्तराखंड का प्रवेश द्वार हूं। साथ ही कौमी एकता की मिसाल भी रहा हूं। यहां दीपावली पर घर घर दीप जला आतिशबाजी होती है। ईद पर हर समुदाय रोजा इफ्तार में शामिल होता है। गुरुद्वारे पर सभी धर्मों के लोग शीश नवाने पहुंचते हैं और क्रिसमस डे पर हर समुदाय चर्चों पर प्रार्थना करने पहुंचता है और सेंटा क्लॉज से उपहार लेता है।

संदीप मेवाड़ी
वरिष्ठ पत्रकार

> अब बात करते हैं 'उन नजरों' की। घटनाक्रम चल रहा था मालिक के बगीचे में। वहां पर लोगों के विरोध का आभास प्रशासन को भी था।

बात करते हैं शहर के बनभूलपुरा क्षेत्र में गुरुवार को हुए 'धमाके' की। दोपहर तक सब कुछ सामान्य दिख रहा था। बनभूलपुरा क्षेत्र में मलिक का बगीचा कहे जाने वाले क्षेत्र में सरकारी जमीन पर अतिक्रमण कर बनाए गए घरों और धार्मिक स्थलों को हटाने का मामला कई दिनों से शहर की सुर्खियों में बने रहने के साथ ही घर घर लोगों की जुबान पर तैर रहा था। अतिक्रमण ध्वस्त करने के विरोध में हाईकोर्ट में याचिका भी दायर की गई थी। न्यायालय ने गुरुवार को इस मामले में अतिक्रमणकारियों को राहत देने से इंकार कर दिया, साथ ही सुनवाई के लिए अगली तारीख 14 फरवरी की नियत कर दी। न्यायालय का निर्णय क्या आया, प्रशासन को लगा अब कोई बाधा नहीं है अतिक्रमण ध्वस्त करने में। कुछ तैयारी पहले से थी और कुछ आनन फानन में कर ली गई। शाम करीब चार बजे अतिक्रमण ध्वस्त करने को प्रशानिक अमला, नगर निगम और पुलिस की टीम लेकर अतिक्रमण ध्वस्त करने के लिए मलिक का बगीचा (बनभूलपुरा) के लिए कूच कर गया। पहले कुछ लोग विरोध के लिए मौके पर पहुंचे और देखते देखते आसपास की गलियों, घरों और छतों से पत्थरों की बरसात शुरू हो गई। इस अप्रत्याशित पथराव से बचने के लिए प्रशासन, पुलिस और नगर निगम के साथ ही मीडिया कर्मी जगह ढूंढने लगे। किसको पता था कि ये मानसूनी बरसात है। पुलिस इस पर जितना काबू करने की सोचती, पत्थरों के जगह जगह जमा मेघ उतना ही तेज बरसते जाते। वायरलेस सेट और मोबाइल पर इसकी सूचना जिले के साथ ही पूरे उत्तराखंड में फैलने लगी। पुलिस बल बचाव और शांति व्यवस्था के लिए मौके की ओर दौड़ गया। पर रणनीति तो पहले से ही तैयार थी।

पुलिस मलिक का बगीचा क्षेत्र में हालात काबू भी नहीं कर पाई थी कि बनभूलपुरा थाने में लोगों के झुंड ने हमला कर दिया। तब तक धरा में तो अंधेरा हो चुका था, लेकिन बनभूलपुरा उपद्रवियों की आग से धधक चुका था। नैनीताल जिले से लेकर देहरादून का मुख्यमंत्री कार्यालय तक की नजर हल्द्वानी के हालात और इस पर नियंत्रण की रणनीति बनाने में टिक चुकी थी। देश भर के इलेक्ट्रॉनिक और इंटरनेट मीडिया में लीड खबर में हल्द्वानी धधक रहा था। कुमाऊं भर से पुलिस फोर्स, पीएसी, आईआरबी के साथ ही सेना की मदद मांगी जा रही थी। दूसरी ओर बनभूलपुरा में घिरे पुलिस और मीडिया के जवान अपनी जान की दुहाई मांगने के साथ ही इस चक्रव्यूह से निकलने के लिए जतन में जुटे थे। हालात यहां भी नहीं रुके, आगजनी और पथराव के साथ ही अब गोलियों की तड़तड़ाहट भी बनभूलपुरा की फिजाओं में गूंजने लगी थी। रात करीब नौ बजे तक पूरा बनभूलपुरा क्षेत्र छावनी में तब्दील हो गया और जिलाधिकारी ने कर्फ्यू घोषित कर दिया।

अब बात करते हैं 'उन नजरों' की। घटनाक्रम चल रहा था मालिक के बगीचे में। वहां पर लोगों के विरोध का आभास प्रशासन को भी था। पर... पूरे बनभूलपुरा का आग का गोला बन जाना। थाने के बाहर खड़े दर्जनों वाहन फूंक देना, पेट्रोल बम फेंकना, पत्थरों की बारिश, जवानों और मीडियाकर्मियों को पीट पीटकर जान लेने तक आमदा होना। इससे तो यही लग रहा है कि अमन और शांति की मिसाल देने वाले इस शहर में कुछ ऐसी नजरें टिक चुकी हैं, जो लोगों की भावनाओं को गुमराह कर फिजा बिगड़ने का चक्रव्यूह रच चुकी हैं। जरूरत अब प्रशासन को 'अभिमन्यु' की है। जो 'इन नजरों' को न केवल सामने लाए, बल्कि ऐसा सबक सिखाए कि ये शहर ही नहीं पूरे राज्य और देश के लिए मिसाल बने। यही नहीं, प्रशासन को अब खुद पर भी मंथन करना होगा। खुफिया एजेंसियों को भी अपनी कार्यप्रणाली पर विचार करना होगा। इतना लाव लश्कर होने के बाद भी इतनी बड़ी नाकामयाबी। प्रशासनिक अफसर क्यों नहीं मामले की संवेदनशीलता को समझ पाए। अगर उसकी तरफ से सही तैयारी की गई थी तो क्या खुफिया एजेंसियां धार्मिक अतिक्रमण तोड़ने पर लोगों की प्रतिक्रिया का अंदाजा नहीं लगा पाई। क्या दफ्तरों में बैठकर ही अफसरों को फीडबैक दिया जाता रहा।

सोशल फोरम

हमारे जमाने की प्रेमिकाएं

हमारे दौर में वैलेंटाइन डे या सप्ताह एक अनजानी-सी चीज़ हुआ करती थी। हां, प्रेम की भावनाएं तब भी थीं, वे उबाल भी मारती थीं और यदाकदा प्रोपोज भी होती थीं। उन दिनों में प्रेम के अंदाज़ अलग और तेवर आज से बहुत जुदा हुआ करते थे। इश्क़ का मतलब चाहे पता न हो, लेकिन ज़ांबाजी इतनी थी कि इश्क के प्रस्ताव तब स्याही से नहीं, खून से लिखे जाते थे। स्कूली दिनों में मैंने खून से तो नहीं, उससे मिलती-जुलती लाल स्याही से ख़त लिखकर अपनी एक सहपाठी को प्रोपोज़ किया था। ख़त 'ये मेरा प्रेमपत्र पढ़कर तुम नाराज़ ना होना' से शुरू हुआ और उस दौर के सबसे धांसू शेर के साथ अंजाम तक पहुंचा था-लिखता हूं ख़त खून से स्याही न समझना / मरता हूं तेरे नाम पे जिंदा न समझना। जैसा कि तब आमतौर पर होता था, ख़त घूम-फिरकर क्लास टीचर के हाथों में पहुंच गया। उसके बाद प्रणय-निवेदन का जो अवदान मिला, वह था हथेली पर सौ- पचास छड़ी और क्लास रूम के बाहर स्कूल की आखिरी घंटी तक मुर्गा बनकर अपनी उस एकतरफा प्रेमिका और उसकी सहेलियों का भरपूर मनोरंजन।

ध्रुव गुप्त
सेवानिवृत्त आईपीएस

प्रेमिका ज्यादा 'कोमल-हृदय' थी सो चिट्ठी वाली बात घर तक भी पहुंचा दी गई। फिर हुआ घर में भी इश्क़ का भूत झाड़ने का सिलसिला शुरू। उफ़्फ़ कैसी तो जालिम होती थीं हमारे ज़माने की प्रेमिकाएं! ऐसी दुर्दशा करवाने के बाद हमदर्दी का मरहम लगाना तो दूर, मुस्कुराती हुई बगल से ऐसे निकल जाती थीं कि उस दौर का दूसरा सबसे लोकप्रिय शेर जुबान पर आ जाता था-आकर हमारी कब्र पे तुमने जो मुस्कुरा दिया/ बिजली चमक के गिर पड़ी सारा कफ़न जला दिया। उसके बाद स्कूल-कॉलेज में जिस पर भी प्यार आया, वह अव्यक्त ही रहा। प्रणय-निवेदन का वैसा खूंखार प्रतिदान पाकर दोबारा प्रोपोज करने का साहस कौन जुटा पाता है? अब हिम्मत आई भी है तो तब जब अपने दिन बीत चुके हैं-सब कुछ लुटा के होश में आए तो क्या किया !

-फेसबुक वॉल से

विवाह संस्था को बचाना होगा

उच्चतम न्यायालय की जस्टिस बीवी नागरथना एवं आगस्टाइन जॉर्ज मसीह की पीठ ने हाल ही में एक मामले में टिप्पणी देते हुए कहा कि विवाह नामक संस्था को बचाना है। भले ही फिर आप हमे पुरातनपंथी ही क्यों ना कहे। निर्णय एक 44वर्षीय अविवाहित महिला की सेरोगेसी प्रेग्नेंसी का था। आजाद, कमाऊ, सामाजिक हैसियत रखने वाली एक महिला अकेलेपन से जूझने के लिए सिंगल मदर बनने को तैयार है पर विवाह कर के नहीं। ये सचमुच भारत जैसे देश में विचारणीय है कि सुप्रीम कोर्ट भी आज विवाह संस्था को बचाने के लिए नसीहत देने को मजबूर हुआ है।

प्रियदर्शिनी दिव्या भारद्वाज
स्वतंत्र विचारक
उझानी, बदायूं

भारतीय जीवन शैली में विवाह केवल दो व्यक्तियों की आवश्यकताओं के आदान प्रदान का साधन नहीं था। वरन ये एक उन्नत समाज के निर्माण की व्यवस्था थी। सप्तपदी के वचन जीवन की सुचारुता का आश्वासन देते थे। संतान को यशस्वी बनाने का दायित्व लेना ही पति पत्नी होना था। उत्तम विवाह एवम उत्तम दंपती उत्तम परिवार वा समाज की गारंटी थे। बड़ी पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को नई पीढ़ी के निर्माण के लिए आशीर्वाद देकर आगे बढ़ाती थी। आज विवाह आशीर्वाद देकर नहीं आशंकाएं देकर किए जाने लगे। आश्वासन और आशा नहीं वरन अपेक्षाएं देकर बच्चों को समाज के मैदान में उतार दिया जाता है। संबंधों के प्रारंभ ही अहम और अविश्वास से होने लगे इस स्थिति ने विवाह संस्था को परिवार व्यवस्था को बड़ी चोट पहुंचाई है।

यदि इसके कारणों पर ध्यान दें तो पाएंगे कि स्त्री पुरुष समानता की व्याख्या बहुत भ्रामक रूप से समाज में प्रसारित हुई। समानता का तात्पर्य केवल धन और सामाजिक पद प्रतिष्ठा से जोड़ा जाने लगा। जिसकी प्राप्ति के लिए पारिवारिक दायित्व को बाधा स्वरूप प्रस्तुत कर स्त्री को धीरे-धीरे दूर किया गया। दूसरे जब स्त्री ने बाहर की दुनिया से तालमेल बिठाती स्त्री अपने अंतर के स्त्रीत्व को कमजोरी मानने लगी। तीसरा आपाधापी के इस युग में वैचारिक एवम भावात्मक दृष्टिकोण शून्य की ओर बढ़ने लगे। वैवाहिक जोड़ो में आपसी समझ का अभाव आने लगा। अब कोई प्रेम में झुकने को तैयार नहीं हैं।

चौथा समाज में विविध प्रकार की मॉडरनाइज्ड पद्धतियों ने विवाह की सांस्कृतिक रस्मों तथा परंपराओं को नकार दिया है। ये परंपराएं परिवार के महत्व की व्याख्या करती थी। तरह तरह के गीत और रस्मों के माध्यम से जीवन को सुलझाने की शिक्षा देती थी। जिन्हें व्यापारवाद ने फोटोशूट और डेस्टिनेशन वेडिंग पर लाकर पटक दिया है। पांचवा उपयोग के दौर में हर निर्णय उपयोगिता के सिद्धांत पर तय हो रहा है इसलिए भी विवाह अनुपयोगी माने जाने लगे। उच्चतम न्यायालय ने खासतौर से कहा कि हम पाश्चात्य देशों की भांति इन साधनों को भारतीय समाज में स्वीकार नहीं कर सकते। भारत की जनसंख्या यूं ही कीर्तिमान स्थापित कर रही है। कुछ पश्चिमी देशों में प्रजनन के लिए माता को सरकारी सहायता मिलती है और महिलाओं ने इसी को अपना व्यापार बना रखा है। भारत जैसे पारंपरिक देश में विवाह संस्था यहां के समाज का बुनियादी ढांचा है। यहां सिंगल मदर सिंगल फादर का चलन पचाना मुश्किल है। यहां माता पिता ही नहीं, बड़ी माता, छोटी माता, बुआ ,मौसी, बड़े पापा, छोटे पापा, बाबा,दादी, नाना, नानी मामा मामी और भी ढेरों रिश्ते। ये रिश्ते नाते और रिश्ते निभाने की पद्धतियां छोटे बच्चों को सामाजिक स्वीकृतियां देती थी। उन्हें आत्मविश्वास और सुरक्षा देती थी। बढ़ते तलाक, अलगाव और हिंसा के केस ये पुरजोर स्वरों में कह रहे हैं कि विवाह संस्था को भारतीय समाज में पुनः पुरातन प्रकृति से ही स्थापित करना होगा ।

अध्यात्म में मौन महत्वपूर्ण

अध्यात्म जगत में मौन का सदा से ही महत्वपूर्ण स्थान रहा है, क्योंकि अध्यात्म के शिखर को छूने में इस मौन का प्रमुख योगदान होता है। इसलिए हमारी संस्कृति में मौन को किसी भी व्यक्ति के लिए आध्यात्मिक शिखर तक पहुंचने का एक सटीक एवं शाश्वत माध्यम माना गया है।

प्रो. विवेकानंद तिवारी
अध्यक्ष, आंबेडकर पीठ
एचपीयू, शिमला

यही कारण है कि हमारे तमाम ऋषि-मुनियों और साधू-संतों ने मौन को अपनी आध्यात्मिक साधना का एक महत्वपूर्ण अंग बनाया, इसे प्रतिष्ठित किया। मौनी अमावस्या के दिन भगवान श्रीहरि विष्णु एवं भगवान शिव की पूजा का विधान है।

माना जाता है कि अमावस्या की सभी तिथियों में से मौनी अमावस्या को बेहद उत्तम माना गया है। इस खास अवसर पर मौन रहना शुभ होता है। मौनी अमावस्या के दिन पवित्र नदी में स्नान करना फलदायी होता है। इस दिन श्रद्धा भाव से भगवान विष्णु की पूजा-अर्चना की जाती है। इसके अलावा दान भी किया जाता है। माना जाता है कि मौनी अमावस्या के दिन दान करने से पितरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है।

मौनी अमावस्या के दिन की शुरुआत भगवान विष्णु के ध्यान से करके पवित्र नदी में स्नान करके दान किया जाता है। मान्यता के अनुसार, इस दिन पवित्र नदी या गंगाजल और पानी से स्नान करने से पितरों को मोक्ष की प्राप्ति होती है।

हल्द्वानी में मचे बवाल के बीच अब उप्र में भी अलर्ट

लखनऊ, अमृत विचार : हल्द्वानी (उत्तराखंड) में मचे बवाल के मद्देनजर उप्र में भी अलर्ट जारी कर दिया गया है। सभी जिलों में अतिरिक्त सतर्कता बरतने के साथ ही संवेदनशील क्षेत्रों में कड़े सुरक्षा प्रबंध सुनिश्चित कराए जाने के निर्देश दिए गए हैं। एक संप्रदाय विशेष के इलाकों में सुरक्षा एजेंसियों को खास नजर रखने को कहा गया है। वहीं जुमे की नमाज के चलते शुक्रवार को मस्जिदों चाक-चौबंद सुरक्षा इंतजाम रहा। नमाज से पहले पुलिस और पीएसी तैनात रही। डीजीपी प्रशांत कुमार ने उत्तराखंड से सटे सभी जिलों को हाई अलर्ट पर रहने के आदेश दिए हैं। साथ ही उधर से आने वाले वाहनों और लोगों की चेकिंग करने के भी निर्देश दिए गए हैं। पुलिस मुख्यालय की ओर से जारी निर्देश में धर्मगुरूओं के साथ समन्वय बनाने तथा सोशल मीडिया पर नजर रखने कहा गया है। अफवाह फैलाने वालों के खिलाफ तत्काल और सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए गए है।

2047 तक सपा की वापसी की कोई संभावना नहीं है : केशव मौर्य

जातिवार जनगणना को लेकर सपा विधायकों ने किया वॉकआउट, जातिवार जनगणना की विरोधी न तो भाजपा और न मैं हूं

राज्य ब्यूरो,लखनऊ

अमृत विचार : विधान परिषद में नेता सदन एवं उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि सपा के लोगों के पास मुद्दों का अभाव है। जातिवार जनगणना की विरोधी न तो भाजपा है और न ही मैं केशव मौर्य। जनगणना केन्द्र का विषय है। जब ये सरकार में थे तब इन्होंने कभी ध्यान नहीं दिया। इसलिए अब 2047 तक इनकी वापसी की कोई संभावना नहीं है। सरकार के जवाब से असंतुष्ट सपा सदस्यों ने सरकार को आरक्षण विरोधी बताते हुए सदन से वाक आउट किया।

शुक्रवार को शून्य प्रहर में कार्य स्थगन के रूप में कार्य स्थगन के रूप में उठाए गए जातिवार जनगणना के सवाल पर उप मुख्यमंत्री जवाब दे रहे थे। सदन में सपा और सत्तापक्ष के बीच खूब तीर चले और नोक-झोंक भी हुयी। स्वामी प्रसाद मौर्य ने

कहा आरक्षण के मामले में भाजपा की कथनी-करनी में अन्तर है। जवाब से असंतुष्ट सपा के सदस्य सरकार पर आरक्षण विरोधी और पिछड़ों का अपमान कराने का आरोप लगाते व नारेबाजी करते हुये सदन से वाक आउट कर गये।

भोजनावकाश के बाद डॉ.सरोजनी अग्रवाल के सभापतित्व में सदन की कार्यवाही शुरू हुई, विधान सभा द्वारा पारित उप्र निजी विश्वविद्यालय (संशोधन) विधेयक, 2024 को विधान परिषद के प्रमुख सचिव ने सदन के पटल पर रखा। इसके बाद सत्ता पक्ष के विधायकों ने बजट की खूबियां गिनाते हुये समर्थन किया, वहीं सपा के डॉ.मान सिंह सरकार को बीएसयनएल, एलआईसी, एयरपोर्ट आदि को बेचने वाली सरकार बताते हुए कहा कि मैं इस बजट का विरोध करता हूं। इसके अलावा कार्यसूची की मदों को निपटाया गया। शाम पांच बजे शनिवार 11 बजे तक के लिए सदन स्थगित कर दिया गया है।

रिकार्ड गायब कर मृतक आश्रित में दूसरे को नौकरी : बसपा के भीमराव अम्बेडकर ने बरेली की कमलादेवी के पति जमुना प्रसाद की मृत्यु के बाद मृतक आश्रित में नियुक्ति न देने और मृतक जमुना के संबन्धित रिकार्ड कार्यालय से गायब कर, उसी नाम के कर्मचारी के आश्रितों को नौकरी देने का मामला उठाया। नेता सदन ने कहा कि मामला संवेदनशील है। डीएम पीलीभीत का तत्काल सूचना उपलब्ध कराने का निर्देश दिया है। आख्या आते ही हर संभव प्रयास किया जाएगा तथा सदन को भी अवगत कराया जायेगा।

निःशुल्क शिक्षा में अनियमित्ता की होगी जांच : निर्दलीय समूह के राजबहादुर सिंह चंदेल एवं डॉ. आकाश अग्रवाल ने निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था अधिनियम की अनियमितता व फर्जी प्रमाण पत्र लगाकर हो रहे दुरूपयोग का मामला कार्य स्थगन के रूप में उठाया। अभिभावकों के आय प्रमाण पत्र और बच्चों के आधार कार्ड की जांच की जाये। बेसिक शिक्षा मंत्री संदीप सिंह ने बताया कि बीएसए आगरा को प्रकरण की जांच के आदेश दिये गये हैं। तीन खण्ड शिक्षा अधिकारी जांच करेंगे। अधिष्ठाता डॉ. जयपाल सिंह 'व्यस्त' ने कहा जांच कमेटी में तीन खण्ड शिक्षा अधिकारी की जगह कोई एसडीएम अथवा तहसीलदार स्तर के अधिकारी से जांच कराये तो बेहतर होगा।

सत्यापन के बाद ही होगा सामूहिक विवाह, भ्रष्टाचार बर्दाश्त नहीं

लखनऊ, अमृत विचार : राज्य विधानसभा में शुक्रवार को मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना के तहत बलिया में हुए फर्जीवाडे का मामले का उठा। सरकार की ओर से जवाब देते हुए इसी मुद्दे पर समाज कल्याण राज्यमंत्री असीम अरूण ने कहा कि संबधित मामलें में तीन अधिकारियों की गिरफ्तारी हुई है। ग्यारह दलालों को पहले ही जेल भेजा जा चुका है। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार के आरोपियों को किसी भी कीमत बख्शा नहीं जायेगा। इस प्रकरण में भुगतान रोका गया है। अब सत्यापन के बाद ही इस प्रक्रिया में लोगों को शामिल किया जाएगा। किसी भ्रष्टाचारी को बख्शा नहीं जायेगा।

इससे पहले समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ सदस्य लाल जी वर्मा ने शून्य प्रहर में यह मामला उठाते हुए कहा कि मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना में कुल 537 लोगों का विवाह कराया गया। जिसमें आधे से ज्यादा अपात्र थे। इस योजना में पूरी तरह से भ्रष्टाचार है।

जमीन अधिग्रहण नहीं, गन्ने बकाए का भुगतान भी हुआ

लखनऊ। शून्य प्रहर में ही उठे एक सवाल के जवाब में गन्ना विकास और पशुधन मंत्री चौधरी लक्ष्मी नारायण ने कहा कि जिस किसान की आत्महत्या की बात कही गयी है उससे वन विभाग ने अपनी जमीन वापस ली थी उसकी जमीन का अधिग्रहण नहीं किया गया था। उसके गन्ने का बकाए का भुगतान भी कर दिया गया था। शून्य प्रहर में ही किसानों की आत्महत्या के उठे एक मुद्दे शिक्षा मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने कहा कि सपा के शासन काल में सरकारी जमीन पर कब्जे कराए जाते थे। किसी भी विभाग की जमीन यदि कोई कब्जा करता है तो उसे सरकार खाली करायेगी। इस मुददे पर सदन में मौजूद नेता प्रतिपक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि यदि सरकार यह मानती है कि सपा की सरकार में यदि जमीनों पर कब्जे हुए है तो उसकी सूची जारी करे। नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि लखनऊ में जो लोग सौ-सौ सालों से काबिज थे भाजपा के लोग उनकी जमीने कब्जा कर रहे है। इससे पहले सपा सदस्य अतुल प्रधान ने बुन्देलखण्ड से पश्चिमी उत्तर प्रदेश तक किसानो द्वारा आत्महत्या किए जाने का मामला उठाया था। सपा के ही सदस्य मनोज कुमार पारस ने भी किसानों द्वारा आत्महत्या किए जाने का मामला उठाया। उन्होंने कहा कि किसानों को उपज का सही दाम न मिलने या फिर कर्ज से दबकर किसान आत्महत्याएं कर रहे है।

समीक्षा बैठक में डीएम आगरा से अभद्रता, मारपीट का प्रयास

संवाददाता, आगरा

- बरौली अहीर ब्लॉक के खंड विकास अधिकारी के खिलाफ हुई एफआईआर
- बैठक में विकास कार्य में शिथिलता बरतने पर डीएम ने किए थे सवाल जबाव

अमृत विचार : ताजनगरी में प्रशासनिक अधिकारियों की बैठक में चौंकाने वाला मामला हुआ। डीएम और बीडीओ के बीच हुई तकरार हाथापाई तक आ पहुंची। गाली गलौच और धमकी भी दी गई। अधिकारियों के बीच हुई रार की गूंज शासन तक पहुंच गई है। विकास कार्य को लेकर हुई समीक्षा बैठक में जिलाधिकारी से हर दर्जे की बदसूलकी की गई। डीएम और बीडीओ बरौली अहीर के बीच विवाद हुआ।

देर शाम बीडीओ के खिलाफ रकाबगंज थाने में एफआईआर दर्ज कराई गई है। इस मामले में शासन स्तर से भी कार्रवाई की जा सकती है। डीएम ने पूरे मामले से शासन को भी अवगत करा दिया है। एडीओ पंचायत, खंदौली पंकज कुमार ने रकाबगंज थाने में एफआईआर दर्ज कराई है कि जिलाधिकारी शिविर कार्यालय पर डीएम की अध्यक्षता में विकास कार्यों को लेकर समीक्षा बैठक आहूत की गई थी। बैठक में सभी प्रशासनिक अधिकारी मौजूद थे। डीएम भानु चंद गोस्वामी सभी ने शासन की योजनाओं के बारे में जानकारी कर रहे थे।

खंड विकास अधिकारी अनिरुद्ध सिंह चौहान से जैसे ही योजनाओं के बारे में पूछा तो वह उल्टे सीधे जबाव देने लगे। इस पर डीएम ने नाराजगी जाहिर की तो वह उनसे ही अभद्रता करने लगे। बैठक में मौजूद अन्य अधिकारियों ने उन्हें समझाने का प्रयास किया तो वह आग बबूला हो गए और उन्होंने अपना आपा खो दिया और वह डीएम को गाली गलौच करने लगे। यहां तक उन्होंने डीएम से हाथापाई भी करनी चाही लेकिन मौजूद लोगों ने ऐसा होने से रोक लिया। बीडीओ ने डीएम को धमकी भी दी कि उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ पायेगा। बीडीओ के इस रवैये से आहत डीएम बैठक से चले गए और शासन को पूरे मामले से अवगत कराया। बीडीओ भी अपनी गाड़ी में बैठकर चले गए। इस मामले में एडीओ पंचायत खंदौली, पंकज कुमार ने थाना रकाबगंज में बीडीओ अनिरुद्ध सिंह के खिलाफ एफआईआर दर्ज करा दी है। इस मामले के बाद बीडीओ से बात करने की कोशिश की गई तो उनका मोबाइल फोन बंद आ रहा था। बताया जा रहा है कि इस विवाद के बाद वह देर शाम तक अपने आवास पर भी नहीं पहुंचे थे। इस घटना से प्रशासनिक अधिकारियों के होश उड़ गए है।

पांच लाख का इनाम, एक साल में खोज नहीं पायी एसटीएफ

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- गुड्डू मुस्लिम, साबिर और अरमान अभी शिकंजे से हैं बाहर

अमृत विचार: हार्डकोर क्रिमिनल पर लगाम कसने के लगातार हो रहे सरकारी दावों के बीच एक बड़ा सच यह है कि डॉन गुड्डू मुस्लिम समेत प्रयागराज के चर्चित उमेश पाल हत्याकांड के तीन वांटेड शूटरों को एक साल से एसटीएफ-उप्र पुलिस खोज नहीं पा रही है। खास बात यह है कि शिकंजे से बाहर खुली हवा में सांस ले रहे गुड्डू के अलावा अरमान और साबिर मोस्ट वांटेड सूची में शुमार है और इनकी गिरफ्तारी पर पांच-पांच लाख रुपये का इनाम भी घोषित हैं। इससे माफिया-दुर्दांत अपराधियों पर नकेल कसने की जिम्मेदारी वाले विभाग और उसके आला अफसरान की भूमिका सवालों के कठघरे में हैं।

पुलिस महकमें के कई वरिष्ठ अफसर इसे एसटीएफ-उप्र पुलिस की पूरी तरह नाकामयाबी मानने को तैयार नहीं हैं। एसटीएफ के अफसरों से बातचीत में भी बातचीत में कुछ ऐसे ही संकेत मिलते हैं। आधिकारिक रुप से वह कहते हैं कि अरे पकड़ लिए जाएंगे। ऐसा लगता है कि शूटरों की गतिविधियां उन तक है, और उन्हें शिकंजे में लाने को लेकर उनकी अभी कोई रुचि नहीं हैं। इस सवाल का जवाब बातचीत में स्पष्ट नहीं हो पाता है। वहीं दूसरी ओर इन वांटेड शूटरों को सलाखों के पीछे भेजने में प्रयागराज कमिश्नरेट पुलिस की भी प्रभावी सक्रियता नहीं दिख रही है।

एक साल में उनके खिलाफ कार्रवाई के नाम पर सिर्फ उनके घरों की कुर्की तक कर सकी है, जहां सिर्फ दीवारें ही बची थीं। प्रयागराज में 24 फरवरी 2023 को दिन-दहाड़े उमेश पाल और उनके दो गनर की हत्या कर दी गई थी। फिल्मी स्टाइल में हुई यह वारदात प्रदेश की कानून-व्यवस्था को कठघरे में खड़ा करने वाली थी।

शुक्रवार को बरेली इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति डॉक्टर केशव कुमार अग्रवाल, प्रति कुलाधिपति डॉक्टर अशोक अग्रवाल और कैंट विधायक संजीव अग्रवाल लखनऊ में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से उनके सरकारी आवास पर मुलाकात करते हुए। इस दौरान उन्होंने मुख्यमंत्री के साथ प्रदेश के औद्योगिक विकास समेत विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। ● अमृत विचार

खेल छात्रावासों में दाखिले के लिए आवेदन अगले महीने से

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचारः प्रदेश भर के खेल छात्रावासों में दाखिले के लिए फार्म अगले महीने से मिलने शुरू हो जाएंगे। 16 खेलों के लिए प्रदेश भर के 44 छात्रावासों में खिलाड़ियों के दाखिले के लिए खेल विभाग तैयारी में जुट गया है। विभागीय अधिकारियों ने सभी छात्रावासों के मूल्यांकन की रिपोर्ट भी खेल निदेशालय भेज दी है। किस छात्रावास में कितनी सीटें खाली हैं, इसका ब्यौरा तैयार किया जा रहा है। इसके बाद खेल विभाग दाखिले के लिए फार्म उपलब्ध कराएगा। प्रदेश भर के सभी सरकारी स्टेडियम में यह फार्म उपलब्ध कराए जाएंगे।

खेल विभाग के अधिकारियों के अनुसार प्रदेश भर के छात्रावासों में दाखिले की प्रक्रिया अगले महीने शुरू की जाएगी। दाखिले के लिए चयन ट्रायल कब और कहां आयोजित किए जाएंगे, इसकी जगह और तिथियां तय की जा रही है। इसके लिए क्रीड़ा अधिकारियों की तैनाती भी की जानी है। अभी अधिकांश स्कूलों में परीक्षाएं चल रही हैं। परीक्षाएं खत्म होते ही सभी स्टेडियमों में दाखिऐ के लिए फार्म मिलने शुरू हो जाएंगे। 15 अप्रैल तक दाखिले की प्रक्रिया पूरी कर ली जाएगी। खेल निदेशालय के निदेशक डॉ. आरपी सिंह के अनुसार दाखिले की प्रक्रिया जल्द शुरू की जाएगी।

पूर्व ओलंपियन देंगे छात्रावास के खिलाड़ियों को प्रशिक्षण

छात्रावासों के खेल स्तर सुधारने को खेल विभाग पूर्व ओलंपियन और एशियन गेम्स के पदक विजेताओं को द्रोणाचार्य पदों पर तैनात करने की तैयारी में है। इन द्रोणाचार्यों को प्रति माह डेढ़ लाख रुपये का भुगतान भी किया जाएगा। प्रदेश भर में 50 ऐसे द्रोणाचार्यों की तैनाती की जाएगी। ये प्रशिक्षक खेल छात्रावासों में रहने वाले खिलाड़ियों को प्रशिक्षण देंगे। अप्रैल में इसकी शुरुआत होगी।

सरकार, विपक्ष साथ-साथ राम के दर्शन को जाएंगे

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : राज्य सरकार और विपक्ष साथ-साथ राम के दर्शन को अयोध्या जाने वाली है। इसके लिए 11 फरवरी की तारीख तय की गई है। इस दौरान विधानमंडल के सभी सदस्यों को उप्र. परिवहन निगम की 10 सुपर लग्जरी बसों से ले जाया जाएगा। शासन ने परिवहन निगम के प्रबंध निदेशक को बसों की उपलब्धता कराने के निर्देश दिए गए हैं।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विधानसभा में सभी सदस्यों से रामलला के दर्शनों के लिए अयोध्या चलने का आग्रह किया था। वहीं विधानसभा अध्यक्ष सतीश महाना ने भी सभी सदस्यों को अयोध्या चलने का निमंत्रण दिया है। वह खुद भी बस में विधानसभा सदस्यों के साथ अयोध्या की यात्रा करेंगे। उन बसों में राम धुन भी बजेगी।

- 10 लग्जरी बसों से जाएंगे मंत्री और सत्तापक्ष-विपक्ष के विधायक
- रामलला के दर्शन कराने के लिए परिवहन निगम ने की तैयारी

निर्धारित कार्यक्रम की गाइडलाइन जारी : जिन सदस्यों को अयोध्या जाना है, उनको अयोध्या को जाने के लिए बसें विधान भवन के गेट संख्या-1 व 3 के सुबह 8:15 बजे मिलेगी। परिवहन मंत्री दयाशंकर सिंह ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि अयोध्या धाम के दर्शन कराने वाली इन बसों की बाहरी व आंतरिक सफाई बेहतर रहनी चाहिए, पर्दे लगे होने चाहिए। बसों में सुरक्षा की नजर से अग्निशमन यंत्र अवश्य रहे। साथ ही फर्स्ट एड किट उपलब्ध रहे। साथ ही बसों में रामधुन भी अवश्य बजे इसके लिए भी विशेष निर्देश दिए हैं। साथ ही ड्राइवर और कंडक्टर का व्यवहार कुशल हों इसके साथ ही वर्दी में नेम प्लेट जरूर लगा होगा।

रालोद विधायक भी जाएंगे साथ

उप्र. का राजनीतिक समीकरण बदला नजर आ रहा है। भाजपा और रालोद गठबंधन की तस्वीर साफ होने के बाद रविवार को रालोद के विधायक भी अयोध्या में रामलला के दर्शन करने जाएंगे। छपरौली से रालोद विधायक अजय कुमार ने बताया कि रविवार को पार्टी के सभी नौ विधायक भी एनडीए के विधायकों के साथ रामलला के दर्शन लिए अयोध्या जाएंगे।

वर्ग पहेली-338

बाएं से दाएं

1. (साहित्य) एक शब्दालंकार जिसमें ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है जो कई भाषाओं में समान अर्थ देते हों।

4. 1. वह राज्य या शासन जिसमें अव्यवस्था और भ्रष्टाचार हो, ऐसा राज्य-प्रबंध जिसमें जनता के कल्याण या सुख-सुविधाओं का कोई प्रावधान या व्यवस्था न हो 2. कुश नामक घास का आसन, कुश की बनी हुई चटाई।

7. 1. भौरों के गुंजार से युक्त 2. किसी प्रकार की गूंज से युक्त 3. (स्थान आदि) जो गूंज से भर गया हो।

8. 1. झाड़ने पर निकलने वाली धूल अथवा रद्दी चीज़ें या उनके टुकड़े, गर्द, कूड़ा, (डस्ट) 2. वह कपड़ा जिससे चीज़ें झाड़ी या साफ़ की जाती हैं, मार्जक, (डस्टर)।

ऊपर से नीचे

2. 1. वसंत ऋतु 2. चैतमास।

3. 1. तौलने की क्रिया या भाव 2. तौलने की मज़दूरी।

5. 1. जिन पर शासन किया गया हो 2. जो शासन के अधीन हो 3. नियंत्रित 4. दंडित।

6. 1. जानने-समझने की क्षमता, समझ, दिमाग 2. बुद्धि, प्रतिभा, कौशल 3. समझने-बूझने की योग्यता, धारणाशक्ति 4. स्मरणशक्ति, याददास्त।

वर्ग पहेली - 337 का हल

1 लु	2 टि	या		3 मो	था
	का		4 हँ		
5 गाँ	व	वा	सी		6 टो
ड़			खे		का
र		7 बे	ल	बू	टा
		डो			की
	8 बि	ल	टी		

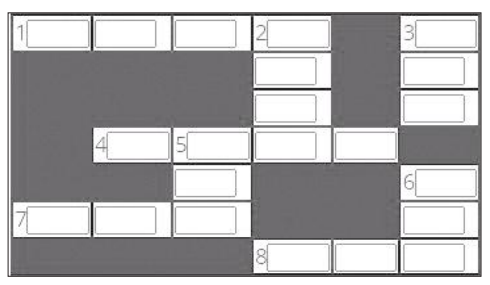

सुडोकू -55

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

					4			5
2	9			6		3		
	3				7			
		5					7	
1		2				4		3
	6					8	9	
		9		4				
8		1					3	4
7			2					

सुडोकू - 54 का हल

5	1	4	9	7	2	6	8	3
3	7	2	4	8	6	1	5	9
9	8	6	5	3	1	2	7	4
1	9	5	3	2	8	4	6	7
7	2	3	1	6	4	8	9	5
6	4	8	7	9	5	3	2	1
2	5	9	8	1	3	7	4	6
4	6	1	2	5	7	9	3	8
8	3	7	6	4	9	5	1	2

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति : 10 फरवरी, शनिवार 2024 संवत-2080, शक संवत 1945 मास-माघ, पक्ष-शुक्ल पक्ष, तिथि-प्रतिपदा 11 फरवरी 00 .47 तक तत्पश्चात द्वितीया।

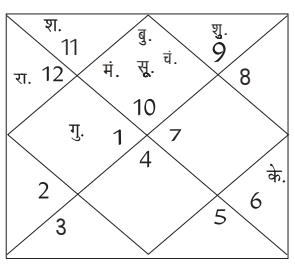

मेष: आज आप अपने प्रभाव के दम पर उलझे मामलों को सुलझा लेंगे। अपनी कार्यप्रणाली में बदलाव लाने का प्रयास कर सकते हैं। संतान के करियर को लेकर चिंता दूर होगी। मित्रों के साथ आप गम्भीर विषयों पर चर्चा कर सकते हैं।

वृष: आज आप काफी ऊर्जावान महसूस करेंगे। व्यापार में कुछ बदलाव लाने की दिशा में काम कर सकते हैं। अविवाहित लोगों का विवाह तय हो सकता है। अपनी कुशल रणनीति से विरोधियों पर भारी पड़ेंगे। पुराने नुकसान की भरपायी हो जायेगी।

मिथुन: आज निजी रिश्तों में समझदारी दिखाने की आवश्यकता है। परिवार के किसी सदस्य पर क्रोध आ सकता है। बुरी संगत से आपको बचना चाहिये। जॉब में आपको धन की कमी का सामना करना पड़ेगा। वैवाहिक जीवन की समस्याओं का निराकरण होगा।

कर्क: आज घर का वातावरण नकारात्मक हो सकता है। अपने बजट का ध्यान रखते हुए ही काम करें। भाइयों के साथ मनमुटाव हो सकता है। उतावलेपन के कारण काम प्रभावित हो सकते हैं। धन उधार देने से आपको बचना चाहिए। आज दूसरों पर ज्यादा निर्भर न रहें।

सिंह: आज आपके व्यक्तित्व में निखार आयेगा। शत्रुओं के ऊपर आप भारी पड़ेंगे। आपकी आय में वृद्धि होने की संभावना बन रही है। कारोबार में विस्तार कर सकते हैं। जीवनसाथी के साथ मूवी देखने जाने का प्लान करेंगे। वैवाहिक जीवन में प्रेम भाव बढ़ेगा।

कन्या: आज ऑफिस में लापरवाही के कारण काम रुक सकते हैं। स्वयं को व्यस्त रखना सबसे ज्यादा जरूरी है। धन संबंधी मामलों को लेकर थोड़े परेशान होंगे। कार्यक्षेत्र में आपको कठिन काम सौंपा जा सकता है। अधीनस्थ कर्मचारी आपकी काफी प्रशंसा करेंगे।

तुला: आज बेरोजगार लोगों को नौकरी की चिन्ता रहेगी। अति आत्मविश्वास के कारण काम बिगड़ सकते हैं। काम की अधिकता के कारण प्रेमी जन से झगड़ा हो सकता है। ऑफिस में घरेलू मामलों को लेकर तनाव हो सकता है।

वृश्चिक: आज व्यापार में उधारी करने से बचें। मन में नए रचनात्मक विचारों का प्रभाव रहेगा। अपने खर्च का हिसाब रखें। जीवनसाथी के साथ झगड़ा हो सकता है। उत्तम वाहन सुख की प्राप्ति होगी। माता का आशीर्वाद लेकर काम शुरू करें।

धनु: आज आपको व्यावसायिक उद्देश्य से यात्रा करनी पड़ सकती है। आज आप कई सारे कार्यों को एकसाथ करने का प्रयास करेंगे। जॉब में आपको बड़ा काम सौंपा जा सकता है। विद्यार्थी गम्भीर विषयों का अध्ययन करने में रुचि लेंगे। वैवाहिक जीवन सुखद रहेगा।

मकर: आज कार्यक्षेत्र में थोड़ी परेशानियां हो सकती है। पैतृक संपदा प्राप्त हो सकती है। समाज में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। जीवनसाथी के साथ आप अच्छा समय बितायेंगे। परिवार के सदस्यों के बीच व्यवहार खराब हो सकता है।

कुंभ: आज मनोरञ्जन के साधनों का आनन्द लेंगे। रिश्तेदारों के बीच आप काफी लोकप्रिय रहेंगे। विदेश यात्रा में आ रही बाधा दूर होगी। आप लोगों की मदद करने को आतुर रहेंगे। सामाजिक कार्यों में आप रुचि लेंगे।

मीन: आज घरेलू कार्यों में आप उलझे रहेंगे। अपनी उपलब्धियों पर अहङ्कार न करें। भावनाओं के कारण नुकसान हो सकता है। संपत्ति के मामलों को लेकर सावधानी जरूरी है। मन में अज्ञात भय रहेगा। वाद-विवाद और बहसबाजी से आपको बचना चाहिए।

आज का पंचांग

दिशाशूल- पूर्व। ऋतु-शिशिर।
चन्द्रबल-मेष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, मकर, मीन।
ताराबल-भरणी, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, आश्लेषा, पूर्वा फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, ज्येष्ठा, पूर्वाषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, रेवती।
नक्षत्र-धनिष्ठा 20 .34 तक तत्पश्चात शतभिषा।

आज की फिल्में

B4U MOVIES
- लाल बादशाह — सुबह : 09 .00
- नो प्रॉब्लम — शाम : 06 .00

SONY MAX
- दिल तो बच्चा है जी — सुबह : 09 .56
- हर दिल जो प्यार करेगा — शाम : 06 .04

Utsav Gold
- बड़े घर की बेटी — सुबह : 09 .15
- चांदनी — शाम : 06 .15

ZEE CINEMA
- अंदाज — दोपहर : 12 .25
- किसका भाई किसकी जान — रात : 09 .25

colors CINEPLEX
- एयरलिफ्ट — सुबह : 10 .54
- फोर्स 2 — शाम : 04 .32

आज की सुपरहिट फिल्म

सोनी मैक्स पर शाम-06 .04 बजे

जोक्स ऑफ द डे

पति- मुझे समझदार औरत से शादी करनी चाहिए थी
पत्नी- समझदार औरत तुमसे कभी शादी नहीं कर सकती।
पति- मुझे बस यही साबित करना था।
पति की बात सुनकर पत्नी रह गई दंग।

बॉस ने जोक सुनाया तो पूरी टीम हंसने लगी, बस एक लड़का नहीं हंसा...
बॉस ने पूछा- क्या तुम्हें मेरा जोक समझ नहीं आया?
लड़का- सर, मेरा सलेक्शन दूसरी कंपनी में हो गया है...
लड़के की बात सुनकर बॉस दंग रह गए।

मैंथा बाजार भाव

रामपुर-शिवालिक 990 फ्लैग 1110 डीएमओ 825 बोल्ड 1145, **सम्भल-चन्दौसी**-शिवालिक 1005 फ्लैग 1120 बोल्ड 1150 डीएमओ 905।

बरेली मंडी

वनस्पति तेल तिलहन-तुलसी 1850, राज श्री 1375, फॉर्चून कि. 1695, रविन्द्रा 1760, फॉर्चुन ली0 1555, जय जवान 1420, सचिन 1435, सूरज 1445, अवसर 1535, राग गोल्ड 1530, गृहणी 1420, क्लासिक (किलोg) 1610, मोर 1565, चक्र टिन 1665, ब्लू 1540, आशीर्वाद मस्टर्ड 1660, स्वास्तिक 1820, **किराना (प्रति कु.)**-हल्दी निजामाबाद 13500, जीरा 43000, लाल मिर्च 20000-24000, धनिया 9000-10000, अजवायान 16000-24000, मेथी 8600, सौंफ 15000-20000, सोंठ 35800, (प्रति कि.) लौंग 920-1000, बादाम 580-680, काजू 2 पीस 600, किसमिस पीली 140-180, मखाना 600-800, **चावल (प्रति कु.)**-डबल चाबी सेला 10500, स्पाइस 7700, शरबती कच्ची 5200, शर्बती स्टीम 5600, के पी मंसूरी 4300, महबूब सेला 4750, गौरी रॉयल 9500, राजभोग 7450, हरी पत्ती (1 किलो, 5 किलो.) 10800, हरी पत्ति नेचुरल नया 10500, जेनिथ 10700, गलैक्सी 7400, सूमो 3900, पतंजलि गोल्डन सेला 8000, मंसूरी पनघट 4350, खजाना 4350, **दाल दलहन**-मूंग दाल इंदौर 10600, मूंग धोवा काला क्राउन 10900, राजमा चित्रा 12500-14100, राजमा भूटान नया 9900, मलका काली 6750-7100 मलका दाल 6950-7700, मलका छाँटी 7300, दाल उड़द बिलासपुर 10000-10800, मसूर दाल छोटी 9000-9600, दाल उड़द दिल्ली 12000, उड़द साबुत दिल्ली 11800, उड़द धोवा इंदौर 13500, उड़द धोवा 11500-11900, दाल चना 6900, लाल हिंदुस्तान 7000, मलका विदेशी 7300, रूपकिशोर बेसन 7900, चना अकोला 8000, डबरा 9000-13800, सच्चा हीरा 14800, मोटा हीरा 16100, अरहर गोला मोटा 12500, अरहर पटका मोटा 12800, अरहर कोरा मोटा 13300, अरहर पटका छोटा 14200-14600, अरहर कोरी छोटी 15400, **चीनी**-डालमियां 4020, पीलीभीत 4000, नवाबगंज 3090, बहेड़ी (नई) 4000 रुपये।

एफडीआई के लिए भारत पसंदीदा स्थान

वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने वैश्विक कारोबार सम्मेलन को किया संबोधित

नई दिल्ली, एजेंसी

वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने शुक्रवार को कहा कि वैश्विक स्तर पर ब्याज दरों में बढ़ोतरी के बावजूद भारत एक पसंदीदा एफडीआई गंतव्य बना हुआ है। केंद्रीय मंत्री ईटी नाउ वैश्विक कारोबार सम्मेलन-2024 में उपस्थित लोगों को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि अमेरिका समेत दुनियाभर में ब्याज दरें बढ़ी हैं और इससे विकसित देशों में पूंजी का प्रवाह वापस आया। गोयल ने कहा, "वह एक ऐसा दौर था जब किसी ने विकासशील अर्थव्यवस्थाओं पर भारत की तुलना में कहीं अधिक गहरे प्रभाव की कल्पना की होगी, लेकिन भारत में मांग की ताकत, अवसरों की ताकत ने यह सुनिश्चित किया कि हमें भारी गिरावट नहीं देखनी पड़ेगी। जबकि हमारे कई अन्य समकक्ष देशों ने देखी। कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) अप्रैल-जून, 2022 में 38.94 अरब डॉलर के मुकाबले चालू वित्त वर्ष में अप्रैल-सितंबर के दौरान 15.5 प्रतिशत घटकर 32.9 अरब डॉलर रहा। कुल एफडीआई में इक्विटी प्रवाह, पुनर्निवेश आय और अन्य पूंजी शामिल हैं।

मंत्री ने कहा-हमारे यहां बड़ी मात्रा में एफडीआई आना जारी है...इस अवधि के दौरान भी कमाई का बहुत अधिक पुनर्निवेश हुआ, जबकि मैंने सोचा था कि वैश्विक बहीखाता बहुत दबाव में होगा। उन्होंने कहा कि भारत में निवेश के लिए रुझान जारी है और देश में पैसा आना जारी है।

देश का विदेशी मुद्रा भंडार 5.74 अरब डॉलर बढ़कर 622.47 अरब डॉलर पर पहुंचा

मुंबई। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने शुक्रवार को कहा कि दो फरवरी को समाप्त सप्ताह में देश का विदेशी मुद्रा भंडार 5 .74 अरब डॉलर बढ़कर 622 .47 अरब डॉलर हो गया। इससे एक सप्ताह पहले विदेशी मुद्रा का कुल भंडार 59 .1 करोड़ डॉलर की तेजी के साथ 616 .73 अरब डॉलर रहा था। देश का विदेशी मुद्रा भंडार अक्टूबर, 2021 में 645 अरब डॉलर के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया था। लेकिन पिछले साल वैश्विक घटनाक्रम के बीच रुपये को संभालने के लिए रिजर्व बैंक को इस भंडार के एक हिस्से का इस्तेमाल करना पड़ा था। रिजर्व बैंक के आंकड़ों के मुताबिक, दो फरवरी को समाप्त सप्ताह में मुद्राभंडार का अहम हिस्सा माने लाने वाली विदेशी मुद्रा आस्तियां 5 .19 अरब डॉलर बढ़कर 55 .33 अरब डॉलर हो गई। डॉलर के संदर्भ में उल्लिखित विदेशी मुद्रा आस्तियों में विदेशी मुद्रा भंडार में रखे गए यूरो, पाउंड और येन जैसी गैर-अमेरिकी मुद्राओं की घट-बढ़ का प्रभाव शामिल होता है। रिजर्व बैंक के मुताबिक, समीक्षाधीन सप्ताह में स्वर्ण भंडार 60 .8 करोड़ डॉलर बढ़कर 48 .08 अरब डॉलर हो गया।

अमरूद की खेती ने हिमाचल के गांव की तस्वीर बदली

हमीरपुर (हिमाचल प्रदेश)। हिमाचल प्रदेश उपोष्णकटिबंधीय बागवानी, सिंचाई एवं मूल्यवर्धन (एचपीशिवा) परियोजना के तहत कभी बंजर रहे हमीरपुर जिले के बगेहरा गांव में बड़ा बदलाव आया है। यहां हजारों अमरूद के पौधे लगाए गए हैं और कई किसानों की बंजर भूमि अब विकसित बागों में तब्दील हो गई है। बागवानी विभाग के उप निदेशक राजेश्वर परमार ने बताया कि एचपी शिवा परियोजना के तहत हमीरपुर जिले में 834 हेक्टेयर भूमि पर फल के पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है। उन्होंने कहा कि समय के साथ जिले के अन्य क्षेत्रों के किसान भी बागवानी गतिविधियों को बड़े पैमाने पर अपनाएंगे। परमार ने कहा कि ग्रामीणों को शिव परियोजना का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। पूरा खर्च बागवानी विभाग द्वारा वहन किया जा रहा है।

एम्ब्रेयर ने सी-390 विमान बनाने के लिए महिंद्रा के साथ की साझेदारी

नई दिल्ली, एजेंसी

▸▸ भारत में विमान बनाएगी ब्राजील की कंपनी

ब्राजील की वैमानिकी कंपनी एम्ब्रेयर और महिंद्रा समूह ने भारतीय वायुसेना के लिए मध्यम श्रेणी का परिवहन विमान बनाने के लिए साझेदारी करने की शुक्रवार को घोषणा की। वायुसेना के लिए मध्यम परिवहन विमान (एमटीए) की खरीद परियोजना के लिए दोनों कंपनियों के बीच साझेदारी संबंधी समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर यहां ब्राजीलियाई दूतावास में हस्ताक्षर किए गए।

भारतीय वायुसेना अपने पुराने परिवहन विमानों एएन32 के बेड़े को बदलने के लिए 40 से लेकर 80 तक मध्यम श्रेणी के परिवहन विमानों की खरीद करने की तैयारी में है। इसके विकल्प के लिए एम्ब्रेयर डिफेंस एंड सिक्योरिटी का सी-390 मिलेनियम, एयरबस डिफेंस एंड स्पेस का ए-400एम विमान और लॉकहीड मार्टिन का सी-130जे विमान प्रबल दावेदार के रूप में उभरे हैं। एम्ब्रेयर और महिंद्रा ने एक संयुक्त बयान में एमओयू की जानकारी देते हुए कहा कि सी-390 मिलेनियम को लेकर सहयोग से भारत में वैमानिकी एवं सैन्य परिवहन विमान से संबंधित नवीनतम तकनीक लाने में मदद मिलेगी। एम्ब्रेयर डिफेंस के चेयरमैन एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) बॉस्को डा कोस्टा जूनियर ने कहा-भारत में एक विविध और मजबूत रक्षा एवं वैमानिकी उद्योग है और हमने महिंद्रा को अपने भागीदार के रूप में चुना है। महिंद्रा के वैमानिकी एवं रक्षा क्षेत्र के अध्यक्ष विनोद सहाय ने कहा कि उन्हें एम्ब्रेयर के साथ साझेदारी शुरू करने पर गर्व है।

सर्राफा

कानपुर	
चाँदी 999 (प्रति किलो)	72,800
चांदी सिक्का (प्रति सैकड़ा)	82,500
चांदी सिक्का (सैकड़ा) बिकवाल	87,500
सोना बिस्कुट (दस ग्राम)	64,400
गिन्नी (प्रति नग)	48,000-48,200
लखनऊ	
सोना स्टैंडड (प्रति 10 ग्राम)	64,250
सोना रवा (प्रति 10 ग्राम)	64,100
गिन्नी (प्रति 10 नग)	42, 500
चांदी (999)	72,800
चांदी तैयार	72,900
चांदी का सिक्का (प्रति सैकड़ा)	80, 000
बरेली	
सोना जेवरात पक्के	64,050
सोना जेवरात गिन्नी	63,050
चांदी पक्की	718(अनुमानित)
मुरादाबाद	
सोना 24 कैरेट	64,250
चांदी आभूषण	72,700।

कार्बन डाईऑक्साइड के लिए विकसित देश जिम्मेदार: सिंह

नई दिल्ली, एजेंसी

▸▸ केंद्रीय बिजली मंत्री बोले भारत ने 45% उत्सर्जन कम करने का रखा लक्ष्य

केंद्रीय बिजली मंत्री आरके सिंह ने शुक्रवार को कहा कि विकासशील देशों को वृद्धि के लिए अधिक कार्बन गुंजाइश की जरूरत है। उन्होंने साथ ही कहा कि वातावरण में फैल चुके कार्बन डाईऑक्साइड में 77 प्रतिशत हिस्से के लिए सीधे विकसित देश जिम्मेदार हैं।

भारत ने 2030 तक अपनी कार्बन उत्सर्जन तीव्रता को 45 प्रतिशत तक कम करने का लक्ष्य तय किया है। सिंह ने यहां विश्व सतत विकास शिखर सम्मेलन 2024 में कहा-अब, हमारे ग्रह पर वर्तमान स्थिति क्या है? कुछ देश विकसित हैं और आईएमएफ के आंकड़ों के अनुसार उनकी औसत प्रति व्यक्ति आय लगभग 58,700 अमेरिकी डॉलर प्रति वर्ष है। केंद्रीय मंत्री आरके सिंह ने कहा कि ऐसे विकासशील देश हैं, जहां प्रति व्यक्ति औसत आय 6,770 अमेरिकी डॉलर प्रति वर्ष है।

छत्तीसगढ़ सरकार का 1.47 लाख करोड़ रुपये का बजट पेश

रायपुर। छत्तीसगढ़ के वित्त मंत्री ओ. पी. चौधरी ने शुक्रवार को राज्य विधानसभा में वित्त वर्ष 2024-25 के लिए 1,47,446 करोड़ रुपये का बजट पेश किया। उन्होंने कहा कि यह गरीब, युवा, अन्नदाता और नारी या 'ज्ञान' (जीवाईएएन) की समृद्धि पर केंद्रित है। साथ ही इससे बुनियादी ढांचे के विकास को गति मिलेगी। विष्णु देव साई ने दिसंबर में मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी। साई नीत भाजपा सरकार के पहले बजट में किसी नए कर की घोषणा नहीं की गई। चौधरी ने राज्य को विकासशील से विकसित राज्य बनाने की भी घोषणा की।

लाल सागर मार्ग में व्यवधान से माल ढुलाई लागत 30 प्रतिशत तक बढ़ने की आशंका

मुंबई, एजेंसी

▸▸ क्रेडिट रेटिंग एजेंसी इंडरा ने अपनी रिपोर्ट में जताई उम्मीद

लाल सागर मार्ग में जारी व्यवधान से अंतरराष्ट्रीय व्यापार में शामिल कंपनियों की माल ढुलाई और अन्य संबंधित लागत (एफएंडएफ) 25 से 30 प्रतिशत तक बढ़ने की आशंका है। क्रेडिट रेटिंग एजेंसी इंडरा ने शुक्रवार को अपनी रिपोर्ट में यह बात कही।

एजेंसी ने कहा कि इस व्यवधान के चलते कार्यशील पूंजी चक्र 15-20 दिनों तक बढ़ने का अनुमान है। इसका असर कृषि और कपड़ा जैसे क्षेत्रों पर अधिक हो सकता है। कार्यशील पूंजी चक्र का मतलब आपूर्तिकर्ताओं को किए गए भुगतान और बिक्री से मिलने वाले राजस्व के बीच की अवधि से है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि नकदी प्रवाह पर दबाव हालांकि बड़ी कंपनियों के लिए मध्यम है, लेकिन फिर भी उधारी में और वृद्धि होगी। खासतौर से लोहा और इस्पात, ऑटो और ऑटो कलपुर्जा, रसायन तथा कपड़ा जैसे क्षेत्रों में ऐसा खासतौर से देखने को मिल सकता है। इंडरा के निदेशक सौम्यजीत नियोगी ने कहा कि कम मूल्यवर्धन वाली संस्थाओं के लिए यह चुनौतीपूर्ण वक्त है, क्योंकि उनका मार्जिन भी कम है। हालांकि, बड़ी कंपनियों के पास ऐसी वृद्धिशील लागत को समायोजित करने के लिए पर्याप्त गुंजाइश है। उन्होंने कहा कि मध्यम आकार की कंपनियों के लिए लागत और आपूर्ति, दोनों रूप में दोहरी चुनौती है।

राष्ट्रीय

मोदी ने संसद की कैंटीन में विभिन्न दलों के नेताओं के साथ किया लंच

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को नए संसद भवन की कैंटीन में सांसदों के साथ दोपहर को भोजन किया। खास यह रहा कि दलगत राजनीति को पीछे छोड़ विभिन्न दलों के सांसद इसमें शामिल हुए। बीजू जनता दल के सस्मित पात्रा, रिवोल्यूशनरी सोशलिस्ट पार्टी के एन के प्रेमचंद्रन, तेदपा के राम मोहन नायडू, बसपा के रितेश पांडे और केंद्रीय मंत्री एल मुरुगन तथा हीना गावित सहित कुछ भाजपा नेताओं ने मोदी के साथ भोजन किया।

मोदी गुजरात के 1,31,454 आवासों का आज करेंगे लोकार्पण

गांधीनगर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 10 फरवरी को वर्चुअल माध्यम से 1,31,454 आवासों का लोकार्पण और शिलान्यास करेंगे। सरकारी सूत्रों ने शुक्रवार को बताया कि डीसा शहर में शनिवार को आयोजित होने वाले इस कार्यक्रम में गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल भी मौजूद रहेंगे। श्री मोदी इस अवसर पर आवास योजनाओं के लाभार्थियों के साथ वर्चुअल तरीके संवाद भी करेंगे। इस कार्यक्रम में लोकसभा सांसद सी.आर. पाटिल भी विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे। अतिथि विशेष के तौर पर लोकसभा सांसद परबतभाई पटेल और भरतसिंह डाभी तथा राज्यसभा सांसद बाबूभाई देसाई भी उपस्थित रहेंगे। आवास प्रदान करने के इस कार्यक्रम से गुजरात के 115 ग्रामीण निर्वाचन क्षेत्र और 67 शहरी निर्वाचन क्षेत्र जुड़ेंगे, यानी सभी 182 विधानसभा क्षेत्र इस कार्यक्रम में भाग लेंगे।

सीतारमण का लोकसभा में अर्थव्यवस्था पर श्वेतपत्र प्रस्तुत करते समय कांग्रेस पर कटाक्ष

मेरी हिंदी भी एंटरटेनिंग है, थोड़ा सुनिए

नई दिल्ली, एजेंसी

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने शुक्रवार को लोकसभा में अर्थव्यवस्था पर श्वेतपत्र को चर्चा के लिए प्रस्तुत करते समय कांग्रेस को आड़े हाथ लिया और हंगामा कर रहे विपक्षी सदस्यों पर कटाक्ष करते हुए कहा-मेरी हिंदी भी एंटरटेनिंग है, थोड़ा सुन लीजिए।''

सीतारमण ने जब श्वेतपत्र का ब्योरा प्रस्तुत करते हुए पूर्ववर्ती संप्रग सरकार की नीतियों की आलोचना की तो बीच-बीच में कांग्रेस के सदस्य हंगामा कर रहे थे। वित्त मंत्री ने कहा-अगर उनमें (कांग्रेस सदस्यों में) साहस है और यदि इन्होंने अच्छा काम किया है तो सुनना चाहिए और जवाब देना चाहिए। सुनने की क्षमता नहीं है। फिर भी मैं छोड़ूंगी नहीं, मैं अपनी बात करुंगी। उन्होंने कहा-वैश्विक आथिक संकट को तो नहीं संभाल सके, आज ज्ञान दे रहे है कि किस तरह संभालना है। उस समय क्या करना चाहिए था, कुछ नहीं किया। घोटाले के ऊपर घोटाले आते रहे। देश को ऐसी गंभीर अवस्था में छोड़कर चले गए भगवान जाने, अगर इनकी (कांग्रेस की) सरकार बनी रहती तो देश का क्या हाल होता। इस दौरान सदन में कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी उपस्थित थीं।

श्वेत पत्र नहीं, सफेद झूठ पत्र है: जयराम रमेश

कांग्रेस ने शुक्रवार को आरोप लगाया कि अर्थव्यवस्था पर मोदी सरकार का श्वेत पत्र एक सफेद झूठ पत्र है और इसके बजाय केंद्र सरकार को रोजगार, नोटबंदी, सीमा पर तनाव और मणिपुर जैसे मुद्दों पर ऐसा दस्तावेज लेकर आना चाहिए। सरकार के श्वेत पत्र के बारे में पूछे जाने पर कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा-यह श्वेत पत्र नहीं, बल्कि सफेद झूठ पत्र है। हमारे कांग्रेस अध्यक्ष (मल्लिकार्जुन खरगे) ने कल 10 साल अन्य काल नाम से एक ब्लैक पेपर जारी किया। उनका कहना था कि कांग्रेस का 'ब्लैक पेपर' सरकार के 'श्वेत पत्र' पर सर्जिकल स्ट्राइक है। कांग्रेस महासचिव ने आरोप लगाया कि सरकार सफेद झूठ पत्र' लेकर आई है। रमेश ने कहा-श्वेत पत्र में नोटबंदी, बेरोजगारी, महंगाई और बढ़ती आर्थिक असमानता का कोई जिक्र नहीं है। जिन मुद्दों पर उन्हें श्वेत पत्र लाना चाहिए, उनमें चीन के साथ सीमा पर तनाव शामिल हैं।

सदन में कांग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी समेत अन्य सदस्यों की टोका-टोकी के बीच सीतारमण ने कहा,-मैं हिंदी और अंग्रेजी दोनों में बोल रही हूं। मेरी हिंदी भी एंटरटेनिंग है। थोड़ा सुनिए। पूर्व अध्यक्ष बैठी हैं, उन्हें इम्प्रेस करना है कि मैडम हम बचाव कर रहे हैं। कहा कि कांग्रेस के सदस्य कई प्रश्न उठाते हैं तो हम तसल्ली से सुनते हैं, लेकिन जब सरकार जवाब देती है तो विपक्षी सदस्य वाकआउट करते हैं या शोर-शराबा करते हैं।

एक नजर

सैलून के अंदर घुसकर दो ग्राहकों की गोली मारकर हत्या

नई दिल्ली। दक्षिण-पश्चिमी दिल्ली के नजफगढ़ इलाके में एक सैलून के अंदर दो लोगों की गोली मारकर हत्या कर दी गई। पुलिस के मुताबिक, सोनू और आशीष नाम के व्यक्तियों को अन्य ग्राहकों तथा सैलून कर्मियों के सामने कई गोली मारी गई। दोनों की उम्र 30 वर्ष के करीब है। घटना का एक सीसीटीवी फुटेज सोशल मीडिया पर आया, जिसमें एक पीड़ित को हमलावरों से गुहार लगाते देखा जा सकता है। हमलावरों ने बेहद गुस्से में उसके सिर में गोली मारी। पुलिस ने कहा कि जहां सोनू को सिर में एक गोली मारी गई, वहीं आशीष के सिर में तीन और सीने में एक गोली लगी।

1.25 करोड़ रुपये मूल्य की अवैध शराब जब्त

जयपुर। राजस्थान पुलिस ने बाड़मेर जिले में 1.25 करोड़ रुपये मूल्य की अवैध शराब जब्त कर दो लोगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने यह जानकारी दी। बाड़मेर के जिला पुलिस अधीक्षक दिगंत आनंद ने बताया कि खुफिया सूचना पर फलोदी की तरफ से आ रहा एक ट्रेलर से पंजाब निर्मित अवैध अंग्रेजी शराब बरामद की गई है।

मोदी, आडवाणी पर आपत्तिजनक टिप्पणी के लिए पत्रकार वागले के खिलाफ मामला दर्ज

पुणे। भाजपा के कद्दावर नेता लालकृष्ण आडवाणी को भारत रत्न दिए जाने की घोषणा के बाद उनके और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणी करने के आरोप में वरिष्ठ पत्रकार निखिल वागले के खिलाफ पुणे में मामला दर्ज किया गया है। पुलिस ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। वागले के खिलाफ भाजपा के एक स्थानीय नेता द्वारा शिकायत दर्ज कराने के बाद प्राथमिकी दर्ज की गई थी। एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा-निखिल वागले पर विश्रामबाग थाने में भारतीय दंड संहिता (आईपीसी) की धारा 153 ए, 500 (मानहानि) और 505 (सार्वजनिक शरारत के लिए उकसाने वाले बयान) के तहत मामला दर्ज किया गया है।

क्या तारीख में बदलाव किए बिना 'प्रस्तावना' में संशोधन संभव?

नई दिल्ली, एजेंसी

▸▸ संविधान से समाजवादी पंथनिरपेक्ष शब्दों को हटाने की अपील पर सुप्रीम कोर्ट ने पूछा

सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को सवाल किया कि क्या संविधान को अंगीकार किए जाने की तारीख 26 नवंबर 1949 को अक्षुण्ण रखते हुए इसकी प्रस्तावना में संशोधन किया जा सकता है। न्यायमूर्ति संजीव खन्ना और न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता की पीठ ने राज्यसभा के पूर्व सदस्य सुब्रमण्यन स्वामी और वकील विष्णु शंकर जैन से यह सवाल किया, जिन्होंने संविधान की प्रस्तावना से 'समाजवादी' और 'पंथनिरपेक्ष' शब्दों को हटाने की अपील की है।

न्यायमूर्ति दत्ता ने कहा, अकादमिक उद्देश्य के लिए क्या प्रस्तावना, जिसमें तारीख का उल्लेख है, उसे अंगीकार करने के दिनांक में बदलाव किए बिना उसे (प्रस्तावना को) बदला जा सकता है। अन्यथा हां, प्रस्तावना में संशोधन किया जा सकता है। उसमें कोई समस्या नहीं है। स्वामी ने जवाब दिया-इस विषय में बिल्कुल यही सवाल है।

सुप्रीम आदेश की अनदेखी करने पर प्रदेश सरकार को फटकार

नई दिल्ली,एजेंसी

मुजफ्फरनगर स्कूल थप्पड़ मामला

▸▸ अब 1 मार्च को कोर्ट में होगी अगली सुनवाई

उच्चतम न्यायालय ने उत्तर प्रदेश सरकार को उन छात्रों की काउंसलिंग नहीं करने के लिए शुक्रवार को फटकार लगाई, जिन्हें उनकी स्कूली शिक्षिका ने गृहकार्य पूरा नहीं करने पर एक मुस्लिम छात्र को थप्पड़ मारने का कथित तौर पर निर्देश दिया था।

न्यायमूर्ति अभय एस ओका और न्यायमूर्ति उज्ज्वल भुइयां की पीठ ने इस बात पर गौर किया कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा उसके निर्देशों का पूरी तरह से उल्लंघन किया गया है। पीठ ने राज्य को उन बच्चों की काउंसलिंग करने और दो सप्ताह में अनुपालन हलफनामा दाखिल करने का निर्देश दिया। पीठ ने कहा-हमने टीआईएसएस (टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज) की नवीनतम रिपोर्ट का अध्ययन किया है, जिसमें उस घटना के गवाह सभी छात्रों की काउंसलिंग की बात कही गई है। राज्य द्वारा इस दिशा में कोई कुछ भी नहीं किया गया है, अब बहुत देर हो चुकी है। पीठ ने कहा-हम राज्य को निर्देशों को तुरंत लागू करने का निर्देश देते हैं और अनुपालन हलफनामा दो सप्ताह में दाखिल किया जाए। पीठ ने मामले की अगली सुनवाई की तिथि एक मार्च तय की।

उत्तर प्रदेश की अतिरिक्त महाधिवक्ता गरिमा प्रसाद ने कहा कि दो संगठनों ने छात्रों की काउंसलिंग के लिए स्वेच्छा से काम किया है और अधिक विस्तृत हलफनामा दाखिल करने के लिए समय मांगा है। अदालत ने पहले भी राज्य सरकार को उस मुस्लिम लड़के और उसके सहपाठियों की काउंसलिंग के लिए एक एजेंसी नियुक्त करने के अपने आदेश का पालन नहीं करने के लिए फटकार लगाई थी, जिन्हें उनकी शिक्षिका ने होमवर्क न करने पर उसे थप्पड़ मारने का कथित तौर पर निर्देश दिया था। मुजफ्फरनगर जिले के स्कूल की शिक्षिका पर भी पीड़ित लड़के पर सांप्रदायिक टिप्पणियां करने का भी आरोप लगाया गया है।

अब अयोध्या की तर्ज पर बनेगा चित्रकूट रेलवे स्टेशन

नई दिल्ली, ज्ञानेन्द्र सिंह

▸▸ धार्मिक स्थलों के कई रेलवे स्टेशनों का होगा जीर्णोद्धार

अमृत विचार: भगवान राम की जन्म-स्थली, अयोध्या धाम को रेलवे मानचित्र में चमकाने के बाद अब उनकी वन-स्थली, चित्रकूट धाम की बारी है। करीब 50 करोड़ की लागत से चित्रकूट धाम कर्वी रेलवे स्टेशन को फाइव स्टार बनाने की योजना है।

मंदाकिनी नदी के तट पर बसा चित्रकूट, मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश के 38 वर्ग किलोमीटर संयुक्त क्षेत्र का एक प्राचीन तीर्थ स्थल है। जहां भगवान राम ने अपने वनवास के 11 वर्ष सीता और लक्ष्मण के साथ व्यतीत किए थे। रेलवे सूत्रों के मुताबिक चित्रकूट में देश-विदेश के पर्यटकों का काफी आना-जाना होता है। लेकिन रेलवे को पर्याप्त राजस्व नहीं मिलता है। ज्यादातर पर्यटक सड़क मार्ग से ही वहां पर आते हैं। लेकिन रेलवे ने चित्रकूट धाम को पर्यटकों की दृष्टि से विकसित करने के लिए जो योजना बनाई है उसके तहत न सिर्फ सड़क बल्कि वायु मार्ग से भी रेल मार्ग को लिंकप किया जाएगा। एक योजना कर्वी से चित्रकूट तक रेलवे लाइन बिछाने की भी है लेकिन अभी उस पर कोई ठोस कार्य शुरू नहीं हुआ है।

चित्रकूट रेलवे स्टेशन को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विकसित करने के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) को अंतिम रूप दिया जा रहा है, जिसके तहत कटरा जम्मू रेलवे स्टेशन की तर्ज पर चित्रकूट में यात्रियों के लिए आधुनिक व्यवस्था की जाएगी।

अभी चित्रकूट रेलवे स्टेशन अयोध्या, काशी, प्रयागराज, दिल्ली, कोलकाता, अहमदाबाद, रायपुर, जबलपुर एवं लखनऊ से जुड़ा हुआ है। जब रेलवे स्टेशन का विस्तार एवं विकास हो जाएगा तब इसे महोबा एवं खजुराहो से भी लिंकप किया जाएगा और देश के सभी प्रमुख स्टेशनों से चित्रकूट के लिए रेल यातायात उपलब्ध कराया जाएगा। चित्रकूट के साथ ही बांदा महोबा एवं मानिकपुर रेलवे स्टेशन को भी नए सिरे से विकसित किया जाएगा।

रेलवे सूत्रों के मुताबिक चित्रकूट के साथ ही बनारस में काशी, वाराणसी सिटी, वाराणसी कैंट एवं व्यास नगर को पर्यटन की दृष्टि से विकसित किया जाएगा। इसी तरह कानपुर में प्राचीन हनुमान मंदिर, पनकी रेलवे स्टेशन एवं गंगा पार स्थित शुक्लागंज में भी बड़ा स्टेशन बनाया जाएगा। मथुरा जंक्शन के अलावा कृष्ण जन्मभूमि के निकट भूतेश्वर रेलवे स्टेशन, गाजियाबाद के निकट गंगा तट पर गढ़मुक्तेश्वर रेलवे स्टेशन को भी धार्मिक दृष्टि से विकसित करने की योजना बनाई गई है। उत्तराखंड में हरिद्वार, रामनगर व काठगोदाम रेलवे स्टेशनों सर्वे पूरा हो चुका है। उक्त सभी रेलवे स्टेशनों का कार्य इसी वर्ष अप्रैल से शुरू होने की संभावना है।

13 करोड़ की हेरोइन व मेथामफेटामाइन की गोलियां जब्त

आइजोल। असम राइफल्स और मिजोरम पुलिस ने पिछले दो दिनों में संयुक्त अभियान के दौरान पूर्वी मिजोरम के चम्फाई जिले से 13.3 करोड़ रुपये की हेरोइन और मेथामफेटामाइन की गोलियां जब्त की हैं। एक अधिकारी ने शुक्रवार को यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि बुधवार को जोखावथर के एक निवासी के कब्जे से मुआलकावी में 4.23 करोड़ रुपये मूल्य की कुल 605 ग्राम हेरोइन बरामद की गई। अधिकारी ने बताया कि एक गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई में मिजोरम-म्यांमा सीमा पर जोखावथर में नौ करोड़ रुपये की मेथामफेटामाइन की 30,300 गोलियां और 17.49 लाख रुपये की बेहिसाबी नकदी बरामद की गई।

ओलंपिक क्वालीफायर और एशियाई चैंपियनशिप: कुश्ती का चयन ट्रायल 10-11 मार्च को

चयनित होने को पहलवान पटियाला और सोनीपत में आजमाएंगे जोर

नई दिल्ली, एजेंसी

आगामी ओलंपिक क्वालीफायर और एशियाई चैंपियनशिप के लिए भारतीय कुश्ती टीम चुनने के लिए चयन ट्रायल का आयोजन 10 और 11 मार्च को क्रमशः पटियाला और सोनीपत में होगा। यह जानकारी इस खेल का प्रबंधन कर रही तदर्थ समिति ने शुक्रवार को दी।

इस ट्रायल की योजना शुरुआत में 27 से 29 फरवरी के लिए बनाई गई थी, लेकिन अपरिहार्य कारणों से सीनियर राष्ट्रीय चैंपियनशिप की मेजबानी में देरी के बाद इसे स्थगित कर दिया। महिला पहलवानों के लिए ट्रायल 'एनएसएनआईएस' पटियाला में होंगे जबकि ग्रीको रोमन और फ्रीस्टाइल पहलवानों के लिए ट्रायल भारतीय खेल प्राधिकरण सोनीपत में होंगे। भूपेन्द्र सिंह बाजवा की अध्यक्षता वाली तदर्थ समिति ने कहा कि आगामी ओलंपिक क्वालीफायर और एशियाई चैंपियनशिप के लिए भारतीय कुश्ती टीम के चयन के लिए तदर्थ समिति 10 और 11 मार्च को चयन ट्रायल का आयोजन करेगी। ओलंपिक भार वर्ग में ट्रायल के विजेता को आगामी ओलंपिक क्वालीफायर (19 से 21 अप्रैल तक एशियाई ओलंपिक क्वालीफायर और 9 से 12 मई तक विश्व ओलंपिक क्वालीफायर) में भारत का प्रतिनिधित्व करने का मौका मिलेगा। अंतिम (53 किग्रा) को 2024 सीनियर एशियाई चैंपियनशिप में खेलने को सीधे प्रवेश दिया जाएगा।

ट्रायल की योजना 27 से 29 फरवरी के लिए थी जो अपरिहार्य कारणों से स्थगित हो गई थी

बल्लेबाज आक्रामक-पारंपरिक शैली में संतुलन बनाएं: वॉन

इंग्लैंड एक ऐसी टीम बन सकती है, जिसे बहुत अच्छा करने के बावजूद भी ज्यादा सफलता ना मिले

लंदन, एजेंसी

पूर्व कप्तान माइकल वॉन को चिंता है कि इंग्लैंड एक ऐसी टीम बन जाएगी जो कड़ी मेहनत करने के बावजूद ज्यादा जीत हासिल करने में नाकाम रहेगी। उन्होंने भारत में टीम की बल्लेबाजी इकाई को सफल होने के लिए आक्रामक और पारंपरिक क्रिकेट की शैली के बीच संतुलन बनाने की सलाह दी।

इंग्लैंड को 'बैजबॉल' तरीका अपनाने के बाद से टेस्ट क्रिकेट में अच्छी सफलता मिली है। टीम को हालांकि इस रवैए से कुछ अहम मुकाबलों में हार का सामना भी करना पड़ा है, जिसमें एशेज शृंखला के मैच भी शामिल है। इंग्लैंड ने घरेलू मैदान पर ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पिछली एशेज शृंखला को 2-2 से डॉ खेला था। इंग्लैंड के लिए जैक क्राउली को छोड़कर उनके सभी बल्लेबाज बड़े स्कोर बनाने में असमर्थ रहे। वॉन ने कहा कि इंग्लैंड की टीम अगर विशाखापत्तनम जैसी बल्लेबाजी जारी रखगी तो शृंखला नहीं जीत पाएगा। मैं वास्तव में सोचता हूं कि बल्लेबाजों को हमारे गेंदबाजों से कुछ सीखने की जरूरत है। हमारे गेंदबाजों ने पारंपरिक और आक्रामक शैली का अच्छा मिश्रण किया है। वॉन ने टीम बल्लेबाजों से आक्रामक रूख अपनाने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि जेम्स एंडरसन ने कमाल किया है। टीम को एंडरसन का साथ देने के लिए तेज गेंदबाज शायद ऑली रॉबिन्सन को मैदान पर उतारना होगा।

इंग्लैंड ऐसी टीम जिसकी बहुत आलोचना नहीं की जा सकती

वॉन ने 'द टेलीग्राफ में लिखा कि इंग्लैंड ऐसी टीम बन गई है जिसकी बहुत आलोचना नहीं की जा सकती है क्योंकि उन्हें खेलते हुए देखना अच्छा है। हम मौजूदा टीम के खेल से बहुत प्रभावित होते हैं और बेन स्टोक्स के नेतृत्व में खिलाड़ियों ने बड़े पैमाने पर सुधार किया है। मुझे चिंता है कि कहीं वे ऐसी टीम न बन जाए जो इतना शानदार करने के बाद भी अधिक मैच जीतने में सफल ना रहे। जब उन्हें एशेज शृंखला जीतनी चाहिए थी तब वे नहीं जीत सके और अब उन्होंने भारत को शृंखला में वापसी का मौका दे दिया है। यह तब हुआ जब विराट कोहली समेत कई बड़े नाम मौजूद नहीं थे। इंग्लैंड ने भारत में पांच मैचों की शृंखला में 1-0 की बढ़त ले ली थी, लेकिन बेन स्टोक्स की टीम के खिलाफ दूसरे टेस्ट मैच में भारत ने शानदार वापसी कर जीत दर्ज की।

खेल डायरी

विश्व कप उपविजेता फ्रांस नेशन्स लीग फुटबॉल में इटली, बेल्जियम और इजरायल के साथ एक ग्रुप में

पेरिस, एजेंसी। विश्व कप उपविजेता फ्रांस, यूरोपीय चैंपियन (2020) इटली, बेल्जियम और इजराइल को सितंबर में शुरू होने वाले पुरुषों की यूएफा नेशन्स लीग के शीर्ष स्तर के मुश्किल ग्रुप 'ए 2' में एक साथ जगह दी गई है। नेशंस लीग चैंपियन स्पेन को डेनमार्क के अलावा स्विट्जरलैंड और सर्बिया के साथ ग्रुप 'ए 4' में रखा गया था, यूरो 2024 मेजबान जर्मनी, नीदरलैंड, हंगरी और बोस्निया-हर्जेगोविना को ग्रुप 'ए 3' में जगह मिली है जबकि क्रोएशिया, पुर्तगाल, पोलैंड और स्कॉटलैंड को 'ग्रुप ए-1' में शामिल किया गया है। फीफा रैंकिंग में तीसरे स्थान पर काबिज इंग्लैंड 2022 में नेशन्स लीग के दूसरे टियर में खिसक गया था। टीम को ग्रुप 'बी-2' में फिनलैंड, यूनान और आयरलैंड के साथ रखा गया है। यह 1991 के बाद इंग्लैंड और आयरलैंड के बीच पहला प्रतिस्पर्धी मैच होगा।

जुलाई में भारतीय फुटबॉल सत्र डूरंड कप से होगा शुरू

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय फुटबॉल सत्र की शुरुआत 26 जुलाई से डूरंड कप और इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) के 11के सत्र का आगाज सितंबर महीने में होगा। ऑल इंडिया फुटबॉल फेडरेशन (एआईएफएफ) के अनुसार 2024-25 भारतीय फुटबॉल सत्र की शुरुआत 26 जुलाई से डूरंड कप से होगी तथा सितंबतर में इंडियन सुपर लीग (आईएसएल) का आयोजन किया जाएगा। एआईएफएफ ने बताया कि इस बीच, आई-ली भारतीय महिला लीग (आईडब्ल्यूएल) और कलिंगा सुपर कप अक्टूबर में शुरू होंगे। आगामी सत्र में आईडब्ल्यूएल विंडो को 4 से बढ़ाकर 6 महीने किया गया है। पुरुष राष्ट्रीय फुटबॉल चैंपियनशिप संतोष ट्रॉफी नवंबर-दिसंबर में होगी। भारतीय पुरुष राष्ट्रीय फुटबॉल टीम मार्च और जून महीने में फीफा विश्व कप 2026 क्वालीफायर खेलेगी।

रग्बी प्रीमियर लीग लांच करने को तैयार इंडिया

नई दिल्ली, एजेंसी। भारतीय रग्बी फुटबॉल संघ (आईआरएफयू) देश में खेल की लोकप्रियता बढ़ाने के उद्देश्य पर काम करते हुए फ्रेंचाइजी आधारित रग्बी प्रीमियर लीग (आरपीएल) लांच करने के लिए तैयार है। लीग में भारत और अंतर्राष्ट्रीय स्तर की भी कुछ सर्वश्रेष्ठ रग्बी प्रतिभाए हिस्सा लेंगी। यह लीग इस साल सितंबर में खेल के 'सेवंस' प्रारूप में खेली जाएगी, जिसके शुरूआती चरण में छह टीमें हिस्सा लेंगी। आईआरएफयू के अध्यक्ष ने कहा कि यह भारत के लिए और भारतीय रग्बी के लिए ऐतिहासिक पल है। रग्बी दुनिया भर के बड़े खेलों में से एक है और भारत पिछले कुछ वर्षों से इस खेल में लगातार प्रगति कर रहा है। उन्होंने कहा कि आरपीएल भारतीय रग्बी के लिए 'गेम चेंजर' साबित होगी और हमारे खिलाड़ियों को दुनिया के कुछ सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों के साथ खेलने और अपनी प्रतिभा दिखाने का मंच प्रदान करेगी।

स्नेहा ने डब्ल्यूपीजीटी के चौथे चरण का खिताब जीता

विशाखापत्तनम, एजेंसी। स्नेहा सिंह आखिरी तीन होल में दो बोगी करने के बाद बावजूद हीरो महिला प्रो गोल्फ टूर (डब्ल्यूपीजीटी) के चौथे चरण को जीतने में सफल रहीं। मौजूदा सत्र में तीन चरण में भाग लेने वाली स्नेहा की यह दूसरी जीत है। उन्होंने इस चरण के चौथे दौर में ईवन पार 72 का कार्ड खेला जिससे उनका कुल स्कोर पांच अंडर 211 होगा। हिताशी ने चौथे दौर में बोगी रहित 69 का कार्ड खेला लेकिन यह स्नेहा के पांच शॉट की बढ़त को पाटने के लिए काफी नहीं था। मौजूदा सत्र में तीसरे चरण की विजेता हिताशी पहले, दूसरे और इस चरण में उपविजेता रही है।

फ्रांसेस टियाफो डलास ओपन के क्वार्टरफाइनल में

डलास, एजेंसी। अमेरिका के शीर्ष वरीय फ्रांसेस टियाफो ने गुरुवार रात 19 साल के हमवतन एलेक्स मिचेलसन पर 6-4, 6-3 से जीत दर्ज कर डलास ओपन के क्वार्टरफाइनल में जगह बनाई। जापान के योशिहितो निशियोका ने टूर्नामेंट से हटने का फैसला किया, जिससे फ्रांस के एड्रियन मानारिनो एक भी मुकाबला खेले बिना क्वार्टरफाइनल में पहुंच गए। राउंड 16 के अन्य मुकाबलों में सातवें वरीय जोर्डन थाम्पसन ने अमेरिका के डेनिस कुडला पर 6-1, 6-1 से जीत हासिल की जबकि जर्मनी के आठवीं वरीयता प्राप्त डोमिनिक कोफर ने आस्ट्रेलिया के रिंकी हिजिकाता को 6-4, 7-6 से मात दी।

कोहली के बारे में गलत जानकारी साझा कर की गलती : डिविलियर्स

भारत के दिग्गज खिलाड़ी ने निजी कारणों से अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट से लिया है ब्रेक

जोहानिसबर्ग, एजेंसी

दक्षिण अफ्रीका के पूर्व कप्तान एबी डिविलियर्स ने कहा कि उन्होंने भारत के दिग्गज खिलाड़ी विराट कोहली के बारे में गलत सूचना साझा करके बहुत बड़ी गलती कर दी। कोहली ने निजी कारणों से अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट से ब्रेक लिया है और डिविलियर्स ने कहा कि उन्हें कोई अंदाजा नहीं है कि वहां क्या हो रहा है। डिविलियर्स ने कुछ दिन पहले अपने यूट्यूब चैनल पर दावा किया था कि कोहली पत्नी अनुष्का शर्मा के साथ अपने दूसरे बच्चे के जन्म का इंतजार कर रहे हैं।

दक्षिण अफ्रीका के इस पूर्व दिग्गज ने एसए20 लीग के इतर बातचीत में कहा कि परिवार सबसे पहले आता है, जैसा कि मैने अपने यूट्यूब चैनल पर भी कहा था। मैने भी उस समय गलत जानकारी साझा कर के बड़ी गलती कर दी। मेरी वो बातें बिल्कुल भी सच नहीं थी। एसए20 के ब्रांड दूत डिविलियर्स ने कहा कि मैं बस यही सोचता हूं कि जो कुछ भी विराट और उनके परिवार के लिए सबसे अच्छा है उसे प्राथमिकमा मिलनी चाहिए। कोई नहीं जानता कि वहां क्या हो रहा है। मैं बस उनके लिए सब कुछ अच्छा होने की कामना कर सकता हूं।

एबी ने दावा किया था कि कोहली दूसरे बच्चे के जन्म का कर रहे इंतजार

टेस्ट क्रिकेट खेलना कठिन चुनौती

डिविलियर्स ने कहा कि मैं युवाओं से कहना चाहता हूं कि टेस्ट क्रिकेट खेलने से बढ़कर कुछ नहीं। यह सबसे बड़ी और सबसे कठिन चुनौती होती है। यह मेरा ही नहीं कई पूर्व खिलाड़ियों का भी मानना है। सबसे तेज वनडे अर्धशतक (16 गेंद), सबसे तेज वनडे शतक (31 गेंद) और सबसे तेज 150 वनडे रन (62 गेंद) का रिकॉर्ड बना चुके डिविलियर्स ने 114 टेस्ट में 8765 रन, 228 वनडे में 9577 और 78 टी-20 में 1672 रन बनाए हैं। उन्होंने कहा कि व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद खिलाड़ी हर प्रारूप खेल सकते हैं। खेल के बेसिक्स तो समान ही होते हैं।

आगामी टी-20 में सूर्यकुमार से अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद

क्रिकेट के असली 'मिस्टर 360 डिग्री' को इसके साथ ही जून में होने वाले टी-20 विश्व कप में सूर्यकुमार यादव से अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद है। टी-20 क्रिकेट में जबर्दस्त प्रदर्शन के दम पर सूर्यकुमार को भी 'मिस्टर 360 डिग्री' की उपमा मिली जो पहले डिविलियर्स को कहा जाता था। टी-20 क्रिकेट के साथ 360 डिग्री तकनीक का ईजाद हुआ, जिसमें बल्लेबाज मैदान के चारों तरफ शॉट्स खेल सकते हैं। डिविलियर्स ने कहा कि टी-20 विश्व कप में यूं तो कई खिलाड़ियों पर नजरें होंगी लेकिन मैं स्काय (सूर्यकुमार यादव) की बल्लेबाजी देखना चाहता हूं। मैं उसका बड़ा प्रशंसक हूं और उम्मीद है कि वह अच्छा खेलेगा। उन्होंने कहा कि इसमें कोई शक नहीं है कि भारत सबसे प्रबल दावेदारों में से होगा।

विश्व कप और आईपीएल दोनों के प्रारूप एक समान

दुनिया के सबसे खतरनाक बल्लेबाजों में गिने जाने वाले डिविलियर्स ने कहा कि विश्व कप से ठीक पहले आईपीएल होने से खिलाड़ियों की थकान का मसला नहीं होगा क्योंकि प्रारूप समान है। उन्होंने कहा कि आईपीएल विश्व कप से ठीक पहले है लेकिन दोनों है तो टी20 प्रारूप ही। गेंदबाज को टेस्ट की तरह 15 या 20 ओवर प्रतिदिन नहीं बल्कि चार ही ओवर डालने हैं। मुझे लगता है कि वे कार्यभार प्रबंधन कर लेंगे। आईपीएल में आरसीबी के लिए 184 मैचों में 5162 रन बना चुके डिविलियर्स ने कहा कि आईपीएल के बाद छोटा ब्रेक भी है। दो ही टीमें फाइनल खेलेंगी और बाकी तो तरोताजा ही रहेंगी। खिलाड़ियों को मैचों के बीच भी आराम मिलता है। क्रिकेट प्रेमियों को लगातार काफी क्रिकेट देखने का मौका मिलेगा जो अच्छी बात है।

'ग्रोइन' और कमर में खिंचाव से अय्यर का खेलना मुश्किल

नई दिल्ली, एजेंसी

श्रेयस अय्यर के कमर और 'ग्रोइन' में खिंचाव की शिकायत के बाद उनके इंग्लैंड के खिलाफ बची हुई टेस्ट शृंखला के लिए भारतीय टीम में चुने जाने की संभावना नहीं है। अय्यर को पीठ में लगातार परेशानी हो रही है, जिसके लिए उन्होंने पिछले साल सर्जरी भी करायी थी।

अय्यर (29 वर्ष) ने हैदराबाद और विशाखापत्तनम में पहले दो टेस्ट में 35, 13, 27 और 29 रन की पारी खेली थी। वह अच्छी शुरुआत का फायदा नहीं उठा पाए थे। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के एक सूत्र ने बताया कि अय्यर ने खिंचाव और कमर में दर्द होने की शिकायत की है तथा उनके शृंखला के बचे हुए तीन टेस्ट मैचों में खेलने की संभावना नहीं है। भारत पहले ही अपने खिलाड़ियों को लगे चोटों की समस्या से जूझ रहा है क्योंकि उसके मुख्य खिलाड़ी केएल राहुल और रविंद्र जडेजा चोटिल हैं और स्टार बल्लेबाज विराट कोहली निजी कारणों से पहले दो टेस्ट मैचों में नहीं खेल पाए थे और उनके राजकोट और रांची में होने वाले टेस्ट मुकाबलों के लिए भी उपलब्ध होने की संभावना कम ही है। भारतीय चयनकर्ताओं को अभी अंतिम तीन टेस्ट के लिए टीम की घोषणा करनी है और वह जडेजा की फिटनेस पर स्पष्टता के बाद ही ऐसा करेंगे। आल राउंडर जडेजा को इसके लिए बेंगलुरु में राष्ट्रीय क्रिकेट अकादमी में फिटनेस जांच में पास होना होगा। वह हैमस्ट्रिंग चोट की वजह से विशाखापत्तनम टेस्ट में नहीं खेल पाए थे जबकि राहुल ने दर्द की शिकायत की थी। अगर जडेजा और राहुल दोनों अंतिम एकादश में वापसी करते हैं तो अय्यर की चोट से रजत पाटीदार को एक और मौका मिल सकता है। पाटीदार विशाखापत्तनम में टेस्ट पदार्पण के दौरान प्रभावित नहीं कर सके थे। पांच मैचों की टेस्ट शृंखला अभी 1-1 की बराबरी पर है। भारतीय खिलाड़ी 11 फरवरी को राजकोट पहुंचेंगे और इंग्लैंड के एक दिन बाद वहां पहुंचने की उम्मीद है।

चयनकर्ताओं के सामने संकट, केएल राहुल और रविंद्र जडेजा पहले से चोटिल

पिच को गेंदबाजी के समीकरण से बुमराह ने बाहर कर दिया : स्टेन

केपटाउन, एजेंसी

महान तेज गेंदबाज डेल स्टेन का कहना है कि भारतीय स्टार गेंदबाज जसप्रीत बुमराह ने अपने अपरंपरागत गेंदबाजी एक्शन, दमदार यॉर्कर और तेज रफ्तार से पिच को गेंदबाजी के समीकरण से बाहर कर दिया है।

बुमराह ने विशाखापत्तनम में इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट में भारत को शानदार जीत दिलाई, जिससे मेजबान टीम 5 मैच की शृंखला 1-1 से बराबर करने में सफल रही।

स्टेन ने भारतीय पिचों पर भी लगातार विकेट लेने वाली यॉर्कर गेंद फेंकने की काबिलियत के लिए बुमराह की प्रशंसा करते हुए कहा कि वह महानता का दर्जा हासिल करने की ओर बढ़ रहे हैं। उन्होंने कहा कि मुझे नहीं लगता कि इस समय कोई टेस्ट गेंदबाज है जो विकेट लेने वाले यॉर्कर डालने में सक्षम हो। सनराइजर्स ईस्टर्न केप टीम के गेंदबाजी कोच स्टेन ने केपटाउन में एसए20 खिताबी भिड़ंत की पूर्व संध्या पर कहा कि टेस्ट मैच में विकेट लेने के लिए शायद कुछेक गेंदबाज हैं जो ऐसा कर सकते हैं। ट्रेंट बोल्ट उनमें से एक थे और शायद मिचेल स्टार्क। और निश्चित रूप से बुमराह।

नागल सेमीफाइनल में, मुकुंद हुए बाहर

चेन्नई, एजेंसी

चेन्नई ओपन

भारत के शीर्ष रैंकिंग के टेनिस खिलाड़ी सुमित नागल ने शुक्रवार को चेक गणराज्य के गैर वरीय डोमिनिक पलान को 6-3, 6-3 से हराकर चेन्नई ओपन के सेमीफाइनल में प्रवेश किया। नागल का सामना सेमीफाइनल में चेक गणराज्य के डालीबोर सवरसिना से होगा। नागल ने इससे पहले एसडी प्रज्वल देव और इटली के जियोवानी फोनियो को हराकर अंतिम आठ में प्रवेश किया था। सवरसिना ने भारत के मुकुंद शशिकुमार को 6-7(6) 6-2 6-4 से मात दी। अन्य क्वार्टरफाइनल में ताईवान के चुन सिन सेंग ने इटली के एनरिको डाला वाले को हराया। अब वह लुसा नार्डी और स्टेफानो नैपोलिटानो के बीच होने वाले मुकाबले के विजेता से भिड़ेंगे। साकेत मायनेनी और रामकुमार रामनाथन की भारतीय युगल जोड़ी ने जापान के तोशिहिदे मातसुई और काइतो यूसुगी की जोड़ी को मात दी। अब युगल स्पर्धा के फाइनल में भारतीय जोड़ियां आमने सामने होंगी। दूसरी जोड़ी रित्विक चौधरी बोलीपल्ली और निकि कालियांडा पूनाचा है। इस जोड़ी ने जर्मनी के जैकब शनाईटर और मार्क वालनर को हराया।

बॉलीवुड हलचल

कागज 2 का पोस्टर अनुपम ने किया साझा

मुंबई, एजेंसी। अभिनेता अनुपम खेर ने फिल्म कागज 2 का पहला पोस्टर सोशल मीडया पर शेयर किया है। दिवंगत अभिनेता सतीश कौशिक द्वारा लिखित और निर्देशित फिल्म 'कागज' वर्ष 2021 में ओटीटी प्लेटफॉर्म जी-5 पर रिलीज हुई थी। इस फिल्म में पंकज त्रिपाठी अहम किरदार में थे। अनुपम ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर 'कागज 2' का पहला पोस्टर जारी कर दिया है। साथ ही अनुपम ने अपने दोस्त दिवंगत अभिनेता सतीश कौशिक के लिए भावुक पोस्ट भी लिखा। अनुपम ने कैप्शन में लिखा, सबसे प्रिय सतीश कौशिक। आपके जुनूनी प्रोजेक्ट का ट्रेलर और दुर्भाग्य से आखिरी प्रोजेक्ट 'कागज 2' कल रिलीज हो रहा है। मैं जानता हूं कि इसको बनाने के लिए आपने कितनी मेहनत की है, लेकिन अब हम सब यह सुनिश्चित करेंगे कि इस फिल्म की चमक दुनिया तक पहुंचे। आपको हमेशा प्यार।

11 अक्टूबर को रिलीज होगी शाहिद कपूर की फिल्म देवा

मुंबई, एजेंसी। बॉलीवुड अभिनेता शाहिद कपूर की फिल्म देवा 11 अक्टूबर को रिलीज होगी। शाहिद कपूर ने अपने इंस्टाग्राम लाइव सत्र में अपनी आने वाली एक्शन थ्रिलर 'देवा' के बारे में बताया।उन्होंने कहा, मेरी अगली एक्शन थ्रिलर देवा में कई एक्शन सीक्वेंस हैं। देवा विशाल फिल्म है, और मैं इसमें एक बहुत कठिन किरदार निभा रहा हूं। देवा 11 अक्टूबर को रिलीज होगी। फिल्म देवा में शाहिद कपूर के साथ पूजा हेगड़े की अहम भूमिका है। देवा ,ज़ी स्टूडियो और सिद्धार्थ रॉय कपूर द्वारा निर्मित और रोशन एंड्रयूज द्वारा निर्देशित है। इस फिल्म में शाहिद पुलिस ऑफिसर की भूमिका में हैं।

मां ने मुझे थिएटर जाने को किया प्रोत्साहित

मुंबई, एजेंसी। बॉलीवुड के जानेमाने चरित्र अभिनेता बोमन ईरानी ने बताया है कि उनकी मां ने उन्हें थिएटर जाने और सिनेमा देखने के लिए प्रोत्साहित किया है। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, ब्रिटिश संसद और भारतीय उच्चायोग जैसे प्रतिष्ठित स्थानों पर बोमन ईरानी की उपस्थिति और प्रभावशाली शब्दों ने न केवल भारत को गौरवान्वित किया है, बल्कि कई लोगों के लिए प्रेरणा का काम भी किया है। ऑक्सफोर्ड की अपनी यात्रा के दौरान, बोमन ईरानी ने एक यादगार भाषण दिया और सिनेमा से परे उनके प्रभाव के लिए डॉ अदिति लाहिरी से प्रशंसा प्राप्त की। अपनी जीवन यात्रा पर विचार करते हुए, बोमन ईरानी ने उल्लेखनीय क्षणों को साझा किया, जिसमें बचपन के अनुभवों से लेकर अपनी मां द्वारा थिएटर के लिए प्रोत्साहन के तहत एक फोटोग्राफर के रूप में काम करने सहित अपनी विविध भूमिकाएं शामिल हैं। बोमन ईरानी ने कहा, मैं डिस्लेक्सिक था और मैं बहुत तुतलाता था और जब भी मैं बोलता था तो हर कोई हंसता था। मुझे डर रहेगा कि लोग मेरा मज़ाक उड़ाएँगे। मुझे यह समझने में कई साल लग गए कि आप डरने का जोखिम नहीं उठा सकते।एक दिन स्कूल में एक कॉन्सर्ट था और मेरी मां ने मुझे मुस्कुराते और गाते हुए देखा। तभी उन्हें एहसास हुआ कि मुझे दर्शकों के सामने मंच पर रहना पसंद है और उन्होंने मुझे प्रोत्साहित किया, भले ही मेरे अंक बहुत अच्छे नहीं थे। उन्होंने मुझे थिएटर जाने, स्पीच थेरेपिस्ट के पास जाने और हर दिन सिनेमा देखने जाने के लिए प्रोत्साहित किया क्योंकि मेरी शिक्षा सिनेमा के माध्यम से हुई थी। उसने मेरी आँखों में देखा कि मैं उस दुनिया से प्यार करता हूं।

खुशबू और माही का भोजपुरी गीत 'कीन दी क्रीम राजा जी' रिलीज

मुंबई, एजेंसी। गायिका खुशबू तिवारी केटी और अभिनेत्री माही श्रीवास्तव का भोजपुरी गीत 'कीन दी क्रीम राजा जी' वर्ल्डवाइड रिकॉर्ड्स भोजपुरी के ऑफिसियल यूट्यूब चैनल पर भोजपुरी लोकगीत रिलीज हुआ है। वीडियो में दिखाया गया है कि माही श्रीवास्तव गांव से शहर अपने पति के साथ आती हैं और बड़े घर में उसे काम मिल जाता है। धूप में भी उसे काम करना पड़ता है, जिससे उसकी स्किन सांवली हो गई है। वह अपने पति से गोरा होने की क्रीम लाने की डिमांड करती है। वह कहती है कि... 'काम करे में लागल बा धूप सइयाँ, हो गईल बा सांवर गोर रूप सइयाँ, भईल चेहरा के लाईट बा डीम राजा जी, डीम राजा जी, एगो कीन दीं बढ़िया क्रीम राजा जी, गोर होखे वाला कीन दीं क्रीम राजा जी...' वर्ल्डवाइड रिकॉर्ड्स प्रस्तुत भोजपुरी लोकगीत के निर्माता रत्नाकर कुमार हैं। गीतकार यादव राज हैं और संगीतकार अभिराम पांडेय हैं। वीडियो डायरेक्टर आर्यन देव, कोरियोग्राफर अशोक सम्राट, एडिटर मीत जी हैं। डीओई रोहित सिंह ने किया है।

डायमेंशन म्यूजिक के लिए सलमान अली और अल्तमश ने गाया गाना

मुंबई, एजेंसी। जानेमाने गायक सलमान अली और अल्तमश फरीदी ने डायमेंशन म्यूजिक के लिए गाना गाया है। फ़िल्म निर्माता लियाकत गोला की डायमेंशन म्यूजिक ने एक साथ तीन गानों को रिलीज़ किया है। इनमें खुदा हाफ़िज़, माही मेरा और मोहब्बत है। गाना मोहब्बत को सलमान अली ने गाया है, जिसके बोल अमीना इसरार से लिखे हैं और संगीत आमिर अली ने बनाया है। वीडियो निर्देशक फ़ैज़ हैं, वहीं डीओपी एवं एडिटर दित्य जांगिड़ हैं। वीडियो फीट में अरबाज़ पटेल और ईशु हैं। गाना ख़ुदा हाफ़िज़ को अल्तमश ने गाया है,जिसे मशेउद्दीन कुरैशी ने लिखा, और संगीत आमिर अली ने दिया।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक शंभू दयाल वाजपेयी द्वारा अमृत विचार प्रकाशन, नवादा जोगियान, चक रोड, रोहिलखंड मेडिकल कॉलेज के सामने, बरेली (उ.प्र.), पिन कोड-243006 से मुद्रित एवं 932 कटरा चांद खां, भारत पेट्रोल पंप के सामने पीलीभीत बाईपास रोड बरेली (उ.प्र.) से प्रकाशित, पिन कोड-243005। **संपादक-शंभू दयाल वाजपेयी**, 0581-2523333,0581-4000222 (कार्यालय), ईमेल-amritvichar120@gmail.com, info@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-UPHIN/2019/78502 (नोट-सभी विवादों का न्यायक्षेत्र बरेली होगा)।

भारत की महान विभूतियों ने देश के भविष्य को उज्ज्वल बनाने में लगा दिया पूरा जीवन

भ्रष्टाचार विरोधी और सर्वमान्य नेता थे चौधरी चरण सिंह

नई दिल्ली। दिवंगत चौधरी चरण सिंह किसान और जाट समाज के सर्वमान्य नेता के रूप में अगुवा रहे। चौधरी चरण सिंह भारत के पांचवें प्रधानमंत्री रहें हैं। जाट समाज के तमाम सम्मेलनों

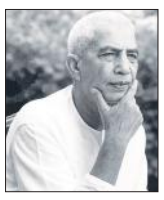

में चौ. चरण सिंह को भारत रत्न देने की वर्षों से मांग चलती रही है। उनके निधन के बाद से ही राष्ट्रीय लोक दल की ओर से मांग की जा रही थी।

हालांकि, अब केंद्र सरकार ने उनकी मांग को पूरा किया है। किसान भाई- बहनों की समस्यों के साथ खड़े रहने वाले नेता थे चौधरी चरण सिंह जी। बता दें, चौधरी चरण सिंह 1937 में छपरौली से उत्तर प्रदेश विधानसभा के लिए चुने गए और 1946, 1952, 1962 एवं 1967 में विधानसभा में अपने निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया। बाद में उन्होंने सुचेता कृपलानी के मंत्रालय में वे कृषि एवं वन मंत्री (1962-63) रहे। उन्होंने 1965 में कृषि विभाग छोड़ दिया एवं 1966 में स्थानीय स्वशासन विभाग का प्रभार संभाल लिया। भ्रष्टाचार के सख्त विरोधी कांग्रेस विभाजन के बाद फरवरी 1970 में दूसरी बार वे कांग्रेस पार्टी के समर्थन से उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने। आपातकाल में सरकार के साथ खड़े रहे।

चरण सिंह दो बार मुख्यमंत्री और एक बार देश के प्रधानमंत्री रहे। मुख्यमंत्री बने हुए उन्हें कुछ ही दिन हुए थे कि उन्हें एक निजी समारोह में भाग लेने जाना पड़ा। वहां से लौटकर आए तो ड्राइवर से कहा कि इसे अलग नोट कर लेना। ड्राइवर उन्हें गौर से देखने लगा तो बोले, 'सरकारी दौरे छोड़कर निजी कार्यक्रमों में जाने पर वाहन का पेट्रोल पर होने वाला खर्च मेरे निजी खाते से चुकता किया जाएगा।'लंबा राजनीतिक जीवन व्यतीत करने के बाद दिग्गज नेता के निधन के समय उनके खाते में मात्र 470 रुपये थे।

18 भाषाओं के जानकार थे पूर्व पीएम नरसिम्हा राव

नई दिल्ली। दिवंगत पूर्व कांग्रेसी नेता 18 भाषाओं के जानकार नरसिम्हा राव 1991 से 1996 तक देश के पीएम रहे। हालांकि, उनके पीएम बनने का फैसला भी अचानक

हुआ था, जिसके चलते उन्हें एक्सिडेंटल पीएम भी कहा जाता है। नरसिम्हा राव के गांधी परिवार से भी अच्छे रिश्ते नहीं थे।

सन 1992 में बाबरी विध्वंश के दौरान नरसिम्हा राव के गांधी परिवार से सबसे ज्यादा रिश्ते खराब हुए थे। बाबरी कांड के बाद कांग्रेस के कई बड़े नेता राव से नाराज थे। उन्होंन मनमोहन सिंह के साथ देश में बड़ा आर्थिक सुधार किया था और वैश्विक बाजारों के लिए देश के दरवाजे खोले थे। राव के इन्हीं सुधारों का क्रेडिट लेने और राजीव गांधी के हत्यारों पर तेज कार्रवाई न करने के चलते गांधी परिवार के रिश्ते उनसे ज्यादा खराब हो गए थे। प्रधानमंत्री बनने से पहले राव ने भारत सरकार और कांग्रेस पार्टी में विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर कार्य किया। उन्होंने 1971 से 1973 तक आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री के तौर पर जमीनों की चकबंदी और शिक्षा में महत्वपूर्ण सुधार लागू किए। केंद्र सरकार में उन्होंने विदेश मामलों, रक्षा और गृह मामलों के मंत्री पद संभाले, जो शासन में उनकी बहुमुखी प्रतिभा और विशेषज्ञता को उजागर करता है। प्रधानमंत्री के रूप में राव का कार्यकाल उनके द्वारा शुरू किए गए आर्थिक सुधारों के लिए सबसे ज्यादा याद किया जाता है। 1991 में भारत को काफी गंभीर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। उस वक्त देश के सामने उच्च महंगाई, कम विदेशी मुद्रा भंडार और बाहरी कर्ज चुकाने में विफलता के जोखिम जैसी कठिन चुनौतियां थीं

हरित क्रांति के जनक माने जाते हैं डॉ.एम एस स्वामीनाथन

नई दिल्ली। दिवंगत कृषि वैज्ञानिक डॉ. मनकोम्बु संबासिवन स्वामीनाथन पद्म श्री, पद्म भूषण और पद्म विभूषण समेत कई पुरस्कारों से भी सम्मानित किए गए हैं। स्वामीनाथन भारत में

'हरित क्रांति' के जनक माने जाते हैं।

उन्होंने गेहूं और चावल की अधिक उपज देने वाली किस्मों को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जिससे भारत के कम आय वाले किसानों को अधिक उपज करने में मदद मिली। इतना ही नहीं उन्होंने देश के लिए खाद्य सुरक्षा भी सुनिश्चित की। उन्हें एक ऐसे व्यक्ति के रूप में भी जाना जाता है जिसने भारत को 'भूख के ट्रैप' से बाहर निकाला। इसके अलावा उन्होंने भारत में कृषि की प्रोडेक्टिविटी बढ़ाने के लिए के एक रिपोर्ट पेश की थी, जिसे स्वामीनाथन रिपोर्ट कहा जाता है, जो आज तक लागू नहीं की गई। प्रोफेसर एम एस स्वामीनाथन की अध्यक्षता में 2004 में राष्ट्रीय किसान आयोग (एनसीएफ) का गठन किया गया था।

1965 में स्वामीनाथन को चेकोस्लोवाक एकेडमी ऑफ साइंसेज से मेंडल मेमोरियल मेडल मिला।

1967 में पद्म श्री, 1972 में पद्म भूषण और 1989 में पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था।

1971 में रेमन मैग्सेसे और 1986 में अल्बर्ट आइंस्टीन वर्ल्ड साइंस अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।

1987 में वर्ल्ड फूड सेफ्टी अवॉर्ड और 1991 में पर्यावरणीय उपलब्धि के लिए टायलर अवॉर्ड मिला।

पाकिस्तान : आम चुनाव की मतगणना जारी, 265 में से 224 सीटों के ही परिणाम हुए घोषित

गठबंधन सरकार के हाथ पाक का भविष्य

इस्लामाबाद, एजेंसी

265 में से 133 सीट जीतने के बाद ही बनती हैं सरकार

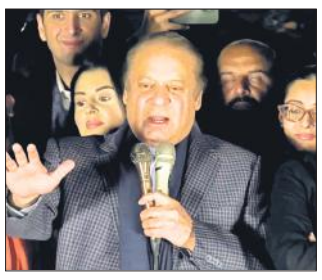

लाहौर में शुक्रवार को पार्टी कार्यालय के बाहर समर्थकों को संबोधित करते पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ।

पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ ने आम चुनाव में किसी भी पार्टी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिलने के कारण गठबंधन सरकार बनाने के लिए प्रतिद्वंद्वी दलों से हाथ मिलाने को राजी हो गए हैं। जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान समर्थित स्वतंत्र उम्मीदवारों ने देर रात तक 224 सीटों में 92 सीटों पर जीत दर्ज की है। मतगणना अब भी जारी है।

पाकिस्तान मुस्लिम लीग-नवाज (पीएमएल-एन) के लाहौर स्थित केंद्रीय सचिवालय में पार्टी समर्थकों को संबोधित करते हुए शरीफ ने कहा कि पीटीआई के स्वतंत्र उम्मीदवारों की जीत सहित सभी पार्टियों के जनादेश का सम्मान करती है।

देर रात तक चुनाव आयोग ने 265 में से 224 सीटों के ही परिणाम घोषित किए हैं, जिसमें स 92 सीट पर निर्दलीय उम्मीदवारों (ज्यादातर पीटीआई समर्थित) को जीत मिली है। पीएमएल-एन को 63 सीट पर जीत मिली है, जबकि पीपीपी के खाते में 50 सीट गई है। अन्य सीट पर छोटे दलों को जीत मिली है। खान (71) की पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ पार्टी के प्रत्याशी निर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर चुनाव लड़ रहे हैं क्योंकि देश के उच्चतम न्यायालय ने उनकी पार्टी को उसके चुनाव चिह्न क्रिकेट का 'बल्ला' से वंचित करने के निर्वाचन आयोग के फैसले को बरकरार रखा है। शुक्रवार को नवाज ने अपने संबोधन में कहा कि, गठबंधन नहीं करने वाले अपने रुख को बदला रहे हैं। शरीफ ने कहा कि पाकिस्तान को मुश्किलों से बाहर निकालने के लिए सभी राजनीतिक दलों को एक साथ बैठने और सरकार बनाने की जरूरत है। उन्होंने कहा,हम बार-बार चुनाव नहीं करा सकते। पूर्व प्रधानमंत्री ने कहा, एजेंडा केवल खुशहाल पाकिस्तान है और आप जानते हैं कि हमने पहले क्या किया है। उन्होंने अपने संबोधन में कहा, सभी को सद्भाव से बैठना चाहिए और पाकिस्तान को कठिनाइयों से बाहर निकालना चाहिए।

नेशनल असेंबली का समीकरण

नेशनल असेंबली की 336 सीट में से 266 पर ही मतदान कराया जाता है, लेकिन बाजौर में, हमले में एक उम्मीदवार की मौत हो जाने के बाद वहां मतदान स्थगित कर दिया गया था। अन्य 60 सीट महिलाओं के लिए और 10 सीट अल्पसंख्यकों के लिए आरक्षित हैं। नई सरकार बनाने के लिए किसी भी पार्टी को 265 सीट में से 133 सीट जीतनी होंगी।

आगामी लोस चुनाव में 97 करोड़ मतदाता करेंगे मतदानः ईसी

नई दिल्ली। चुनाव आयोग ने शुक्रवार को बताया कि इस साल लोकसभा चुनाव में 97 करोड़ भारतीय मतदान करने के पात्र हैं। उन्होंने बताया कि 18 से 29 साल की उम्र वाले दो करोड़ से ज्यादा युवा मतदाताओं को मतदाता सूची में शामिल किया गया है।

2019 से पंजीकृत मतदाताओं में छह फीसदी की बढ़ोतरी हुई है। दुनिया के सबसे बड़े मतदाता वर्ग 96.88 करोड़ आगामी लोकसभा चुनाव के लिए मतदान करने के लिए तैयार हैं। पोल पैनल ने बताया कि लिंक अनुपात 2023 में 940 से बढ़कर 2024 में 948 हो गया है।

मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने पुणे में एक संवाददाता सम्मेलन में राजनीतिक दलों की भागीदारी के साथ-साथ मतदाता सूची के पुनरीक्षण के लिए विभिन्न कामों के बारे में जानकारी दी थी। महिला मतदाताओं की संख्या में भी बढ़ोतरी हुई है। घर-घर जाकर जांच करने के बाद 1,65,76,654 मृतकों, स्थानांतरित और फर्जी मतदाताओं के नाम को सूची से हटा दिया गया है।

प्रशांत क्षेत्र, प. एशिया समेत कई मुद्दों पर चर्चा : जयशंकर

हिंद महासागर सम्मेलन

पर्थ, एजेंसी

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने शुक्रवार को अपने ऑस्ट्रेलियाई समकक्ष पेनी वोंग से मुलाकात की और द्विपक्षीय व्यापक रणनीतिक साझेदारी, भारत-प्रशांत क्षेत्र, पश्चिम एशिया की स्थिति और अन्य क्षेत्रीय और वैश्विक विषयों पर चर्चा की। जयशंकर शुक्रवार से हिंद महासागर पर शुरू होने वाले दो दिवसीय सम्मेलन में भाग लेने के लिए ऑस्ट्रेलियाई शहर पर्थ में हैं।

जयशंकर श्रीलंका के राष्ट्रपति रानिल विक्रमसिंघे, ऑस्ट्रेलियाई विदेश मंत्री वोंग और अपने सिंगापुर के समकक्ष विवियन बालाकृष्णन के साथ सम्मेलन के उद्घाटन सत्र को संबोधित करेंगे। जयशंकर ने बैठक की कुछ तस्वीरों के साथ एक्स पर पोस्ट किया, आज पर्थ में ऑस्ट्रेलिया के विदेश मंत्री से मिलकर खुशी हुई। हमारी व्यापक रणनीतिक साझेदारी और हिंद महासागर से

संबंधित मामलों पर अभिसरण पर अच्छा आदान-प्रदान हुआ। साथ ही इंडो-पैसिफिक, पश्चिम एशिया की स्थिति और अन्य क्षेत्रीय और वैश्विक विषयों पर भी चर्चा की।

हिंद महासागर सम्मेलन' इस क्षेत्र के देशों के लिए एक प्रमुख परामर्शदात्री मंच है, जो विदेश मंत्रालय (एमईए) द्वारा इंडिया फाउंडेशन के सहयोग से प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है। विदेश मंत्रालय ने कहा कि सम्मेलन का सातवां संस्करण ऑस्ट्रेलियाई सरकार के विदेश मामलों और व्यापार विभाग के साथ-साथ सिंगापुर के एस राजरत्नम स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज और पर्थ-यूएस एशिया सेंटर के सहयोग से 9 और 10 फरवरी को पर्थ में आयोजित किया जा रहा है।

अमेरिका बोला हिंद-प्रशांत में प्रमुख भागीदार है मालदीव

वाशिंगटन। अमेरिका ने मालदीव को स्वतंत्र, खुला, सुरक्षित और समृद्ध हिंद-प्रशांत क्षेत्र सुनिश्चित करने में एक महत्वपूर्ण भागीदार बताया। साथ ही कहा कि वह द्वीपसमूह राष्ट्र के साथ सहयोग को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है।

चीन समर्थक नेता माने जाने वाले राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू के पदभार संभालने के कुछ महीनों बाद, दक्षिण और मध्य एशिया के लिए अमेरिकी सहायक विदेश मंत्री डोनाल्ड लू ने हाल ही में मालदीव का दौरा किया। माले में लू ने रक्षा सहयोग, आर्थिक विकास और लोकतांत्रिक शासन सहित साझा प्राथमिकताओं पर चर्चा करने के लिए मोहम्मद मुइज्जू और अन्य वरिष्ठ अधिकारियों से मुलाकात की।

उन्होंने मालदीव में अमेरिकी दूतावास की स्थापना पर प्रगति पर भी चर्चा की। लू ने मालदीव में लोकतांत्रिक शासन और पारदर्शिता पर चर्चा के लिए सिविल सोसायटी के सदस्यों और उच्च शिक्षा अधिकारियों से भी मुलाकात की।

एक नजर

14 फरवरी को अमेरिका की निजी कंपनी भेजेगी मून मिशन

वाशिंगटन। नासा और स्पेश एक्स की मदद से एक अमेरिकी कंपनी मिशन मून की तैयारी कर रही है। अमेरिकी कंपनी इंट्यूएटिव मशीन्स का लक्ष्य 14 फरवरी को स्पेसएक्स के फाल्कन 9 राकेट की मदद से लैंडर लांच करना है। यह नासा समर्थित कंपनी एस्ट्रोबायोटिक टेक्नोलाजी के चंद्र लैंडर के बाद सामने आई है। कंपनी पिछले महीने फ्यूल संबंधी समस्या की वजह से चंद्रमा तक अपने मिशन को पहुंचाने में कामयाब नहीं रही थी। ह्यूस्टन स्थित इंट्यूएटिव आइएम-1 चंद्र लैंडर फ्लोरिडा के केप कैनावेरल स्पेस फोर्स स्टेशन से फाल्कन-9 राकेट से 14 फरवरी को 12:57 बजे उड़ान भरेगा, जो इंट्यूएटिव मशीन्स के रोबोटिक नोवा-सी लैंडर ओडीसियस को भेजेगा। यदि सब कुछ ठीक रहा तो ओडीसियस 22 फरवरी को चंद्रमा की सतह पर उतरने वाला पहला निजी अंतरिक्ष यान बनकर इतिहास रच सकता है।

यूएनः गुटेरेस ने शांति के लिए एकजुट होने का किया आह्वान

संयुक्त राष्ट्र। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने शांति के लिए एकजुट होने के प्रयासों का आह्वान किया है। गुटेरेस ने न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र मुख्यालय में अपनी 2024 प्राथमिकताओं पर प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा यह आवश्यक है कि हम न्यायसंगत और शांति के लिए काम करें, लेकिन संयुक्त राष्ट्र चार्टर और अंतर्राष्ट्रीय कानून के अनुरूप शांति के लिए काम करें। उन्होंने कहा, कल, मैंने इस वर्ष और उससे आगे की प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित करते हुए महासभा को संबोधित किया। यह एक लंबा और विस्तृत एजेंडा है, लेकिन विभिन्न चुनौतियां एक समान धागे से जुड़ी हुई हैं। इसके सभी आयामों में शांति की आवश्यकता है क्योंकि शांति वह बंधन है जो बांधता है। संयुक्त राष्ट्र प्रमुख ने जोर देकर कहा कि यह राष्ट्रों के बीच गंभीर बातचीत, पुरानी संस्थाओं में सुधार और बहुपक्षीय शासन के प्रभावी, नवीनीकृत और समावेशी तंत्र के साथ बहुध्रुवीयता को अपनाने का आह्वान है।

अमेरिका ने यमन के हूती विद्रोहियों पर फिर किए हवाई हमले

वाशिंगटन। अमेरिकी सेना ने यमन के हूती विद्रोहियों को निशाना बनाकर फिर से हवाई हमले किए हैं। अमेरिकी सेना के सेंट्रल कमांड ने बताया कि अमेरिकी सैन्य बलों ने गुरुवार को विस्फोटकों से लदी उन चार ड्रोन नौकाओं और सात पोत रोधी क्रूज मिसाइल लॉन्चर को नष्ट कर दिया, जिनके द्वारा लाल सागर में पोतों को निशाना बनाए जाने की आशंका थी। सेंट्रल कमांड ने कहा, वे क्षेत्र में अमेरिकी नौसेना के पोतों और वाणिज्यिक पोतों के लिए खतरा थे। ये कदम नौवहन की स्वतंत्रता की रक्षा करेंगे और अमेरिकी नौसेना एवं वाणिज्यिक पोतों के लिए अंतर्राष्ट्रीय जल क्षेत्र को अधिक सुरक्षित बनाने में मदद करेंगे।

असम-मिजोरम अंतरराज्यीय सीमा विवाद को सुलझाने में हुए सहमत

गुवाहटी, एजेंसी

▸▸ मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा और लालडुहोमा के बीच बैठक, 2021 में हुआ था भारी विवाद

मिजोरम और असम ने शुक्रवार को लंबे समय से चल रहे अंतर्राज्यीय सीमा विवाद को सुलझाने के लिए सहमति जताई है। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने मिजोरम के सीएम लालडुहोमा को आमंत्रित किया। बता दें कि लालडुहोमा फिलहाल गुवाहटी में ही मौजूद हैं।

बैठक में सीएम सरमा और लालडुहोमा ने दोनों पूर्वोत्तर राज्यों के बीच सीमा विवाद को सुलझाने के लिए सामूहिक प्रयास पर सहमति जताई है। दोनों नेताओं ने सीमा पर शांति बरतने पर भी जोर दिया। मिजोरम के तीन जिले आइजोल, कोलासिब और ममित असम के कछार, कर्मगंज और हैलनकांडी जिलों के साथ 164.6 किमी सीमा साझा करते हैं। दोनों राज्यों के बीच लंबे समय से ही सीमा विवाद चल रहा है। मिजोरम का दावा है कि बंगाल ईस्टर्न फ्रंटियर रेगुलेशन (बीईएफआर) 1873 के तहत 1875 में अधिसूचित इनर लाइन आरक्षित वन का 509 वर्ग मील क्षेत्र उनका है। वहीं दूसरी तरफ असम 1933 को सर्वे ऑफ इंडिया द्वारा तैयार किए गए मानचित्र में दिखाई गई सीमा को अपना क्षेत्र बता रहा है। इनर लाइन आरक्षित वन का एक बड़ा हिस्सा असम के अंतर्गत आता है। 1933 के सीमांकन के अनुसार क्षेत्र का एक निश्चित हिस्सा मिजोरम में पड़ता है। साल 2021 में असम और मिजोरम के बीच सीमा विवाद ने विशाल मोड़ ले लिया था, जब दोनों राज्यों के पुलिसबल ने सीमाओं पर गोलीबारी की थी। इस घटना में छह पुलिसकर्मी और एक असम के नागरिक की मौत हो गई थी।

तापमान में वृद्धि...

शिमला : हिमाचल के पहाड़ी हिस्सों में ताजा पूर्वानुमान के अनुसार 14 फरवरी तक मौसम के साफ रहेगा। ऐसे में तापमान में अब वृद्धि होगी। 15 फरवरी के बाद हल्का पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय होगा हालांकि उसका भी ज्यादा असर नहीं है। शुक्रवार को तेज धूप के खिले रहने से अधिकतम तापमान में तीन से नौ डिग्री की वृद्धि दर्ज की गई है। अधिकतम तापमान में सबसे अधिक वृद्धि कुल्लू के सेओबाग में 8.8, शिमला में 6.6, मनाली में 6.1, मंडी, हमीरपुर व बिलासपुर में चार से पांच डिग्री की वृद्धि दर्ज की गई है। ● एजेंसी

यूबीटी गुट के नेता की हत्या का एक आरोपी गिरफ्तार, जांच जारी

मुंबई, एजेंसी

▸▸ गुरुवार को पूर्व सभासद अभिषेक की फेसबुक लाइव में गोली मारकर की थी हत्या

मुंबई के उपनगर दहिसर में शिवसेना (यूबीटी) के पूर्व सभासद अभिषेक घोषालकर की गोली मारकर हत्या करने के मामले में मृतक हमलावर के साथी आरोपी को हिरासत में लिया गया है। मुंबई पुलिस ने बताया कि हमलावर से पूछताछ चल रही है और मामले की गहन जांच भी जारी है।

मुंबई पुलिस ने बताया मेहुल नाम के शख्स को हिरासत में लिया गया है, जिससे पूछताछ चल रही है। करीब 7 घंटे तक घटनास्थल की जांच के बाद पुलिस ने एक पिस्टल, एक जिंदा कारतूस और सीसीटीवी फुटेज बरामद किया गया है। मालूम हो कि इस मामले की जांच की जिम्मेदारी भी मुंबई क्राइम ब्रांच को दी गई है। घटना का एक वायरल वीडियो, जो गुरुवार शाम बोरीवली (पश्चिम) के उत्तरी उपनगर में आईसी कॉलोनी में हमलावर मौरिस नोरोन्हा के कार्यालय में हुआ। वहां घोसालकर को पेट और कंधे में गोली मारते देखा गया है। क्राइम ब्रांच की जांच कई पहलुओं पर केंद्रित होगी, जिसमें नोरोन्हा को हथियार कैसे मिला और उसे किसने मुहैया कराया, क्या वह नशे में था और घोसालकर पर गोलीबारी के समय मौके पर मौजूद लोगों से पूछताछ भी शामिल है। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा कि देर रात मामला आगे की जांच के लिए मुंबई क्राइम ब्रांच को स्थानांतरित कर दिया गया। उन्होंने कहा कि मामले की गंभीरता और जांच के दायरे को देखते हुए यह निर्णय लिया गया। अधिकारी ने बताया कि क्राइम ब्रांच की एक टीम ने भी स्थानीय पुलिस के साथ घटनास्थल का दौरा किया।

गाजा: हमलों में 13 लोगों की मौत, अमेरिका बोला- इजराइल की कार्रवाई अविश्वसनीय

वाशिंगटन, एजेंसी। इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू द्वारा हमास की संघर्ष शर्तों को अस्वीकार करने और दक्षिणी गाजा शहर में हमलों को बढ़ाने का संकल्प करने के बाद गाजा पट्टी के राफा में इजराइली हवाई हमलों में कम से कम 13 लोगों की मौत हो गई।

अमेरिका के राष्ट्रपति जो बाइडन ने गाजा में इजराइल की कार्रवाई को अविश्वसनीय बताया है। उन्होंने कहा कि अमेरिका संघर्ष विराम के लिए इजराइल और हमास पर लगातार दबाव डाल रहा है। बाइडन ने गुरुवार को कहा, 'जैसा कि आप जानते हैं, मेरा मानना है कि गाजा पट्टी में हो रही कार्रवाई चरम पर है। मिस्र से लगने वाली शहर राफा में गाजा की आधी आबादी आ गई है। मिस्र ने यहां कोई भी जवाबी कार्रवाई नहीं करने की चेतावनी दी है। कुवैती अस्पतालों के अनुसार, हमलों में दो महिलाओं और पांच बच्चों समेत कम से कम 13 लोगों की मौत हो गई है। इजराइल के चार महीनों से जारी हवाई और जमीनी हमलों में फिलिस्तीन के 27 हजार से अधिक लोग मारे जा चुके हैं। इजराइल के हमलों ने अधिकांश लोगों को उनके घरों को छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया।

विज्ञान सही मौके पर अंतरिक्ष में भेजा गया है आदित्य एल-1, सौर चक्र के अत्यधिक सौर सक्रियता सुलझने की संभावना

गामा-किरण विकिरण की गुत्थी सुलझाएगा आदित्य एल-1

नैनीताल कार्यालय

अमृत विचार : सूर्य के ध्रुवीय क्षेत्रों में उच्च-ऊर्जा गामा-किरण विकिरण उत्सर्जन की गुत्थी अभी तक नही सुलझ पाई है। इस सौर चक्र के अत्यधिक सौर सक्रियता में इस पहेली के सुलझने की संभावना सौर वैज्ञानिक जता रहे हैं।

संभव है कि भारतीय सौर मिशन आदित्य एल-1 इस रहस्य से पर्दा उठा सके। दरअसल अंतिम सौर अधिकतम के दौरान सूर्य के ध्रुवीय क्षेत्रों ने उच्च-ऊर्जा गामा-किरण विकिरण सामान्य से कई गुना अधिक उत्सर्जित होने लगती है। नासा ने इस रहस्य का पता पिछले सौर चक्र के अधिकतम दौर के दौरान किया था। यह जानकरी फर्मी अंतरिक्ष दूरबीन से 2014 में पता चली थी।

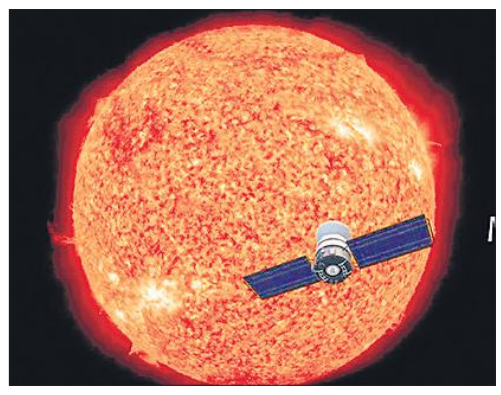

सूर्य के साथ आदित्य एल 1 की तस्वीर।

वैज्ञानिक बोले- महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा भारतीय मिशन

आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान एरीज के पूर्व निदेशक व सौर वैज्ञानिक डॉ. वहाब उद्दीन का कहना है कि असामान्य उच्च-ऊर्जा गामा-किरण विकिरण की गुत्थी को सुलझाने में इसरो का भारतीय मिशन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इन दिनों आदित्य एल-1 को ऐसे मौके पर लॉन्च किया गया है, जब वह सूर्य अपने अधिकतम सक्रियता के दौर से गुजरता है। इस दौरान सूर्य पर होने वाले विस्फोटों को देखा जा सकता है और धरती की ओर आने वाले चुम्बकीय तूफानों का आदित्य एल 1 बखूबी देख सकता है। कोरोना जैसी गुत्थी को सुलझा सकता है।

ज्ञातव्य हो सूर्य की गामा किरणों सहित विद्युत चुम्बकीय विकिरण की सभी तरंग दैर्ध्य में चमकने के लिए जाना जाता है, लेकिन यह सौर सतह पर समान रूप से वितरित होना चाहिए।

मगर ऐसा नही होने से ध्रुवीय क्षेत्रों के उच्च गतिविधि का पता लगाने वाले वैज्ञानिक इस असंतुलन की व्याख्या नहीं कर सकते हैं।

इस रहस्य को समझने के लिए इंस्टीट्यूट ऑफ एस्ट्रोफिजिक्स एंड स्पेस साइंसेज के शोधकर्ता ब्रूनो अर्सिओली का कहना है कि चालू अधिकतम सौर चक्र में यह गुत्थी सुलझ सकती है। जान लीजिए नया सौर चक्र दिसंबर 2019 में शुरू हुआ था। जिसका अधिकतम सौर सक्रियता 20 25 तक रहेगी।

आइलैंड में जीता चुनाव, राष्ट्रपति पद के करीब पहुंचे ट्रंप

लास वेगास। अमेरिका में राष्ट्रपति पद के लिए रिपब्लिकन पार्टी में उम्मीदवारी की दौड़ में पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। उन्होंने गुरुवार को नेवादा और वर्जिन आइलैंड में भी जीत हासिल कर ली। नेवादा में उनकी प्रतिद्वंद्वी निक्की हेली ने काकस के बजाय प्राइमरी चुनाव का विकल्प चुना था, इसलिए ट्रंप यहां इकलौते प्रमुख उम्मीदवार थे।

निक्की हेली रिपब्लिकन पार्टी में ट्रंप के सामने डटी हुई हैं। नेवादा में ट्रंप की जीत से उन्हें राज्य के सभी 26 डेलीगेट मिल गए। इस प्रकार वर्जिन आइलैंड से भी चार डेलीगेट हासिल कर लिए है। ट्रंप को 74 प्रतिशत तो निक्की को 26 प्रतिशत वोट मिले। औपचारिक रूप से पार्टी का नामांकन हासिल करने के लिए उन्हें 1,215 प्रतिनिधियों की आवश्यकता है और वह मार्च में इस संख्या तक पहुंच सकते हैं।